जीवन-मरण

जीवन-मरण

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

JEEVAN-MARAN (जीवन-मरण)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-30-8
दाम: 250/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2010, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रमः

1.

छह बजे भिनसुरका ड्यूटी रहने डॉक्टर देवनन्दन पाँचे बजे ओछाइन छोड़ि नितकर्मसँ निवृत्त भऽ कपड़ा पहिरते रहैथ, कि चाह नेने पत्नी आबि टेबुलपर रखि चोट्टे घुमि पिता-ससुरकेँ चाह देमए गेली। पिता लग चाह रखि बजली-

"बाबू, बाबू...।"

कोनो सुन-गुन नहि देखि नाकक साँसपर हाथ दऽ अन्दाजए लगली। साँस रूकल देखि शीलाक मनमे उठलैन- पिता तँ तीन मास बिमारीसँ ग्रसित भऽ मरल रहैथ। मुदा हिनका तँ किछु ने भेलैन तखन किए साँस नै चलै छैन..!

शीला असमंजसमे पड़ि गेली। मनमे फुरलैन अपने नै ने किछु जनै छी मुदा पति तँ डॉक्टर छैथ। दिन-राति तँ यएह रमा-कठोलामे लगल रहै छैथ, पुछि लिऐन। फेर मनमे एलैन जे अखन शुभ-शुभ ड्यूटी जा रहल छैथ केना अशुभ बात कहबैन। फेर मनमे एलैन जे ड्यूटी तँ क्षणिक छी मुदा मृत्यु तँ स्थायी छी, तँए ऐ आगू ओकर तुलना करब बचपना हएत।

पिता लगसँ झटैक कऽ पतिक कोठरीमे जा शीला धमकली। चाह पीब डॉक्टर देवनन्दन कोठरीसँ निकलैक तैयारी करैत रहैथ। धड़फड़ाएल पत्नीकेँ देखि पुछलखिन-

"किछु मोन पड़ल की?"

"नै किछु मन नै पड़ल।"

"तखन?"

“बाबू भरिसक मरि गेला। केतबो बाँहि पकैड़ डोलौलयैन मुदा आँखि नै तकलैन।”

पिताक मृत्युक बात सुनि देवनन्दन घबरेला नहि। बजला-

“माए केतए छैथ?”

“ओहो अपना कोठरीमे सुतले छैथ। जहिना सभ दिन पहिने बाबूकेँ चाह दइ छेलिऐन तहिना दइले गेलिऐन आकि देखलयैन।”

“चलू।”

कहि देवनन्दन आगू बढ़लैथ। सासुकेँ उठबैले शीला दोसर कोठरी दिस बढ़ली। कोठरीमे पहुँचते बजली- “माए!”

‘माए’ सुनि सुभद्रा फुरफुरा कऽ उठली। तैबीच शीला चाह आनए गेली। रखल लोटाक पानिसँ सुभद्रा कुर्ड़ा करए लगली। कुर्ड़ा कऽ चाह पिलैन। देवनन्दन पत्नीकेँ सोर पाड़लैन। शीलाकेँ पहुँचते कहलखिन-

“बाबू मरि गेला।”

अपना कोठरीसँ सुभद्रो सुनलैन। मृत्यु सुनि दौगले पति लग पहुँचली।

मृत पतिकेँ देखि सुभद्रा घबरेली नहि। मोन पड़लैन अपन जिनगी। जहिया दुनू गोरे एक बन्धनमे बन्हि दुनियाँक लीला-ले संगी बनलौं, तेकरा साठि बरख भऽ गेल। ओइ बन्धनसँ पूर्ब ने हम किछु कहने रहिऐन आ ने ओ किछु कहने रहैथ। कहियो भेँटे नै भेल छला, तहिना बिना किछु कहनहि संग छोड़ि चलि गेला। मुदा तँए कि साठि बर्खक संग मिलि कएल काजो चलि जाएत। जहिना अबै दिन परिवार भरल-पुरल छल, सासु-ससुर छला तहिना तँ आइयो बेटा-पुतोहु ऐछे, तहन सोग कथीक..!

मुस्की दैत सुभद्रा बेटा दिस तकलैन। तैबीच फुदकैत आशा आबि माएकेँ पुछलक- “माए, बाबा मरि गेलखिन?”

आशाक बात सुनि सुभद्रा बजली-

“बाबा गाम गेलखुन।”

पिताक मृत्यु देखि देवनन्दन सोचए लगला। पिताक अपन समाज छेलैन। जैबीच रहि जिनगी बितौलैन। मुदा हमर समाज तँ अलग भऽ गेल अछि। तँए उचित हएत जे ऐठामक समाज छोड़ि हुनका अपना समाजमे पहुँचा दिऐन। मृत्युक कोनो कर्म ऐठाम नै कऽ हुनके समाजक अनुकूल करब बढ़ियाँ हएत। शीलाकेँ कहलखिन-

“अहाँ तीनू गोरे ऐठाम रहू। गामेमे ऐगला सभ काज हेतैन। हम जोगार करए जाइ छी।”

कोठरीसँ निकैल ऐगला ओसारपर अबिते ड्राइवरकेँ ठाढ़ देखि डॉक्टर देवनन्दन कहलखिन-

“अस्पताल नइ जाएब। पेट्रोल-पम्पपर सँ तेल भरौने आबह। गाम चलैक अछि।”

बिना किछु बजनहि ड्राइवर गाड़ी लऽ निकैल गेल।

डॉक्टर देवनन्दन कोठरीमे आबि दुनू बेटाकेँ जनतब दइले मोबाइलमे नम्बर टिपलैन। दयानन्द जेठ आ धर्मानन्द छोट बेटा। दयानन्द फोर्थ इयरक विद्यार्थी आ धर्मानन्द फस्ट इयरक। दुनू एक्के मेडिकल कौलेजक छात्र। दयानन्दकेँ कहलखिन-

“बच्चा, बाबू मरि गेला तँए दुनू भाँइ गाम आउ?”

बाबाक मृत्युक समाचार सुनि दयानन्द कहलखिन-

“ऐ-ले गाम किए जाएब। आब तँ तेहेन बिजलीबला शवदाह

बनि गेल अछि जे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि।”

दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन बजला-

“बच्चा, सभ जीव-जन्तुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। जे जइ जिनगीमे जीबैत अछि, ओकरा-ले वएह जिनगी आनन्ददायक होइ छइ। जेना देखै छहक जे चीनीमे सेहो किड़ा फड़ैए, मिरचाइ आ करैलामे सेहो फड़ैए। तीनूक सुआद तीन तरहक होइ छइ। एक मीठ, दोसर कड़ू आ तेसर तीत। चीनीक किड़ाकेँ जँ मिरचाइ आकि करैलामे देल जाए तँ सोभाविक अछि जे ओ मरत। मुदा की मिरचाइक किड़ा आकि करैलाक किड़ाकेँ चीनीमे जीब सकत? कथमपि नहि। ओ किए मरत? ओ तँ अधलासँ नीकमे गेल? तहिना बाबू सेहो सभ दिन गाममे रहि जीवन-यापन केलैन। ई तँ संयोग नीक रहल जे तोहर माए सप्पत-किरिया दऽ बुड़हीकेँ ‘हँ’ कहौलैन। जइसँ दुनू गोरे मास दिन पहिने एला। सेहो एलाक तीनियेँ दिनक उत्तर गाम जाइले कच्छर काटए लगला। केते सप्पत दऽ-दऽ माए मास दिन घेरलखुन, नइ तँ तेसरे दिन चलि जइतैथ।”

पिताक बात सुनि दयानन्द बाजल-

“ई तँ बड़ आसचर्जक बात कहै छी, बाबू?”

दयानन्दक जिज्ञासा देखि देवनन्दन बजला-

“कोनो आसचर्ज नहि। गामक दोसर नाओं समाजो छिऐ। जे शहर-बजारमे नै अछि। समाजमे बन्धन अछि जइ अनुकूल लोक चलैए, जेकरा सामाजिक बन्धन कहल जाइत छइ। ऐ बन्धनक भीतर धर्मक काज छिपल अछि, जेकरा सभ मिलि निमाहैत अछि। मुदा शहरमे से नइ छइ। कानून कायदाक हिसाबसँ चलैए जइमे दया-प्रेम नइ छइ। प्रतिदिन बुड़हाकेँ दस गोरेक जिनगीक बात सुनब

आ दस मिनट बजैक जे अभ्यास लगि गेल छैन से ऐठाम केना हेतैन। एतए सभ अपने पाछू बेहाल रहैए। के केकर सुख-दुख, जीवन-मरण सुनत। भरि पेट नीक अन्ने-तीमन खुऔने लोकक मन असथिर थोड़े रहि सकैए, जाधैर आत्माक सन्तुष्टी नै हेतइ?”

पिताक बात सुनि दयानन्द हुँहकारी दैत बाजल-

“कहुना-कहुना तँ तीन दिन पहुँचैमे लगत, ताधैर की कहब?”

“अखनो गाममे एहेन चलैन अछि जे शरीरसँ पराण निकैलते जरबैक ओरियान हुअ लगैत अछि। अर्थी रखैक चलैन नै अछि। तोरा सभकेँ अबैसँ पहिने दाह-संस्कार कऽ लेब। काजो तँ लगले सम्पन्न नहियेँ होइत अछि। कहुना-कहुना तँ पनरह दिन लैगे जेतह।”

“बड़बढ़ियाँ। सौंझुका गाड़ी पकैड़ दुनू भाँइ गाम आबि जाएब।”

मोबाइल ऑफ कऽ मने-मन देवनन्दन हिसाब मिलबए लगला। कमसँ-कम पनरह दिनक काज अछि। उसारैयोमे किछु समए लगबै करत। मोटा-मोटी बीस दिन लगि जाएत। बीस दिनक आकस्मिक छुट्टीक दरखास लिखए लगला।

दरखास लिख टेबुलपर रखि पिताक कोठरी पहुँच देवनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन-

“गाममे बीस दिन लगत, तइ हिसाबसँ सभ समान ओरिया लिअ। काजक समए अछि। तँए नीक-जकाँ तैयार भऽ चलैक अछि।”

कहि माए लग बैस गेला। शीला उठि कऽ चीज-वौस ओरियाबए चलि गेली। सुभद्राक चेहरामे सोग नै सुख उमड़ैत रहैन। विचारक समुद्रमे डुमल छेली। मने-मन खुशी होइत रहैन जे हुनका अछैत जँ हम पहिने मरितौं तँ मनमे लगले रहैत जे शेष दिन हुनकर

केहेन बिततैन। मुदा से भगवान सुनलैन। जहिना हाथ पकड़लैन तहिना पार-घाट लगा देलिऐन। हमरा आब की अछि, तेहेन भरल-पुरल फुलवारी लगा देने छैथ जे केतौ हराएल रहब। उमेरोक हिसाबसँ नीके भेल। चारि बर्खक जेठो छला...।

माएकेँ विचारमे डुमल देखि देवनन्दन टोकलखिन-

"माए..!"

मुस्की दैत सुभद्रा बजली-

"बौआ, एक्को मिसिआ दुख नै भऽ रहल अछि। ई तँ सृष्टिक नियमे छिऐ। तइले दुख कथीक?"

ओमहर शीला कपड़ो-लत्ता सेरियबै छेली आ मने-मन मुस्कियाइतो छेली। अनका जे हौउ, हमरा तँ सात गंगा नहेला फल भेटल। जेना अनका देखै छिऐ, अनका की अपन पितियौते भाएकेँ देखलयैन जे मरै बेरमे काका केना घिनबथिन। से तँ नै भेल। जिनगीमे कियो एहेन ओंगरी तँ नै देखाएत!

तैबीच ड्राइवर बाहरमे हौरन बजेलक। आवाज सुनिते देवनन्दन माएकेँ कहलखिन-

"माए, लगले हम अबै छी।"

कहि कोठरीसँ दरखास लऽ ड्राइवरकेँ ऑफिस दऽ अबैले कहलखिन। पुनः घुमि कऽ पिताक गोरथारीमे बैस देवनन्दन, तैयारीक प्रतिक्षा करए लगला। आँखि माएपर पड़लैन। एक्को पाइ माइक मुँह मलिन नहि, सोचए लगला। जहिना आँगनसँ घरक ओसारपर जाइले बीचमे सीढ़ी बनल रहैए, तहिना तँ परिवारोमे अछि। मोन पड़लैन बाबाक सुनौल माए-बापक बिआहक कथा। केना नव परिवार बनि दुनू गोरे बाबा-दादीकेँ जिनगीक पार लगौलैन। ओहने समए तँ आइ हमरो संग आबि गेल। माएकेँ किए मनमे कोनो

तरहक अभाव औतैन। एते दिन पिताक आशपर जीलैन आब हमरा दुनू परानीपर आबि गेली। जहिना पत्नीक सहयोग पतिकेँ आ पतिक आशा पत्नीकेँ बनल रहैत, तहिना तँ पतिक परोछ भेने बेटाक भऽ जाइत।

फेर मोन पड़लैन गामक स्कूलमे अपन नाओं लिखौलहा दिन। नीक मनुक्ख बनैले पिता चारि बर्खक अवस्थामे कान्हपर उठा भगवान रामक खिस्सा सुनबैत नाओं लिखा देलैन। ज्ञानक प्रति एते प्रेम केना कम पढ़ल-लिखल आदमीमे आएल? केना सभ माए-बापक हृदैमे सरस्वती बैसल रहै छथिन? भलेँ सामाजिक कुबेवस्था आ सत्ताक लापरवाहीसँ नै भऽ पबैत अछि, जिनगीक मजबुरी अन्हारक काल-कोठरीमे धकैल दैत अछि। मुदा हमरा से नइ भेल। गामक स्कूलमे लोअर प्राइमरी धरि पढ़लौं। लोअर पास करिते मिडिल स्कूलमे नाओं लिखबैले रुपैआ देलैन। चारि बर्खक पछाइत मिडिल स्कूलसँ निकललौं। फेर हाइ स्कूलक खर्च देलैन चारि बर्खक उपरान्त हाइ स्कूलसँ निकललौं। संयोगो नीक रहल आर.के. कौलेज- मधुबनीमे, साइंसक पढ़ाइ शुरू भेल। जहिना उत्साह कौलेजमे नाओं लिखौने अपना रहए, तहिना नव-नव शिक्षक बनने प्रोफेसरो सभकेँ रहैन। ओना, ताधैर शिक्षो विभागमे चोर-दरबज्जा खुजि गेलइ। मुदा अखुनका जकाँ बड़की गाड़ी पास होइ-जोकर नहि, छोट-छीन एकपेरिया। बहुत नीक विद्यार्थी तँ हमहूँ नहियेँ छेलौं मुदा बहुत भुसकोलो नइ छेलौं। जँ भुसकोल रहितौं तँ पास केना करितौं? कहियो फेल नै भेलौं।

डॉक्टर बनैक विचार तँ मनमे आएलो नै छल। विचार छल बी.एस.सी. केलाक उपरान्त हाइ-स्कूलक शिक्षक बनैक। चिकित्सा जगतमे बिर्ड़ो उठल। दरभंगामे अस्पताल खुजल आ डॉक्टरीक पढाइयो शुरू भेल। आइ.एस.सी. पास केलहा संगी सभ मेडिकल

कौलेजमे नाओं लिखबैक विचार हमरो देलक। पिताकेँ कहलयैन। पढ़बैक इच्छा पहिनैसँ रहैन। नाओं लिखबैक विचार दऽ देलैन।

अगुआएल परिवारक, अधिक खेतबला परिवारक पढ़ि-लिख नोकरी करैक पक्षमे नइ रहैथ। गरीब परिवारक बच्चा, अभावमे पढ़ि नै पबैत रहए। जे लाभ हमरो भेटल। मुदा आब बुझै छी जे डॉक्टर बनि गाम छोड़ब, परिवार-समाजकेँ छोड़ब भेल। जखन हम डॉक्टर बनलौं। रोगक इलाज करब काज भेल तखन की गाममे रोग आ रोगी नै अछि...।

जहिना अकास और पृथ्वीक बीचक सीमा होइत, जैठाम पहुँच चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना डॉक्टर देवनन्दनक बुधि लसैक गेलैन। ने आगूक बाट देखैथ आ ने पाछू हटल होइन। मन घोर-घोर होइत रहैन। माए दिस, मुड़ी उठा तकलैन। माइक पजरामे बैसल आशाकेँ अपना धुइनमे मगन देखलैन। आशापर सँ नजैर ससैर दुनू बेटापर गेलैन। डॉक्टरी पढ़ैत बेटापर नजैर पड़िते ऐगला पीढ़ी दिस देखए लगला। जहिना हम माए-बाबूक सेवाक फल डॉक्टर छी तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमर हएत। मुदा जे सुख-सुविधा पाबि हम दुनू गोरेसँ अलग भऽ जीवन-यापन कऽ रहल छी, तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमरासँ अलग भऽ जीवन-यापन करत। मुदा शरीरक तँ गति अछि- बालपन, युवापन आ वृद्धापन। ओ तँ सबहक लेल अछि। बालपन आ वृद्धापनमे एक-दोसरक जरूरत सभकेँ होइत अछि। जेकरा अपन बुझि सभ सेवा करैत अछि ओ हजारो कोस दूर रहए लगैए। तखन सेवा केना हेतइ? अगर जँ दुनियाँ भरिकेँ अपन बुझि सेवा करी तँ एतेक खून-खच्चर, छीना-झपटी, चोरी-छिनरपन, लूट-खसोट किएक होइत अछि?

विचित्र स्थितिमे देवनन्दन ओझरा गेला। मनमे एलैन हम

डॉक्टर छी। हमरा सन-सन केतेको डॉक्टर अस्पतालसँ शहर धरि छैथ मुदा सेवा रहितो जाति आ दलालक कोन खगता छइ। देखै छी जे जिनका जातिक आ दलालक अधार छैन ओ दिन-राति रुपैआ ठिकियबैत रहै छैथ आ जिनका क्षेत्रीय आकि जातिक अधार नइ छैन, ओ सभ गुण रहितो माछी मारै छैथ।

फेर मनमे उठलैन, जहिया हम डॉक्टर बनलौं तहिया मात्र थर्मामीटर आ आला रहए। तहिना अस्पतालोक स्थित छेलइ। मुदा आइ अनेको यंत्र, औजार अस्पतालोमे भऽ गेल आ अपनो कीनलौं। जइसँ चिकित्सा असान भेल, आ आरो असान भऽ रहल अछि। मुदा केकरा-ले? की अखन दबाइ आ चिकित्साक अभावमे लोक नै मरैए? सभकेँ चिकित्साक सुविधा भेट गेल छइ? की रोग लोककेँ पुछि-पुछि होइ छइ? जँ से नहि, तँ हमरा स्वयं अपन सीमा-सरहद बूझक चाही। जँ से नइ बुझब तँ जहिना झाँट-बिहाड़िमे कीड़ी-मकौड़ीसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी नष्ट होइए, तहिना भऽ जाएब। जँ सएह हएब तँ अनेरे एते बुधिकेँ किए रगड़ै छिऐ? वेचारी ओहिना खसल खेत जकाँ परती रहितैथ। जैपर धिया-पुता परो-पैखाना करैत आ खेलबो-धुपबो करैत..!

तैबीच स्टाफ-सँ छात्र धरिक झुण्ड पहुँच कहलकैन-

“डॉक्टर साहैब, लहासकेँ की करए चाहै छिऐ?”

आँखि उठा देवनन्दन सबहक चेहरा देखि मुस्कियाइत बजला-

“गामेमे जरेबैन। ऐठाम सभ सुविधा रहितो हिनक विचारक प्रतिकूल रहत। तँए बीचमे हम अपन सिर दोख नै लेब। सौंसे जिनगी गाम आ समाजक बीच बितौलैन, तँए हमर फर्ज होइत अछि, हिनका लऽ जा समाजकेँ सुमझा दिऐन। हिनका निमित्ते जे काज हएत ओ समाजक विचारानुसार हएत। जँ से नइ हएत तँ समाजक

नजैरमे काँट बनि जाएब। जे नइ चाहै छी।”

देवनन्दनक विचार सुनि सभ गुम्म भऽ गेला। तैबीच सीनियर डॉक्टर सबहक झुण्ड सेहो पहुँचलैन। मुदा किनको मनमे सोग नहि। सबहक मन प्रफुल्लित। परिवारमे ने कहियो काल जन्म आ मृत्यु होइए मुदा अस्पतालमे तँ से नहि, सभ दिन जनम-मरण होइते रहैए। मुस्की दैत डॉक्टर कृष्णकान्त देवनन्दनकेँ कहलखिन-

“आगूक काज किए रोकने छी? पहिने शवदाहगृहमे फोन करि कऽ बुक करबए पड़त। जखुनका समए भेटत तइ हिसाबसँ ने जाएब?”

डॉक्टर कृष्णकान्तक विचार सुनि देवनन्दन गुम्मे रहला। मनमे नाचए लगलैन जे स्टाफ आ जुनियर जे कहलैन हुनकर जवाब तँ दऽ देलिऐन। मुदा हिनका की कहबैन। जँ विचार कटबैन तँ मनमे दुख हेतैन। हमरासँ बेसी दिन दुनियाँ देखने छैथ। अपन विचारकेँ मनेमे रखि देवनन्दन बजला-

“हम तँ बेटा छिऐन मुदा माए तँ जिनगीक संगी रहलखिन, तँए हुनकर विचार बुझब जरूरी अछि।”

सभ कियो माइक विचार सुनैले कान ठाढ़ केलैन। सुभद्रा बजली-

“भलेँ ईहो घर-दुआरि अपने छी मुदा बनौल छिऐन देवक। हिनकर बनौल गाममे छैन। अपन गाछी-कलम छैन, जे पुस्तैनी छिऐन। मुइलहा-सुखलाहा गाछ सबहक जगहपर नवका गाछो लगौने छैथ। पतियानी लगा कऽ पैछला पुरखा सभ सजल छैथ, तँए हम ओइ पतियानीकेँ छोड़ि अनतए केतौ दऽ अबिऐन, ई नीक नै बुझि पड़ैए। सिरिफ लहासे जरबैक प्रश्न तँ नै अछि अन्तिम क्रिया धरि निमाहैक अछि। मासे-मास, साल भरि छाया हेतैन। साले-साल,

बरखी हेतैन तैपर सँ पितृपक्ष सेहो हेतैन।”

सुभद्राक विचार सुनि सभ मुँह बन्न कऽ लेला। तैबीच ड्राइवर आबि बाजल-

“गाड़ी तैयार अछि।”

ड्राइवरक बात सुनि देवनन्दन कपड़ा बदलैले गेला। कपड़ा बदैल कऽ आबि गाड़ीमे लहासकेँ चढ़बैक विचार केलैन। सभ कियो रहबे करैथ हाथे-पाथे लहासकेँ उठा गाड़ीमे चढ़ौलैन। लहासकेँ गाड़ीमे चढ़ा सभ कियो अपनो बैस गाम विदा भेला।

गाड़ीमे बैसते देवनन्दनक मनमे एलैन उमेरक हिसाबसँ पिताजीक मृत्यु उचिते भेलैन। अस्सी बरख धरि लोक बुढ़ होइत अछि आ ओइसँ ऊपर भेलापर झुनकुट बुढ़ भऽ जाइए। जहिना पाकल धान कि कोनो अन्न कटलापर अधिक छिजानैत नै होइत मुदा वएह जखन झुना जाइत तँ हवो-बिहाड़िमे आकि ओहुना तुइ-तुइ खसए लगैए, तहिना तँ मनुखोक शरीर होइत अछि? अधिक बएस भेलापर, माने झुनकुट बुढ़ भेलापर शरीरक अंग सभ क्रियाहीन हुअ लगै छै, जइसँ रंग-बिरंगक बाधा सभ उपस्थित हुअ लगैत अछि। बाधा उपस्थित होइते केतेको रंगक रोग-वियाधि आबि जाइत अछि। नीक भेलैन जे अखन धरि अपन सभ क्रिया-कलाप करैत रहला। सिरिफ प्राण-वायु शरीरसँ निकललैन।

सुभद्राक मनमे खुशी ऐ दुआरे होनि जे अधपक्कू भऽ नै पूर्ण पकि कऽ पति दुनियाँ छोड़लैन।

शीला आ आशा-ले धैनसन। बेसी-सँ-बेसी हम सभ हुकुम निमाहैवाली छी। परिवारक हानि-लाभसँ हमरा की। अखन धरि परिवारमे चारिम सीढ़ीपर छेलौं, आब तेसरपर एलौं। तहिना आशाक मनमे रहै जे हमर तँ कोनो हिसाबे ऐ परिवारमे नइ अछि आ ने रहत।

जहिना घर आ आँगनक बीच सीढ़ी बनल रहै छै जइसँ लोक घर-सँ-बाहर होइए आ बाहरसँ घर जाइए, तहिना।

माइक चेहरापर देवनन्दन नजैर देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे पैछला कोनो बात मोन पड़ि गेल छैन, जइसँ चिन्तित जकाँ भऽ गेल छैथ। मनमे उठलैन, माइक चिन्ता मनसँ निकलतैन केना?

युक्ति सुझलैन जे आन कियो जँ किछु बाजत तइमे माइयक चिन्ता नै मेटाएत। भऽ सकैए जे ओइ बातपर धियाने नै दैथ। तँए नीक हएत जे किछु पुछि दिऐन, जइसँ आन बात मोन पाड़ैमे पैछला बात दबि जेतैन। नीक युक्ति फुरने मुस्की दैत पुछलखिन-

“माए, जखन हम छीहे तखन तोरा चिन्ता किए होइ छौ?”

‘चिन्ता’ सुनि सुभद्रा बजली-

“बौआ, पुरना बात मोन पड़ि गेल छेलए तँए कनी चिन्ता आबि गेल।”

बिच्चेमे लाड़ैन चलबैत शीला बजली-

“बुढ़ोमे पुरना बात मने छैन?”

“कनियाँ, अहूँ एक उमेरपर आब एलौं, तँए कहै छी, हमरा दादी कहने रहैथ जे जहिना माटिक कोठी बना लोक अन्न रखैए, जे बहुत दिन तक सुरक्षित रहैत, तहिना मनुक्खकेँ अपन जिनगीक कर्म-ले कोठी बना राखक चाही। सभसँ पहिने गणेशजी बनौलैन। जहिना अन्नक खढ़-भूस्सा, सूपसँ फटैक कऽ हटा दइ छिऐ तहिना जिनगीक कर्मक जे भूस्सा-भुस्सी अछि, ओकरा हटा कर्मकेँ मोन राखक चाही।”

सुभद्रा बजिते छेली आकि बिच्चेमे आशा जोर दैत पुछलकैन-

“कोन पुरना गप छिऐ?”

आशाक मुँह देखि सुभद्रोक मुँहमे पुरना अँकुर फुटलैन। मुस्की दैत बजए लगली-

"बुच्ची, बहू-दिनका कथा छी, अपने गाममे दू समुदायक छौड़ा-छौड़ीकेँ प्रेम भऽ गेलइ। बच्चेसँ दुनू झंझारपुर हाट माए-बापक संग जाइत-अबैत रहए। गाममे दुनूक सभ काज-उदम फुट-फुट रहइ। ने खेनाइ-पिनाइ एकठीन होइ आ ने पावैन-तिहार। मुदा खेती दुनू गोरेक एक्के रहइ।

..दुनू गोरे तरकारीक खेती करए आ हाटमे जा-जा बेचैत। गामेसँ दुनू गोरे संगे जाए आ हाटोपर एक्केठाम बैस तरकारी बेचए। जखन दुनूक बच्चा कनी चेष्टगर भेलै तँ कोनो-कोनो समान कीनि-कीनि आनए लगलै। दुनू संगे जाइ। एकटाकेँ ने हराइक डर रहैत मुदा संगीक संग तँ बच्चा कम हेराइत अछि। बच्चेसँ दुनू गोरेकेँ वैचारिक मिलान हुअ लगलै। अपना सन-सन लोककेँ हँसी-चौल देखै-सुनै। देखा-देखी दुनू गोरेक बीच, हँसी-चौल हुअ लगलै। हाटमे तरकारी बेचैक लूरि आ खेतमे गोला-फोड़ैक, पटबैक, रोपैक, कमठौन करैक लूरि सेहो भऽ गेलइ। दुनूक नव दुनियाँ बनए लगलै, किएक तँ बाप-माएसँ पाँच-दस किलोक मोटा फाजिल उठबए लगल। जइसँ परिवारक काजो आ आमदनियोँ दोबरा गेलइ। बीचमे एकटा घटना घटलै।"

बिच्चेमे फुदैक कऽ आशा पुछि देलकैन-

"की घटना?"

"बुच्ची, झूठ की साँच से भगवान जनथिन। मुदा गाममे चरचा चलए लगल। तना-तनी बढ़ए लगल। जहाँ-तहाँ गारि-गरौवैल आ पकड़ा-पकड़ी शुरू भऽ गेल। गामक जेते मुँहपुरुख छला सभकेँ अपने-अपने अपेछितसँ कहा-कही हुअ लगलैन। कखनो काल माथा

ठंढा होइ, नइ तँ बेसी काल गरमाएले रहए लगलै। मुदा पनचैती के करत से पंचे ने एक्कोटा गाममे। सभ मुँहपुरुख अपनेमे कनफुसकी कऽ पनचैतीक समए निर्धारित कऽ दुनू गोरेक बापकेँ कहि देलखिन। हाट-बजारक लोक दुनू गोरे रहबे करए, जवाब देलकैन जे पंच हम हुनका मानब जे निष्पक्ष होथि।

..मुँहपुरुखक बीच दोसर उलझन ठाढ़ भऽ गेल। जँ एक समुदायक रहैत तखन तँ दोसर ढंगसँ पनचैती धरा कएल जा सकै छल मुदा से नहि, दू जाति दू सम्प्रादायिक बीचक विवाद छल! सभ मुँहपुरुखक माथ चकरा गेलैन। गाममे एक्को गोरे शेष नहि, जे एक पक्ष नै भऽ गेल होथि। तकैत-तकैत बुड़हापर नजैर पड़लैन। सभ दिन तँ बुड़हा अपन खेत-पथारसँ परिवार धरि रहला। गामसँ ओतबे मतलब रहैन जे मुरदा डाहए जाथि, बरियाती पुड़ैथ, भोज खाथि, केतौ अगिलग्गी होइ तँ जाथि। पर-पनचैतीक लूरि नहि, मतलबो नइ रहैन। आ कियो पुछबो ने करैन।”

हँसैत शीला बजली-

“एहेन सोहल-सुथनी बुड़हा छेलैन?”

पुतोहुक बात सुनि सुभद्राक आँखिमे सिंहक ज्योति एलैन। उत्साहित होइत बजली-

“कनियाँ, की-की लीला भेल से की कही। बुड़हाक भीर तँ कियो जाथि नहि, मुदा हमरा भरि-भरि दिन बरदबए लगल। अपन काज सभ खगए लगल। हमरा लग जे आबए तँ तेना कऽ अपन बात कहि दिअए जे हम ‘हँ’ कहि दिऐ। जइसँ हमर विचारे उधिया गेल। तखन बुड़हाकेँ कहलयैन। जखने कहलयैन आकि फरैक उठला जे गाममे की केतए होइ छै से हम नै देखै छी। खाइ-पीबै काल सभ एक भऽ जाएत आ जखन इज्जत-आबरूक बेर औत तँ पड़ा जाएत।

एहेन गामसँ हटले रहब नीक। 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा।' एहेन गामक कुचालिमे हमरा नै पड़ैक अछि। भने अपन नून-रोटीक ओरियानमे समए बितबै छी आ शान्तिसँ रहै छी...।

एक्के-दुइए सभ आबि-आबि कहए लगला। हारि कऽ हुनका बुझबैत-बुझबैत सुढ़िएलौं। मानि गेला। चारि बजेक समए निर्धारित भेल। सौंसे गामक लोक एकत्रित भेला। आँखिक देखलाहा तँ एकौटा गवाह नहि, मुदा दुनूक क्रिया-कलापसँ साबित भऽ गेलइ। एक मतसँ सभ सहमत भऽ गेला जे दुनूक बीच सम्बन्ध अछि। जखन सम्बन्ध अछि तखन निराकरण हुअए...। गुन-गुनी फुस-फुसी बैसारमे शुरू भेल। चुपचाप बुड़हा सभ देखैत-सुनैत रहैथ। गुन-गुनी, फुस-फुसी जोड़ पकड़ए लगल। जोर पकड़ैत-पकड़ैत हल्ला हुअ लगल। दुनू दिस गाम बँटा गेल। एक पक्षक कहब रहै जे एहेन-एहेन सम्बन्ध कोन समाजमे नै होइ छइ? कोनो कि अपने गामक पहिल घटना छी, आइ धरि की भेलइ। कहियो कोनो मुँह दुबराहाकेँ चारि थापर मारल गेलै तँ केकरो पाँच-दस रुपैआ जुरिमाना भेलइ...।

..दोसर पक्षक कहब रहै जे जाति-सम्प्रदायक बन्धन काँच-सूतक बन्धन छी। एक वृत्ति, एक उमेरक लड़का-लड़की जँ अपन जिनगीक निर्णए स्वयं करए चाहैए तँ समाजकेँ ओइमे प्रोत्साहन करबाक चाही।

..दोसर विचार बुड़हाकेँ जँचलैन। अपनो निर्णए दऽ देलखिन। ले बलैया! एक पक्षकेँ तँ खुशी भेल मुदा दोसर पक्षक जे ऐगला-वाहन रहै, ओ बुड़हाक गट्टा पकैड़ कहलकैन जे बड़ पनिचैतियाक सार बनलैथ हेन! गट्टा पकैड़ते बुड़हाक नरसिंह तेज भऽ गेलैन। सभ बुझबो ने केलक। हाँइ-हाँइ कऽ बुड़हा चारि-पाँच थापर ओकरा मुँहमे लगा देलखिन। लगक लोक कियो एक थापर देखलक तँ कियो दू थापर। मुदा बुढ़ो आ मारि खेनिहारो पाँच थापर बुझलक।

गाममे सना-सनी भऽ गेल। दौग-दौग कऽ सभ अपना-अपना अँगनासँ लाठी आनि-आनि दू साइड भऽ गेल। अपन-अपन घरबलाकेँ लाठी लऽ-लऽ जाइत देखि स्त्रीगणो सभ दौग-दौग आबए लगली। ओना, मारिक डर सभकेँ होइते छइ।

..एक बेर 1942 इस्वीक एहने घटना पहद्दीमे भेल रहइ। जइमे लड़का-लड़कीकेँ आगि लगा घरेमे जरौल गेल रहइ। जेकर परिणाम हत्याक मोकदमा चलल आ एकतीस गोरेकेँ आजन्म कारावास भेल।

..गामक स्त्रीगण ढेरिया गेली। कियो बजै जे मनुक्खक जिनगीकेँ मनुक्खक जिनगी बना जीबैक चाही, तँ कियो बजै जे कुल-खानदानक नाक-कान कटौलक। कियो-किछु तँ कियो-किछु बजए लगल। सभ अपने-अपने बजैमे बेहाल। जहिना पुरुख तहिना स्त्रीगण। मुदा तत्खनात झगड़ा रूकि गेल। सभ पुरुखकेँ अपन-अपन घरवाली लाठी छीन-छीन बाँहि पकैड़-पकैड़ अपना-अपना आँगन लऽ गेली। गामक खेलौनाकेँ सरकारी खेलाड़ी पकड़लक। रंग एलइ। दुनू पक्षक जेते पंच पनचैतीमे रहै, सभकेँ कोट-कचहरीसँ लाट-घाट पहिनेसँ रहैन। नव खेलाड़ी-ले नव खेल आ नव फील्ड तैयार भेल। दुनू परानीकेँ मारि-पीटक मोकदमामे फँसा देलक। जे पच्चीस बर्खक पछाइत हाइ-कोर्टसँ फड़ियाएल।”

आत्म विभोर भऽ सुभद्रा बेटा-पुतोहु आ पोतीकेँ अपन जिनगीक कथा सुनबैत रहथिन। जहिना एकाग्र भऽ देवनन्दन सुनै छला, तहिना शीलो। आशाक बुधिमे बात अँटबे ने करैत, तँए कखनो दादीक बातो सुनैत आ कखनो बाबाक अर्थियो दिस देखैत।

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बिच्चेमे शीला सासुकेँ पुछलैन-

“माए, जहलो देखने छथिन?”

पुतोहुक प्रश्नसँ सुभद्राकेँ दुख नै भेलैन। मनमे एलैन जे भरिसक जिज्ञासा जागि रहल छैन। ओना, देवनन्दनक नजैर सेहो माइयेपर अँटकल रहैन मुदा चुपचाप सुनैक इच्छासँ कान पथने छला।

सुभद्रा कहए लगलखिन-

“कनियाँ, बुड़हा-संग तँ हमहूँ हाइ-कोट धरि लड़लौं। मुदा हाकिमक आगू दुइए दिन जाइ छेलौं। जखन ममिला भेल तखन जमानत करबए जाइ आ जइ दिन पुछै जे गलती केलौं आकि नहि, तइ दिन।”

शीला पुछलकैन-

“जहलमे की सभ होइ छै से तँ नै देखलखिन?”

सुभद्रा बजली-

“नै कनियाँ! झूठ केना बाजब। जे नइ देखलिऐ से केना कहब। भगवान सबहक देहमे रोइयाँ देने छथिन केकरो आगि किए उठेबै।”

शीला-

“बुड़हा, केतेक बेर जहल गेल छथिन?”

बुड़हाक नाओं सुनि सुभद्राक मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत बजली-

“अपने-मुहेँ एक्कैस बेर कहने छैथ। ओना, देखिऐन तँ हमहूँ मुदा हमरा ठेकान नै अछि।”

“भेँटो करए जाथिन?”

“कहू, केना नै जैतिऐन। खाइ-पीबैक वौस मनाही केने रहैथ मुदा तमाकुल-चुन दऽ दऽ अबिऐन।”

“देखि कऽ कनबो करथिन?”

“कनितौं किए! कोनो कि नै बुझिऐ जे दस-पाँच दिनमे फेर निकलबे करता। तइले कनितौं किए। दस-पाँच दिन तँ लोक कुटमैतियोमे जा कऽ रहिते अछि।”

“बुड़हासँ झगड़ो होनि?”

“झगड़ा किए होइतए। हँ, तखन घरक काजमे कहा-कही कहियो काल हुअए। मुदा ओ हिसाब जोड़ि कऽ बुझा दैथ। मन मानि जाए। एक बेर अहिना भेल बौआ बिआह-ले।”

‘बौआक बिआह’ सुनि आशो चौकन्ना भेल आ शीलो देह-हाथ समेट सुनैले कान ठाढ केलैन। मुदा देवनन्दनमे कोनो तरहक उत्सुकता नहि।

“बौआक बिआह-ले की भेलैन?”

“बौआ जखन पढ़िते रहए तखन विचार देलिऐन, समाजमे बौओसँ छोट-छोट बच्चा सभकेँ बिआह होइ। जखन समाजमे रहै छी तखन तँ समाजक संग चलए पड़त। मुदा बुड़हाक विचार रहैन जे जखन देव पढ़ि कऽ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जाएत तखन बिआह करब। हमरा हुअए जे ऐ जिनगीक कोन ठेकान अछि, जँ बिआह केने बिना मरि जाएब तखन तँ अपनो मन लगले रहि जाएत। मुदा बुड़हाकेँ परिवारक खर्च जोड़ए पड़ैन। कहियो हाथमे साए-पचास रुपैआ नइ रहै छेलैन। परिवारमे एकटा-सँ-एकटा भूर हरिदम रहबे करै छल।”

पत्नी आ माइक गप-सप्प सुनैत देवनन्दन विचारक दुनियाँमे डुमल रहैथ। मने-मन विचारैत रहैथ जे जहिना लंकामे विभीषण छला तहिना तँ अहू समाजमे अछि। हरिदम एक-ने-एक आक्रमण होइते रहैए। जइ समाजकेँ हम नीक बुझै छी, ओइमे अन-पानिसँ

लऽ कऽ बुधि धरिक चोर किए अछि? हरिदम लोक झुठे किए बजैए? अनका नीक देखि जरैत किए रहैए? दोसराक बोहु-बेटीक इज्जत किए लैत अछि? केकरो-कियो गारि-मारि किए करैत अछि?

देवनन्दनक मन फाटए लगलैन। किएक तँ मनमे प्रश्न उठलैन जे समाजमे अछूत के अछि जे कोनो ने कोनो रोगसँ ग्रसित नै हुअए? जँ सभ रोगीए अछि तँ समाज नीक केना भेल? जाधैर समाजक लोक समाजकेँ नीक नै बनौत ताधैर समाज नीक बनत केना? जइ गाममे एक गोरेकेँ हेजा होइ छै ओइसँ सौंसे गाम रोग पसैर जाइ छइ। तहिना तँ आनो-आनो रोगक अछि। खास कऽ समाजक रोग..!

अपनापर नजैर एलैन। अपनापर नजैर पड़िते अपनाकेँ डॉक्टर देखलैन। मुदा केहेन डॉक्टर, जे खाली शरीरक रोगक छैथ। मुदा रोग तँ एतबे नै अछि? शरीरक संग-संग मन-रोग आ परम्पराक-रोग सेहो अछि, जेकरा समाजक बेवहारक रोग सेहो कहि सकै छिऐ।

जहिना तेज धाराक धारमे भट्ठासँ सीरा दिस बढ़ब कठिन अछि मुदा असम्भव नहि? तहिना तँ समाजोमे अछि। जेमहर देखै छी ओमहरे केतौ झाड़ीक वोन, तँ केतौ तीत फलक गाछक वोन, तँ केतौ मीठो फलक गाछक वोन अछि। जे जिनगीक सैद्धान्तिक फलक वोन दिस पहुँचबैत अछि..!

तीत-मीठ फलक गाछ देखि देवनन्दनक हृदैमे संतोषक अँकुर जन्म लेलकैन। संतोषक अँकुरकेँ उगिते दुनियाँक रंग बदलल बुझि पड़लैन। नजैर पितापर गेलैन। सिर दिससँ निहारब शुरू केलैन, पएर लग अबैत-अबैत मोन पड़लैन पिताक ओ रामकथा जे गामक स्कूलमे नाओं लिखबै दिन सुनौने रहैन। भगवान राम जंगल विदा भेला तँ अपन गामक समाज अरियातए संगे चलला। गामक सिमानपर पहुँचैत-पहुँचैत साँझ पड़ि गेल। समाजक आग्रह होनि जे

अपने वोन नइ जा पुनः अयोध्या घुमि जाइ। मुदा राम अपन संकल्पपर दृढ़ छला जे पिताक आदेश नै काटब...।

साँझ भेने सभ कियो रात्रि विश्राम करए लगला। जखन सभ सुति रहला तखन राम, लक्ष्मण आ सीता विदा भेलैथ। स्थल रस्तासँ नहि, स्थल छोड़ि अकासक रस्तासँ...।

भोरमे जखन सबहक नीन टुटलैन तँ रामकेँ नै देखलैन। रस्ता दिस बढ़ला तँ ने घोड़ाक टापक चेन्ह रहै आ ने रथक पहियाक। निराश भऽ सभ घुमि गेला! एहेन समाजमे पूर्ण जीवन पिता केना जीब लेलैन..?

देवनन्दनक नजैर बढ़लैन जे समाजमे केते परिवारसँ दोस्ती अछि आ केतेसँ दुश्मनी। नजैर खिरबए लगला तँ वौआ गेला। माएकेँ पुछलखिन- “माए, आइ तँ समाजक काज पड़त। केते परिवारसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन?”

दोस्तीक नाओं सुनिते सुभद्रा हरा गेली। जेना शरीरसँ मन उड़ि गाममे वौआए लगलैन। मोन पड़लैन संग मिलि गाएल कुमरम, बिआह, शामा आ घरक गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गास्थान धरिक गीत।

सासुकेँ एकाग्र होइत देखि शीला बजली- “बुड़ही तँ जनु नीन पड़ि गेली!”

नीनक नाओं सुनिते आँखि खोलि सुभद्रा बजली-

“नै कनियाँ, नीन कहाँ पड़लौं हेन। मोन पड़ि गेल आमक गाछीक धिया-पुता। भगवानो बड़ अनर्थ केने छथिन जे केकरो ढेरीक-ढेरीक चीज देने छथिन तँ केकरो ढेरीक-ढेरी खेनिहार। पाकल-पाकल आम जखन बच्चा सभकेँ दइ छिऐ आ ओकर हृदए जुड़ाइ छै तँ अपनो आत्मा जुरा जाइए...।”

मुस्की दैत शीला बजली- “बुड़ही फेर ओंघा गेली।”

बोलीमे जोर दैत शीला फेर बजली-

“बेटा पुछै छैन, गाममे केते गोरेसँ दोस्ती छैन?”

“एहेन गप किए पुछलह बौआ! ने कियो दोस अछि आ ने कियो दुश्मन।”

देवनन्दन बजला-

“जखन गाम पहुँचब तँ बाबूकेँ जरबैले तँ लोक सभकेँ कहए पड़त किने?”

बेटाक बात सुनि सुभद्रा बजली-

“छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुरदा जरबैले, केकरो घरक आगि मिझबैले, केकरो-साँप-ताँप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसल रहल तेकर जिगेसा करैले, केकरो कियो कहै नइ छइ। ई सामाजिक काज छी, तँए अपन काज बुझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।”

माइक बात सुनि देवनन्दन नमहर साँस छोड़लैन। गामक सीमापर अबिते सभ चुप भऽ गेला। अपन गाछी लग पहुँचते देवनन्दन गाड़ी रोकबौलैन। रघुवीर भायकेँ अबैत देखने रहथिन।

एक बेर पच्छिमसँ कमला आ पूबसँ कोसीक बान्ह टुटि गेल। बरखो खूब होइत रहइ। नेपालक पहाड़सँ तराइ धरिक पानि सेहो टघैर-टघैर वेग बनि अबैत रहए। पानियोँ किए ने औत? आखिर ओकरो तँ समुद्रमे समेबाक लिलसा छइ। तहूमे मिथिलांचल बीच बाटपर अछि ओकरा किए ने होइत जाएत। गामक उत्तरसँ बाढ़िक पानि ढुकल आ एक दिससँ पसरैत दच्छिन-मुहेँक रस्ता धेलक। जाधैर पानि वासभूमिसँ हटि बाधक रस्ता धरि रहल ताधैर केकरो चिन्ता नै भेलइ। मुदा जखन पानि मोटा कऽ अँगना-घर ढुकए लगल तखन सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै। गामक एकटा टोल गहींरगरमे

बसल, चारू दिससँ पानि चढ़ैत-चढ़ैत अँगना-घर ढूकि गेल। एक तँ ओहिना, बरखामे टटघरो आ भीतघरो ढहिए-ढनमना गेल रहइ। तैपर सँ बाढ़िक वेग अबिते भीतघर खसए लगल, टटघर सभ मचकी जकाँ झुलए लगल। घर खसैत देखि टोलक सभ मालो-जाल आ चीजो-वौस आ धियो-पुतोकेँ लऽ लऽ पोखैरक महार दिस विदा भेल। पच्चीस परिवारक टोल। बेदरा-बुदरी लगा एक साए तीस आदमी। चालिस-पैंतालीसटा गाए-महींस, पच्चीस-तीसटा बकरियो। मालो-जाल बाढ़िक पानि आ आवाज सुनि डरे थरथर कँपैत! कोनो-कोनोकेँ आँखिसँ नोरो खसैत। मुदा एक्कोटा ने खाइले डिरियाइत आ ने पानि पीबैले। सभ अपन-अपन माल जालक डोरी खोलि देलक। डोरी खुजिते आगू-पाछू जोरिया सभ पानिक वेगसँ ऊपर भेल। मुदा एकाएक पानि नै चढ़ल जइसँ एक्कोटा जान-मालक नोकसान नै भेल।

टोलक समाचार सुनिते रघुनन्दन करिया काकाकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“एमहर आबह हौ बटु।”

करिया काकाकेँ दुलारूसँ ‘बटु’ कहैत रहथिन। अबिते कहलखिन-

“सुनै छी जे पुबाहि टोलमे बाढ़िक पानि चढ़ि गेलै हेन से चलह तँ देखिऐ?”

बिना किछु बजने करिया काका संग भऽ गेलैन। थोड़े आगू बढ़ला तँ देखलैन जे चेतनसँ लऽ कऽ धिया-पुता धरि किछु-ने-किछु माथपर उठौने, भीजैत-तीतैत गामक ऊँचका जगह दिस जा रहल अछि।

मनमे उठलैन जेतए जा रहल अछि ओतए रहत केना? मुदा

आँखि उठा कऽ तकैयोमे लाज होइन। जे जनिजाति कहियो सोझहामे बजबो ने करैत, ओ सभ साड़ीक फाँड़ बन्हने कियो अन्न, तँ कियो ओछाइन, तँ कियो बरतन-बासन नेने बच्चा सबहक पाछू-पाछू जा रहल अछि। लोकक दशा देखि करिया काकाकेँ कहलखिन- "बटु, सभकेँ अपना ऐठाम लऽ चलह, जहाँ धरि सकरता धरत तहाँ धरि पार लगेबै।"

दुनू गोरे सभकेँ संग केने अपना घरपर एला। समस्या तँ देशक नै सिरिफ एक टोलक अछि मुदा पहाड़ोसँ नमहर। समाजक मनुखो तँ सभ रंगक अछि, कियो अनका दुखकेँ अपन दुख बुझि कनैए, तँ कियो हँसैए। जे विपैत छै ओ एक गोरे बुत्ते केना मेटौल जाएत। जँ नै मेटौल जाएत तँ लोक मरैत केहेन परिस्थितिमे अछि?

मनमे बुकौर लगि गेलैन, कोनो बाटे नै सुझैत रहैन। सभसँ पहिल समस्या अछि लोको आ मालो-जालकेँ पानिसँ बँचैले जगह। अपना घरे कएटा अछि। तहूमे सभ व्योतले अछि! अँगनाक घर अन-पानिसँ आ जारैन-काठीसँ भरल अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा दरबज्जा खाली अछि। जे परिवारक प्रतिष्ठा छी, दोसराक आश्रम-स्थल। रघुनन्दनक मनमे नव आशा जगलैन जे जे विपैतमे पड़ल अछि ओ तँ अपन विपैतक मुकाबला करैले सेहो अछि। मुहसँ हँसी निकललैन। अँगनासँ दरबज्जा धरि सभकेँ ठौर धड़ौलैन। माल-जालकेँ तत्खनात तँ बान्हेपर, माने रस्तेपर खुट्टा गाड़ि-गाड़ि बन्हैले कहलखिन। खाइक ओते जरूरी नै बुझलैन जेते माल-जालक ठौरक। करिया काकाकेँ कहलखिन- "बटु, तत्खनात तँ सभ असथिर भेल। पहिने मनुखो आ मालो-जालकेँ खाइक ओरियान करह। तेकर बाद ऐगला काज देखबै।"

खेनाइ बनबैले आगि आ चूल्हिक खगता पड़त। चूरा तँ घरमे

ओते अछि नहि, तहूमे ओ फँक्का-फुँक्की भेल, ओइसँ काज नै चलत। जँ चाउर-दालि, तरकारी सभकेँ फुटा-फुटा देबै तँ ओते चूल्हिक बेवस्था केतए हएत। से नइ तँ पहिने नारक टालसँ नार खिंच कऽ सभ माल-जालकेँ दहक। आ लोक सभ-ले चारि गोरे एक्केठाम भानस करह। सएह केलैन। भानस हुअ लगल।

रघुनन्दनो आ करियो काका गाममे घुमि-घुमि सभकेँ गर लगौलैन। बीस दिनक पछाइत सभ अपना-अपना ऐठाम गेल...।

रघुनन्दनक समाचार कानमे पड़िते करिया काका दौड़ल एला, अबिते देवनन्दनकेँ कहलखिन- “डॉक्टर साहैब, भैयाकेँ पहिने घरपर लऽ चलियौन। घरपर मृत्यु नै भेल छैन। अपनो परिवारक आ समाजोक लोक अन्तिम दर्शन करि लेतैन, तेकर बाद बरियाती साजि गाछी अनबैन।”

करिया कक्काक विचार सुनि सबहक मनमे समाजक प्रति श्रद्धा जगलैन। देवनन्दनक मनमे एलैन, समाजमे पिताक कएल काज जे समाजक प्रतिष्ठाक कारण रहैन।

करिया कक्काक बात देवनन्दन मानि, चारू गोरे गाड़ीसँ उतैर गेलैथ। पछाइत ओहो तीनू गोरे– सुभद्रा, शीला आ आशा– उतैर जाइ गेली। तैबीच गाममे समाचार पसैर गेल। समाचार पसैरते जे-जेतइ सुनलैन ओ ओतइसँ देखैले दौगलैथ। धिया-पुता, बुढ़-बुढ़ानुससँ रस्ता अन्हरा गेल। गाड़ी केना आगू बढ़त से रस्ते नहि। मुड़ियारी दऽ दऽ रघुनन्दनक मुँह देखए चाहैन। मुदा मुँह झाँपल। तँए सभ चद्देर ओढ़ने सुतल आदमी देखैत। लोकक भीड़ चारू भरसँ गाड़ीकेँ घेरि नेने। ने आगू बढ़ैक बाट खाली आ ने कियो रघुनन्दनकेँ देखि पबैत।

माटिक मुरूत जकाँ चारू गोरे निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सबहक मुँह देखैथ। रंग-बिरंगक मुँह देखि पड़ैन। केकरो-केकरो आँखिमे नोरो

आ मनमे सोगो देखि पड़ैन आ केकरो-केकरो आँखिमे ने नोर आ ने सोग। मने-मन करिया काका विचारि बजला-

"अहाँ सभ रस्ता छोड़ि दियौ। भैयाकेँ अँगना लऽ चलै छिऐन ओतै उतारि कऽ रखबैन आ सभ दर्शन करब।"

करिया कक्काक बात मानि रस्ता छोड़ि देलक। आगू-आगू गाड़ी पाछू-पाछू सभ घर दिस बढ़ला। घरपर अबिते रघुनन्दनक मृत शरीरकेँ उतारि उत्तर-सिरहौने सुता देलकैन। लगमे सुभद्रा, शीला आ आशा बैस गेली। देवनन्दनकेँ करिया काका कहलखिन-

"बौआ, अहाँ दरबज्जापर बैसू। समाज सभ जिज्ञसो करए औता आ एमहर हम आगूक ओरियानो करै छी।"

दियादीक सभ चूल्हि मिझा गेल। मुदा सबहक मनमे खुशी रहैन। सभसँ उमेरगर रघुनन्दने छला। ओना, बेवहारिक रूपमे सबहक आँखिमे नोर रहैन मुदा मनमे दुख नहि।

उत्तर-मुहेँ सुतौल रघुनन्दनकेँ नव वस्त्रसँ मुँह छोड़ि सौंसे देह झाँपल। सिरहौनामे रखल तुलसी गाछ आ गुगुलक सुगन्ध अँगनामे पसरैत। मर्द-औरतसँ आँगन भरल। मर्द सभ तँ दर्शन करि कऽ दरबज्जापर आबि जाइ छला मुदा स्त्रीगण सभ अँगनेमे बैस गप-सप्प करए लगैथ। छोटका-बच्चा सभ ओसारपर खेलए लगल।

एक साए एगारह बर्खक रधिया दादी, बाँसक बत्तीक ठेंगा हाथे एली। झुनकुट बुढ़। ने मुँहमे एक्कोटा दाँत आ ने एक्कोटा केश कारी। चौड़गर मुँह। दहिना गालपर एकटा नमहर मसुहैर। जैपर इंच-इंच भरिक दूटा पाकल केश। सौंसे देहक चमड़ी ढील भऽ घोकैच-घोकैच गेल। चानिपर तीनटा रेघा जकाँ बनल। गालक ऊपरका भागमे सेहो रेघा जकाँ, मुदा निचला भागमे गाइक गरदैन जकाँ चमड़ी लटैक गेल। आँगनमे पएर दैते नवतुरियो आ सियानो सभ

दादी-ले रस्तो बनौलकैन आ सुभद्रा लग बैसैक जगहो। मुदा दादीक आँखिक नोरमे बेथा रहैन। ओना, अखन धरि नोर पुतलीसँ भीतरे छेलैन..। तखने पाँच बर्खक एकटा छौड़ा लुचबा, दादीक ठेंगा पकैड़ तीनू झुनझुनाकेँ जे तारक बना कऽ लाठीमे ठोकल रहैन–डोला-डोला बजबए लगल। अँगनाक सभ खढ़ू-मढ़ू लगमे जमा भऽ गेल। धिया-पुताकेँ देखि डाँटि कऽ सुबधी बाजल-

“भने तँ तूँ-सभ ओसारपर खेलै छेलेँ, ऐठीन किए एलँ?”

सुबधीक बात दादीकेँ नै सोहेलैन बजली-

“कनियाँ, बच्चा सभकेँ किए डाँटै छिऐ। अहाँ समरथ छी तँए नइ बुझै छिऐ, ई सभ अखन क्याँने गेल, जहिना जाड़क उत्तर गरमी मास अबैए आ गरमीक उत्तर बरखा, जे गरमीसँ शुरू भऽ जाड़मे ठेका दइ छै, तहिना तँ ई देहो अछि। हम तँ कातिक-अगहनक जाड़ भेलौं, ई बच्चा सभ तँ फागुन-चैतक जाड़ छी। मुदा सुरूज तँ वएह रहै छैथ। भलेँ कहियो उग्र तँ कहियो शीतल भऽ जाइ छैथ।”

दादी बजिते रहैथ कि शीला उठि कऽ दहिना बाँहि पकैड़ आगू लऽ जाए लगलैन। रघुनन्दन लग पहुँचते दादीक आँखिसँ सौनक बरखा जकाँ नोर झहरए लगलैन। मुदा बेसी काल नै झहरलैन। मात्र ओतबे काल जेते काल अपन उमेरपर मन अँटकलैन। आगूसँ पाछू-मुहेँक रघुनन्दनक जिनगी दिस नजैर बढ़िते दादीकेँ मुहसँ हँसी निकलए लगलैन। दादीक हँसी देखि आशा बाजल-

“बाबीकेँ एक्कोटा दाँत नइ छैन। आब हेतैन?”

आशाक बात सुनि दादी जोरसँ हँसली। बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, जे तीन गोरेक मुँहक बरबैर लगैन। एक झोंक हँसि दादी सुभद्राकेँ कहलखिन-

“दियादनी, अहाँ बच्चा छी तँए, कनी दुख होइते हएत। मुदा

अहाँसँ कम्मे उमेरमे हमर स्वामी संग छोड़ि चलि गेलैथ। तइ आगू अहाँक विपैत छोट अछि। भगवान अहाँकेँ सभ किछु देने छैथ। भरल-पुरल परिवारमे श्रवणकुमार सन बेटा, लछमी सन पुतोहु आ एहेन सुन्नर खेलौना सन पोती अछि, तहन किए सोग करै छी। आब अपना सभ सृष्टिक ओहन बीज स्वरूप बनि गेल छी जइसँ अँकुरक सम्भावना नहि। जहिना कोनो अन्नक बीआ आकि फलक बीआ साल भरिक उत्तर पुरान भऽ जाइए जइमे अँकुरक शक्ति झीण भऽ जाइ छै तहिना भऽ गेलौं। मुदा तँए कि अन्ने फलक बीज जकाँ मनुखोक शक्ति साले भरिमे झीण भऽ जाएत? सबहक शक्तियो एक समान नै होइए?”

तैबीच फुदैक कऽ आशा पुछलकैन-

“बाबी, अहाँकेँ केते दिन भेल?”

“हे गइ डकडरबा बेटी, तूँ हमरा दिन पुछै छेँ। साढ़े बाइस गाही बरख भेल अछि।”

दादीक बर्खक हिसाब कियो नै बुझलैन। सभ अकबका गेली। सभ-सबहक मुँह देखए लगली। जे दादियो बुझलैन। मुस्कियाइत शीलाकेँ कहलखिन-

“सासु सासु नहि, माए छैथ। हमर छोट दियादनी छैथ। जखन हमरा पाँच बरख ऐठाम एला भेल रहए तखन रघू बौआक जन्म भेलैन। एक बेरक खेरहा कहै छी, ता काकियो समरथे रहैथ मुदा हमरासँ उमेरगर रहैथ। माघ महिनाक मकरक मेला शुरू भेल। अपना गाम सबहक बेसी लोक हर्ड़ी जाइ छल। हमरा संग रघू बौआ हर्ड़ी गेल। हर्ड़ीसँ कनीए बेसी बिदेसर अछि। मुदा बिदेसरक मेला गड़बड़ हुअ लगलै। निरमलीसँ दरिभंगा धरिक रेलबे कातक जेते उचक्का अछि, सभ भोरुके गाड़ीसँ आबि उचकपन्नी शुरू कऽ

देलक। जइसँ नीक घरक लोक विदेसर जेनाइ-एनाइ छोड़लक। ओना, बिदेसरो बाबा बड़ जगताजोर, तँए केतबो उचकपन्नी होइ तैयो मेला बढ़ले जाइत। अपना गाम सबहक लोक जेनाइ छोड़ि देलक। ओना, क्षेत्रो नमहर छै, तैपर सँ स्थानक लग-पासक लोक सेहो कान्ह उठेलैन। जेकर फल भेलै जे स्थानसँ उचकपन्नी समाप्त भेल। हड़ींक संग दूटा बाधा उपस्थित भेल। परसा धाममे सुरूज भगवानक मुरती उखड़लासँ नव स्थान बनल। ओना, मुर्तियो दिव्य अछि। एक तँ सुरूज भगवानक, दोसर बेस किमती पाथरो अछि। मन्दिरो नीक। मुदा हालमे जे साम्प्रदायिक प्रभाव मदनेसरकेँ बढ़ौलक ओइसँ परसो आ हर्ड़ियोकेँ नीक झटका लगलै। हड़ींक महादेवो छैथ गहींरमे, जइसँ सभ दिन जल भरल रहै छैन।”

बिच्चेमे सुभद्रा, दादी दिस देखैत बजली-

“बहिन केते दिन बौआ केँ दूध पिऔने छिऐन?”

दादी बजए लगली-

“समरथाइमे हम खूब बुफगर रही। पहिल सन्तान भेले रहए। मनसम्फे दूध हुअए। काकी रोगा गेली। दूध टुटि गेलैन। हमरे दूध पीब-पीब बौआ जीअल। जखन बौआ साल भरिक भेला अन-तन सेहो खाए लगला, डेगा-डेगी चलौ लगला, बोलियो फुटलैन तखन काकी सिखा देलकैन दूधवाली माए कहैले। हमरो नीक लगए। बेटा तँ नै कहिऐन मुदा बच्चा कहैत रहिऐन। डेढ़ साल भेलापर हमरो दूध टुटए लगल। खाइ-पीबैमे तँ कोताही नै हुअए मुदा दोसर कारण भऽ गेल। मकरक मेला जाइत रही। काकी बच्चोकेँ नेने जाइले कहलैन। सभ साल ओतैसँ तरिपात कीनि-कीनि आनी जे सालो भरि मसल्ला खाइ छेलौं। ओना, हड़ीं मेलाक हरीष, माटिक नादि, टाड़ा-टाड़ी नामी रहए। सात-आठ बर्खक बच्चा रहैथ। गामक बहुत

जनिजातियो आ धियो-पुतो रहए। अपनो बेटा आ बच्चोकेँ हमहीं नेने गेलिऐन। अरबा चाउरक रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन बना लेलौं। गामोपर खा लेलौं।”

बिच्चेमे आशा टोकलकैन-

“खा कऽ महादेव दर्शन करए गेलिऐ?”

आशाक बात सुनि दादी ठहाका दैत बजली- “हर्ड़ी मेला स्त्रीगणक मेला छी। पुरुखसँ बेसी स्त्रीगण आ धिया-पुता रहैए। दस बजेमे सभ खा-खा जाइत अछि आ दोसैर-तेसैर साँझ धरि घुमि-घुमि अबैत अछि। अपना सबहक कुटमैतियो बेसी ओही भाग अछि। एक दिससँ धीओ-बेटी अबैत आ दोसर दिससँ माइयो-पितियाइन जाइत, जइसँ सभकेँ मेलामे भेँट-घाँट भऽ जाइत। जहिना ‘बड़ियाकेँ बान्ह नइ छै, जे मन फुरै छै से करैए’ तहिना तँ जनिजातियो आ बुड़िबकहो अछि। जे मन फुरतै से करत...।

..हँ, तँ कहै जे छेलियह, बच्चाकेँ नेने गेलिऐन। बेरहटिये पोखैरक महारपर बैस खाए लगलौं। बच्चोकेँ एक खाड़ा रोटी आ तरकारी देलिऐन। हम दच्छिन-मुहेँ, पोखैर दिस घुमि कऽ खाए लगलौं। मुड़ी गोंतने रही, माथपर साड़ी लटकल रहए। तैबीच एकटा झुनझुनाबला घुमैत-घुमैत आएल। धिया-पुता सभ पाछू-पाछू रहइ। ताड़क पातकेँ गुलाबी रंगमे रंगि झुनझुना बनौने रहए। एकटा झुनझुना हाथसँ बजबैत रहै आ बाँकी पथियामे माथपर रखने रहए। आँएले-वाँएले बौओ रोटी खाइते पाछू धऽ लेलैन। हम बुझबे ने केलिऐ। धिया-पुता तँ खुरलुच्ची होइते अछि। झुनझुनाबला आगू बढ़ि गेल। बाटीमे पानि पीब जखन पानि दइले तकलौं तँ देखबे ने केलिऐन। ले बलैया! ओते लोकमे केतए ताकब? भारी पहपैटमे पड़ि गेलौं। हाँइ-हाँइ कऽ तरिपातो आ टाड़ो लेलौं आ तकैले विदा भेलौं।

एकटा झुनझुनाबला रहैत तखन ने ठेकना कऽ जइतौं। से तँ जेम्हरे देखिऐ ओम्हरे झुनझुनाबला रहए! मन हारि मानि लेलक। मनमे हुअ लगल जे काकीकेँ की जवाब देबैन। मुदा मने-मन चण्डेसर बाबाकेँ कहलयैन जे आन देवस्थानमे तँ कियो नै हेराइत अछि मुदा तोरा स्थानमे भऽ गेलह। अखनुका जकाँ ताबे धिया-पुताक चोरि देवस्थानमे नै हुअए। मुदा तैयो मनमे खुटखुटी रहबे करए। तेकर कारण रहै जे कहियो काल सुनिऐ फल्लाँ स्थानसँ फल्लाँक बेटा आकि बेटी हरा गेलइ। तँए मनमे हुअए जे काकी की कहती? तहूमे रोगाएल छैथ। मने-मन समोह लगि गेल। मुदा फेर मनमे भेल जे जँ कहीं घुमि-फिर कऽ चलि आबैथ। थोड़े काल गुन-धुन कऽ एक हाथमे तरिपात आ दोसर हाथमे टाड़ा लऽ ताकए विदा भेलौं। रस्ताक दुनू कात दोकानबला सभ दोकान लगौने रहै आ बीच देने लोक सभ चलइ...।

..मन्दिरक आगू एक्के बेर मन्दिरक फाटकसँ बहुत लोक निकलल। रस्तापर रेड़ा भऽ गेल। तखने माथपर सँ साड़ी ससैर गेल। आब की करब? दुनू हाथो बरदाएल रहए। माथपर साड़ी केना लेब। नै लेब तँ लोक की कहत। तैकाल दहिना हाथक टाड़ा छुटि गेल। फुटि गेल। झुटका-झुटका भऽ गेल। मुदा पहिने साड़ी ससारि कऽ माथपर लेलौं। एक गोरेकेँ पएरमे झुटकाक कान गड़ि गेलइ। ओ भिन्ने खिसियाइत कहलक जे 'एहेन ढहलेल छह तँ मेला-ठेला किए अबै छह।' मुदा अपन हारल रही, किछु नै कहलिऐ।

..चुपे-चाप रेड़ासँ बहरेलौं। बाहर अबिते आँखि उठा कऽ तकलौं आकि देखलौं जे उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ एकटा झुनझुनाबला अबैए। रस्ता कातमे ठाढ़ भऽ हिआ-हिआ ताकए लगलौं आकि पाछू-पाछू हिनको देखलयैन। देहो हल्लुके रहए। खाली एक्केटा हाथ बरदाएल रहए। दौग कऽ जा बाँहि पकैड़ कात केलिऐन। फेर जखन

पोखैरक महारपर एलौं तँ केकरो नै देखिलऐ। सभ चलि गेल रहए। आनो-आनो गामक यात्री घरमुहाँ भऽ गेल छेलइ। हमहूँ ओही लाटमे विदा भऽ भेलौं।”

मुस्की दैत शीला पुछलकैन-

“तमसाएलमे फज्झैतो केलखिन?”

सिनेहसँ भरल दादीक मुहसँ निकललैन-

“राम-राम। अबोध बच्चाकेँ किए किछु कैहतिऐन। अबोध बच्चाकेँ तँ बुझा कऽ ने कहबै आकि मारि कऽ, मारलासँ बच्चा हेहरू भऽ जाइ छै किने...।

..हँ, तँ कहै जे छेलौं, गामपर एलौं तँ काकीकेँ कहलयैन जे एहेन-एहेन खुरलुच्ची बेदरा सेने कोनो मेला-ठेला नइ जाइ। काकी अकचका कऽ पुछलैन तँ सभ खेरहा कहलयैन। उमेरक अन्तर रहितो चौल करबे करै छेलिऐन। जूरशीतलमे अछींनजलसँ असिरवाद दैते छेलिऐन आ फगुआमे रंगो-रंग खेलाइ छेलौं...।”

सुभद्रा दिस देखि फेर दादी बजली-

“बहिन, अहाँक मालिकसँ कम्मे उमेरमे हमर मालिक संग छोड़लैन। करीब साठि बरिससँ ऊपरे भेल हएत। अहाँ तँ एक बएसपर आबि गेल छी। भगवान कोनो चीजक परिवारसँ समाज धरि कमी देने छैथ जे सोग-पीड़ा करब। दुनियाँ फुलवारी छिऐ। एक अबैत अछि, एक जाइत अछि। जहिना सालो भरि एकटा जन्म लैत अछि, एकटा जुआनीक आनन्द लैत अछि आ एकटा पकि कऽ सुखैत अछि। तहिना तँ मनुखोक होइ छइ। तहूमे भगवानक फुलवारीक अजीब गति छैन। हुनका फुलवारीमे सालक कोन, मासक कोन, दिनक कोन जे छने-छन एकटा अबैत अछि तँ दोसर जाइत अछि। हम अहाँ मनुक्ख छी। असगर मनुक्ख रहितो

सामाजिक सेहो छी, मुदा पहिने मनुक्ख छी तखन किछु आर। मनुक्खकेँ मनुषत्व प्राप्त करब प्रमुख काज छी। जखने मनुक्खकेँ मनुषत्व प्राप्त भऽ जाइत तखने ओ दुनियाकेँ चिन्हए-जानए लगैत। अपन परिवारसँ समाज धरिक सम्बन्ध स्थापित कऽ लइत। जइसँ सम्बन्धक अनुरूप अपन दायित्व निमाहए लगैत। ओना, बच्चा हमरा आगूमे बच्चे छैथ। भलेँ सामाजिक सम्बन्धमे भाए-भौजीक सम्बन्ध अछि। मुदा भगवान अनुचित केलैन। उचित ई होइत जे पहिने हमरा लऽ चलितैथ।”

ई विचार मनमे अबिते रधिया दादीक दुनू आँखि ढबढबाए लगलैन!

बचनू, चंचल, झोली, बौकू आ बतहू, देहक कपड़ा उतारि खाली देहपर तौनी आ डाँड़मे धोती पहिरने, कान्हपर कुरहैर नेने पहुँचल। अँगना-सँ-दरबज्जा धरि जनिजाति, पुरुख आ बच्चासँ भरल। लोकक भीड़ देखि देवनन्दनक मन उड़ैत रहैन। अँगनासँ दरबज्जा धरि पिताक हँसैत आत्मा देखैथ। बिसैर गेला अपन जिनगी। मनमे हुअ लगलैन जे बिनु कहनौं समाज केना अप्पन काज बुझै छैथ। एहेन काज समाजक मात्र मृत्युए समए नहि, बेटा-बेटीक बिआहक संग अनेको समए होइत अछि। जँ संग मिलि हँसी, संग मिलि कानी, संग मिलि गाबी आ संग मिलि नाची, तँ ऐसँ सुन्दर की होइत अछि। सुख केकरा कहबै? जइ सुख-ले लोक नीच-सँ-नीच काज करैत अछि मुदा पाबि नहि पबैत अछि।

एक छिन्ना धोती पहिरने श्रीकान्त पहुँचला। श्रीकान्त मधुबनी कोर्टसँ बड़ाबाबूक पदसँ सेवा निवृत्त भेल छला। मुँह निच्चाँ केने सोझे आँगन पहुँच पएर छुबि गोड़ लागि एकटंगा दऽ ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर बजए लगला- “काका, अहाँ परसादे जिनगी भरि

कुरसीपर बैस सेवा निवृत्त भेलौं। जइसँ जहिना जिनगी चैनसँ बितेलौं तहिना ऐगला शेष जिनगी सेहो बिताएब।”

सुभद्रा दिस देखि श्रीकान्त फेर बजला-

“काकी, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जहिना अहाँ देवकेँ बेटा बुझै छिऐन तहिना हमरो बुझब।”

श्रीकान्तक बात सुनि सुभद्रोकेँ मोन पड़लैन। मनमे उठलैन जे देखियौ कौल्हुका छौड़ा बुढ़ भऽ गेल। बुड़हा तँ सहजे झुनकुट बुढ़ छला। हवा-बिहाड़िमे टुटि कऽ खसबे करितैथ। एहेन मृत्यु भगवान सभकेँ देथुन। एहेन मृत्यु तँ धरमतमे सभकेँ होइ छैन। कोनो कि हमरेटा चूड़ी फुटल, सिन्नुर धुआएत आकि दुनियाँमे बहुतोकेँ होइ छइ।

मुड़ी निच्चाँ केने श्रीकान्त अँगनासँ निकैल दरबज्जापर आबि देवनन्दनक बगलमे चुपचाप बैस गेला। किछु बजैक साहसे नै होइत रहैन। जेना जीह्वामे थरथरी आबि गेल रहैन। साहस बटोरि, आँखि उठा, देवनन्दनकेँ कहलखिन-

“बाउ देव, ओना, अहाँ बच्चा छी मुदा हमरासँ सभ तरहेँ ऊपर छी। अपन बात कहै छी। अखुनका जकाँ पहिने घरक स्थिति नइ रहए। बाबू बड़ मेहनती रहैथ। जहिना मनुक्खक किरदानी तहिना दैवीए प्रकोप सेहो सदिकाल चलिते रहै छल। एक दिस बइमानी-शैतानी तँ दोसर दिस पानि-बिहाड़ि, भुमकम-रौदी आ शीतलहरी होइते रहै छल। तैपर सँ रोग-वियाधि सेहो चलिते रहै छल। जखन टेस्ट परीछा दऽ पास केलौं तँ फार्म भरैक समए आएल। बाबू अस्सक रहैथ। कालाजार भऽ गेल रहैन...।” श्रीकान्तक आँखि सिमैस गेलैन। दुनू हाथे आँखि पोछए लगला।

कालाज्वर सुनि डॉक्टर देवनन्दनक मनमे एलैन जे सचमुच

अपना इलाकामे कालाज्वर अखुनका केन्सरसँ कम नै छल।

आँखि पोछि श्रीकान्त आगू कहए लगलखिन-

“दिनानुदिन बाबूजीक देह हहरले जाइत रहैन। गुनाकरपुरसँ हाथीक लिद्दी आनि-आनि दिऐन। बच्चे रही तँए बुझबो कम करिऐ। माए जे कहए से कऽ दिऐ। फारम भरैले रुपैआ माएसँ मंगैक साहसे ने हुअए। भरि दिन तंग-तंग देखिऐन। दोसर-दोसर विद्यार्थी सभ फारम भरि लेलक। हमरा मनमे विचित्र उथल-पुथल होइत रहए। अन्तिम तारीख अबैत-अबैत आशा टुटि गेल। जेना विपैत कपारपर आबि गेल हुअए तहिना बुझि पड़ए। दुनियाँक रंग बेद-रंग लगए लगल। अन्तिम दिनक चारि बजे, हेड मास्टर साहैब एकटा विद्यार्थी दिअए समाद देलैन जे- काल्हि धरि हमरा लग फारम रहत तँए तूँ आबि कऽ फारम भरि लएह। कौल्हुका बाद भरब कठिन भऽ जेतह। ने कोनो काज नीक लगैत आ ने खेनाइ-पिनाइ...।

..मनमे आएल एक बेर रघुनन्दन काकाकेँ कहिऐन। सएह केलौं। आबि कऽ सभ बात कहलयैन तँ पुछलैन जे कहिया धरि काज छह..?

..कहलयैन आइ तँ आखिरी तारीक छी मुदा हेड मास्सैब एते दया केलैन जे काल्हि धरि समए देलैन अछि।

..दरबज्जेपर सँ काकीकेँ बक्सामे सँ रुपैआ नेने अबैले कहलखिन। जहिना बच्छाबला पैकार देने रहैन, तहिना आनि कऽ आगूमे रखि काकी कहलकैन जे घरमे एक्कोटा चाउर नै अछि...।

..जहिना काकी कहलखिन तहिना काका उत्तर देलखिन, एक-दू साँझ भूखलो रहि जाएब। मुदा एक जिनगीक प्रश्न अछि। तँए एहने सभ काजकेँ ने लोक धरम बुझैए।

..रौदियाह समए रहए। जइसँ गामक लोक कियो मरूआ

रोटी, तँ कियो कोटाक जनेरक रोटी, कियो अल्हुआ तँ कियो खेसारीक उसना खाइत समए काटैत रहए। सेहो सभकेँ भरि पेट नै होइत। केते गोरेकेँ तँ साँझक-साँझ चूल्हि नै चढ़ैत रहइ...।"

कहैत-कहैत श्रीकान्तक आँखिमे नोर टघरए लगलैन। जेते दुखक ताप श्रीकान्तक आँखिसँ टघैर-टघैर निच्चाँ खसैत, तेते देवनन्दनकेँ धरतीसँ उठैत हवासँ हृदए शीतल हुअ लगलैन। पुछलखिन-

"अखन परिवारक केहेन स्थिति अछि?"

धोतीक खूटसँ आँखि पोछैत श्रीकान्त बजला-

"बाउ, बड़ सुखसँ जीबै छी। दुनू भाँइ बी.ए. पास कऽ नोकरी करैए। जेठका हाई स्कूलमे अछि आ छोटका ब्लौकमे। शनिए-शनि दुनू भाँइ अबैए आ सोमकेँ सबेरे खा-पी कऽ चलि जाइए। दुनू पुतोहुओ आ पाँचो पोता-पोतीसँ घर भरल अछि। अपनो पेन्शन भेटते अछि। भगवान बेटी नै देलैन। मुदा तैयो दुनू बेटाकेँ पढ़ा, रहैले छह कोठरीक मकान आ तीन बीघा खेत कीनलौं। चौमासमे एकटा कल गड़ा देने छिऐ, जइसँ तीमन-तरकारी कीनऽ नै पड़ैए। बाँकी खेत बटाइ लगा देने छिऐ। भरि दिन अनमेनामे लगले रहै छी। कखनो ई नै बुझि पड़ैए जे समए केना काटब। एते दिन तँ ऑफिसेक फाइल उघलौं मुदा आब दू-दू घन्टा रामायण, महाभारत पढ़ै छी। तइ लगल बच्चो सभकेँ पढ़ाइयो दइ छिऐ आ गोटे-गोटे खिस्सा सेहो रामाइनो आ महाभारतोसँ सुना दइ छिऐ। महिना भरिक हिसाबसँ सालमे एक बेर देशाटन सेहो कऽ लइ छी। जइसँ तीर्थाटनो भऽ जाइए। अपनो तँ बहुत नहियेँ अछि, मुदा कक्काक बतौल बातकेँ अखनो कान धेने छी जे अपनासँ निच्चाँक जँ कियो किछु मांगए अबैत तँ नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ जरूर सेवा करै छिऐ। मनमे कखनो कोनो चिन्ता नइ रहैए।"

तैबीच किसुन लाल साबेक जुट्टी खोलि भिजौने आबि दलानक आगूमे बैस खड़ैए लगल। कान्हपर कुरहैर नेने सोधन सेहो आएल। आबि कऽ करिया काकाकेँ पुछलकैन-

“भैया, बाँस कटबै?”

“के सभ जाइ छह?”

“कएटा कटबै?”

“रौ बुड़िबक, ईहो पुछैक गप छी। खूब नमगर-चौड़गर चचरी बनबैक अछि। कोन चीजक कमी भैयाकेँ छैन जे मचोड़ि-सचोड़ि कऽ घर-सँ-बाहर करबैन। कमसँ-कम तँ चारिटा बाँस आनह। दूटा मुठबाँसी आ दूटा छिपगर लऽ आनह।”

“कोन बीटमे कटबै?”

“एना अनाड़ी जकाँ किए पुछै छह। तोरा कि नै देखल छह?”

“से तँ सभटा देखल अछि। साले-साल काटि कऽ लऽ जाइ छेलौं तैयो ने देखल रहत। आकि आबे बिसैर जाएब। जहिना जेठ भैया जीबैतमे छला तहिना तँ आगूओ रहता किने। पाँचटा बाँस साले-साल सोझहोमे कटै छेलिऐन परोछोमे कटबैन। मुदा से नइ कहलौं। कहलौं जे हरोथक बीटमे कटबै आकि चाभमे?”

सोधनक बात सुनि करिया काका गुम्म भऽ सोचए लगला। मुदा बुझल-गमल काज, तँए सोचैमे देरी नै लगलैन। मुस्की दैत बजला-

“हरोथ मरदनमा बाँस होइए, छाती धरि मोंछ-दाढ़ी रहै छइ। ओकरा चिक्कन बनबैमे देरी लगतह संगे एकटा आरो ओजार तीन दिन जहल चलि जाएत। काजक घरमे सभ चीजक काज बढ़ि जाइत अछि।”

करिया कक्काक बात सुनि हँसैत सोधन बौकू दिस बढ़ल।

तखने धड़फड़ाएल दुनू परानी लेलहा आएल। अपनाकेँ अपराधी बुझि करिया कक्काक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। करिया काका बुझि गेलखिन जे भरिसक केतौ गेल रहए तँए पछुआ गेल। आगू चलैबला जँ पछुआ जाए तँ तेकर कारण पैछला काजो होइ छइ। मुस्कियाइत कहलखिन-

“चेला, अखन धरि सुतले छेलह?”

ठोर बिजकबैत लेलहा बजला-

“काका, केतेक दिनक पछाइत आइ काज लगल। वएह करैले चलि गेल छेलौं।”

“कोन काज करए गेल छेलह?”

“घुरना भैयाकेँ आठ गो मझोलके शीशो गाछ छै ओकरे पाँगे-ले गेल छेलौं। एक तँ एहेन गाछ नै देखलौं। सदिकाल चुट्टी आ घोरन लड़ाइए करैत रहैए। मुदा आइ तँ अद्भुत देखलौं। चारिटा गाछपर ने चुट्टी आ ने घोरन छेलइ। मुदा एक भागक दूटा गाछमे लोहाड़ि रहइ आ दूटा गाछपर घोरन। तीनटा पाँगि नेने छेलौं कि सोनमा-माए दौड़ल आबि कऽ कहलक जे रघूदादा मरि गेलखिन। छिप्पी दिससँ थोड़े पाँगि नेने रही। सोचलौं जे उतरैमे ओते घोरन कटबे करत से नइ तँ बँचले केते अछि पाँगियेँ ली...।

..एँह काका की कहब! पाँखिबला बड़का-बड़का घोरनक छत्ता रहइ। ओही पुरबैमे कनी अबेर भऽ गेल।”

“अच्छा की हेतइ। अखन तँ ढेरो काज पछुआएल अछि। भने टेंगारियो अननहि छह। सोधनक संग जा बाँस काटि आनह।”

“काका, कड़ची टाट बनबैले लऽ लेब। ताबे ओतै बोझ बान्हि कऽ रखि देबइ।”

“बड़बढ़ियाँ।”

“काका, मूजक काज तँ सेहो ने हएत।”

“भने मोन पाड़ि देलह, बिसरले छेलौं।”

घरवालीकेँ लेलहा कहलक-

“पहिने दुनू गोरे काकाकेँ दर्शन कऽ लिअ। तखन हम बाँस काटए जाएब आ अहाँ मूज नेने आउ। गठुलाक बत्तीमे खोंसि कऽ रखने छी। अदहा रखि लेब अदहा नेने आएब।”

कहि लेलहा करिया कक्काक कानमे फुस-फुसा कऽ कहलकैन-

“काका, थाकि गेल छी। पियासो लगि गेल अछि। पानि तँ पीब लेब मुदा अखन खाएब केना! एक बेर चीलमक भाँज लगा दियौ।”

लेलहापर करिया काका बिगड़ला नहि! सोधनकेँ आँखिक इशारासँ कहलखिन-

“कुरहैर-टेंगारी लेलहो आ झोलीकेँ दऽ दहक आ हमर नाओं कहि बौकासँ पाँच रुपैआक गाँजा लऽ बँसबिट्टीए-मे पीब लिहह।”

काजक जुति-भाँति लगा करिया काका बँसवारि पहुँच गेला। तीनू गोरे गजो पीबैक तैयारी करैत आ दुनू बापूत–रघुनन्दन-देवनन्दनक बीच तुलनो करैत...।

“देवनन्दन केतबो पैघ डॉक्टर साहैब भऽ जेता मुदा तइसँ की, रघू कक्काक परतर हेतैन?”

सोधनक बात सुनि करिया काका जिज्ञासासँ पुछि देलखिन-

“से की?”

“भरि दिन काका महादेव जकाँ लेन-देन करै छला। डॉक्टर साहैब बुते से हेतैन?”

चीलममे दम मारि, ऊपर-मुहेँ धुँआ फेकैत करिया काका बजला- “अपने बात सोधन कहै छिअ। भलेँ लोक हमरा माइयो-बापकेँ दोख लगा कहि दैत अछि जे जाबे माए-बाप, जन्मदाता-भगवान किछु गुण नै देखलखिन ताबे ‘करिया’ नाओं किए रखि देलखिन। कोनो कि हमर देहक रंग कारी अछि? तँए, हम तँ समाजमे कलंके बनि जन्म नेने छी। केतबो लोककेँ बुझेबै तैयो हमर बात तरे पड़ि जाइए। जेकरा बुझा देबै ओ बुझि कऽ मुँह बन्न कऽ लेत। जेरक-जेर जे जनैम-जनैम कऽ नवका पीढ़ी बनबैत अछि ओ केना बुझत? मुदा तइले दुख कहाँ होइए। हम तँ ओहन समाजक लोक नै छी जे वित्तीय गामक सीमामे घर बना बुझैत अछि। हम तँ ओइ समाजक छी जइमे जन्म-सँ-मृत्यु धरिक गाड़ी गुड़कैत अछि। पल्हैनक ऐठामसँ लऽ कऽ असमसान धरि!”

जाधैर करिया काका बजैत रहैथ तइ बिच्चेमे लेलहा दू दम मारि लेलक। गहुमन साँपक बिख जकाँ लेलहाकेँ निशाँ चढ़ि गेल। सोधनक हाथमे चीलम दैत बाजल-

“काका, एक बेर पटुआ काटए असाम गेलौं। अपना इलाकाक बहुत लोक साले-साल पटुओ आ धानो काटए मोरंग, असाम, ढाका धरि जाइ छल। मुदा हम पहिले-पहिल गेल रही। काकरभिट्टासँ बस पकैड़ सिलीगौड़ी होइत असाम गेलौं। एकटा बड़का धार देखलिऐ। बसक कण्डेक्टर ओंगरीसँ एकटा पहाड़ देखबैत बजलै जे ‘कामरूप कामाख्या मन्दिर’ ओही पहाड़पर छइ।”

चीलम बढ़बैत सोधन पुछलक- “कोन कमख्या?”

सोधनक बात सुनि ठहाका मारि हँसि लेलहा बाजल- “भैया, तहूँ अनठा-अनठा बजै छह। हौ वएह कमख्या जैठामसँ लोक जोग-

टोन सीखि-सीखि अबैए आ अपना इलाकामे मौगी सभकेँ ठकैए। कहतह जे सभसँ पक्का मन्तर हमर कोखिया गुहारिक अछि। शुक्रक बेरागनक दस बजे रातिमे गुहारि करए जेतह।”

बिच्चेमे सोधन टोकलकै-

“ओइ स्थानपर जा कऽ नै देखलहक?”

लेलहा बाजल-

“एँह, भैया तहूँ हद करै छह। जखन गौहाटी पहुँचिये गेलौं। तखन नै जइतौं? गेलौं तँ देखलिऐ जे चिड़ैसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरिक बलि होइए। हँ, तँ कहै छेलियह जे जखन बससँ उतरलौं तँ पानि पड़ैत रहइ। कनीए काल ओतए अँटकलौं आकि पानि छुटि गेल, चाह पीना बड़ी काल भऽ गेल रहए। चाह पीबैले मन लुस-फुस करैत रहए। किछु नीके ने लगए, चारू गोरे एकटा चाहक दोकानमे गेलौं तँ दोकानक सजाबट देखि कऽ किछु ने फूरल। अपना इलाकामे ओ सजाबट कहाँ अछि।”

“केहेन सजाबट रहइ?” ...सोधन पुछलकै।

तैपर लेलहा बाजल-

“दोकानदारेसँ पुछलिऐ तँ कहलक ई बाँसक कैमचीक बनौल छिऐ। ओकर बनाइ देखि आसचर्ज लगल जे केहेन-केहेन लूरिगर लोक सभ अछि। बाँसेक कुरसी, टेबुल आ गीरहक कप बनौने रहए। सिंह-दुआरि परहक मेहराउकेँ अदहा घन्टा धरि देखैत रहलौं। पथिया-मौनी तँ अपनो इलाकामे लोक बनबैए मुदा ओहन कहाँ बनबैए। ने ओहन मेघडम्बर बनबैए आ ने ओहन मन्दिरनुमा घर..।

ओम्हुरका बाँसो अजीब अछि। अपनो इलाकामे बीस-पच्चीस रंगक बाँस अछि। मुदा ओमहर तँ साइयो रंगक अछि। जेहेन कड़चीक दतमैन बनबै छहक तेहेनसँ लऽ कऽ भरि-भरि पाँजक

देखबहक। पालकीमे जे बाँस देखै छहक, बीटक-बीट ओ बाँस अछि ओतए। छत्ताक बेँट बनबैबला सेहो अछि। पुरान-पुरान बाँसक बीट सभ फुलाएल-फड़ल सेहो अछि।"

चीलमो सठल। उठैत करिया काका बजला-

"बेसी देरी नै लगबिहह। हम ताबे आगू बढ़ै छी।"

करिया कक्काक बात सुनि लेलहा बाजल-

"काका, जहिना पानि उतरल कोदारि, खुरपी, हँसुआ इत्यादिसँ काजो कम होइत आ भीरो बेसी, तहिना पनिउतरू पुरुख आ पनिचढ़ू पुरुखक काजमे होइ छइ। एते काल पनिउतरू छेलौं आब पानि चढ़ि गेल। अहाँ पहुँचबो ने करब तइसँ पहिनहि हमसभ पहुँच जाएब। मुदा एकटा बात कहि दइ छी, 'रघूकाका गामक मेह छला!' ई अन्तिम काज समाजक कान्हपर अछि, तँए नीक जकाँ होइन।"

चारिटा बाँस काटि तीनू गोरे पहुँचल। दुनू मुठबाँसीक दूटा बल्ला बनौलक। बाँकी दुनू छिपगरहा फट्ठा बनबैले टोनए लगल। दू गोरे टोन बनबैत आ दू गोरे दू-दू फाँक कऽ फट्ठा बनबए लगल।

रघुनन्दनक मृत्युक समाचार सुनि दियादीक बीच चूल्हि बन्न भऽ गेल। मुदा दियादीमे एकरूपता नहि। जइक चलैत किछु चूल्हि बन्न भेल आ किछु जरिते रहल।

गाममे सभसँ नमहर दियादी रघुनन्दनक छैन। से कोनो एकाएक आइए भेलैन से नहि। पहिनेसँ बढ़ैत आबि रहल छैन। ओना, पहिलुका रूतबा आब नइ छैन मुदा तैयो गामक लोक मने-मन बुझैत अछि। पहिलुका रूतबा कमैक कारणो भेल। बेटीक बाढ़ि एने किछु परिवार तँ उपटिए गेल जे जहियासँ सतना आ रमचन्द्रा भेल तहियासँ तँ आरो दियादी घिना गेलैन। दुनू एहेन भेल जे गामक

कोन बात जे अपनो कुल-खनदानक बहिनकेँ बहिन नै बुझैए। जइसँ आनो-आनो आ अपनो परिवारक बुढ़-पुरान “छगरा गोत्र” कहए लगलैन। ऐ सभ दुआरे रघुनन्दनोकेँ दियादवादसँ ओते मेल नइ रहैन जेते सभ चाहैन। एकटा बात अखनो जरूर अछि जे आन दियाद आ आन जातिसँ कोनो तरहक झगड़ा-झंझटमे सभ एक भऽ जाइए। अखन धरि एते जरूर निमाहैत एला जे अर्थीकेँ अपने दियाद उठा कऽ अँगनासँ गाछी लऽ जाइत अछि।

अखनो गाममे सभसँ अधिक पढ़ल-लिखल दियादी-परिवार देवनन्दनेक छैन। मुदा गुरु काका आ पढ़ुआ भैया ओछाइने धेने छैथ। जहिया दयाकान्त डॉक्टरी पढ़ि नोकरी शुरू केलैन, तहिए-सँ धिया-पुताक संग गाम छोड़ि देलैन। तहिना उमाकान्तो इंजीनियरिंग पढ़ि केलैन। आब तँ सहजे एहेन चलैने बनि गेल, माने फैशने भऽ गेल अछि। साधारणो नोकरी केनिहार सभ गाम छोड़ि दइए। उमेरे तँ गुरुओ काका आ पढ़ुओ भाय बुढ़ नहियेँ भेला हेन, मुदा सोगे दुनू गोरे ओछाइन पकैड़ लेलैन। नीको मोन रहै छैन तैयो घरपर सँ केतौ ने जाइ छैथ।

अखुनका लोकक माने मर्द-औरतक जे छिछा-बिछा देखै छथिन तइसँ मन हरिदम खसले रहै छैन। नवका लोको तेहने भऽ गेल अछि जे नीक विचार, नीक काजकेँ शब्द मात्र बुझै छैथ ओकर बेवहारिक पक्षक गुणकेँ नै बुझै छैथ। बुझबो केना करता? जे कोनो फल काज केलाक उपरान्त भेटैत अछि, ओ बिनु केने केना भेट सकैए।

दियादीक परम्पराकेँ निमाहैले सुखदेव देवनन्दन लग आबि बजला-

“बौआ देव, अहाँ बच्चा छी तँए दियादीक परम्पराकेँ नै बुझै छिऐ। अखन धरि अपना दियादीमे चलैन रहल जे लहासकेँ आँगनसँ

गाछी, अपन दियादीए-क समांग उठा कऽ लऽ जाएत।”

सुखदेवक बात सुनि देवनन्दन किछु नै बजला। मुदा कातमे ठाढ़ करिया काका मुस्कियाए लगला। मनमे नचैत रहैन जे अखन गाममे छैथ तँए बेसी फुरै छैन। देह तेहेन बनौने छैथ जे अपन धोधि सम्हरबे ने करै छैन, डाँड़सँ धोती ससैर-ससैर खसैत छैन आ रूआब बब्बेबला छैन...।

देवनन्दन दिस देखि सुखदेवकेँ कहलखिन-

“हओ सुखदेव, भाय-साहैब जाति-दियादसँ आगू बढ़ि समाजमे छैथ तँए कियो अपन करबह। जँ तोँ गाछीए लऽ जेबहुन तँ ऐमे अधला की। ईहो तँ एकटा काजे भेल। मुदा खाली बजनहिटा सँ तँ नै हेतह। तइले संगोरो करए पड़तह किने?”

कहि करिया काका मुँह चुप कऽ लेला, मुदा मनमे उठिते रहैन- ‘जिनगी बितलैन बोहुक संग सिनेमा देखैमे आ एला हेन अपनत्व बुझबै-ले। कोनो गत्रमे लाजो ने होइ छैन।’

मुदा ऐ गपकेँ मनेमे रखि बात बदलैत फेर बजला-

“जाधैर हम सभ एमहुरका ओरियान करै छी, ताधैर तहूँ संगोर केने आबह।”

तैबीच सुन्दर काका धड़फड़ाएल पहुँचला। दुनू ममियौत भाय परसू कपर-फोड़ोवैल कऽ नेने रहथिन, ओहीक जिज्ञासामे गेल छला।

दुनू ममियौतक बीच डेढ़ कट्ठा घराड़ी छइ। बीच गाममे घर छैन। गामो गदाल अछि, तँए एक्को घूर घराड़ी कीनब असाध छैन। के अपन घर तोड़ि देतैन। ओना, बाधमे पाँच बीघा खेत छैन मुदा धराड़ीक सुखे तँ असकरे बाधमे नै बसता। नानाक परिवार समटल रहने अइल-फइलसँ रहै छला। मालोक थैर आ नारक टालो बना लइ

छला। इनारो अँगनाक कोणेमे रहैन। मुदा अपना परोछ होइते मनुक्खक बाढ़ि घरमे आबि गेलैन। दुनू भाँइ भिनौज कऽ लेलैन। करनाइयो नीक बुझि पड़लैन। करमी लत्ती जकाँ जेठका भायकेँ परिवार चतैड़ गेलैन। भगवानो दहिन भऽ सातटा बेटा आ छहटा बेटी देलखिन। पढ़बैक तँ कोनो समस्ये नहि, जे बिआहो-दान पछुआएले रहैन। मुदा तैयो घरक अभाव बुझि पड़ए लगलैन। अपने टी.बी.क रोगी। धिया-पुता जनमबैत घरोवाली तेहने छइ। मुदा जहिना क्रोध, तहिना जेठ हेबाक रूआब मनमे दुनू गोरेकेँ रहबे करैन।

छोट भाएकेँ दूटा बेटेटा। तँए, कोनो तरहक अभाव नै बुझि पड़ैन। एक पीठिया पाँचो भाँइ लाठी उठौलक। समांगक पातर छोट भाए, कपार फोड़ा लेलैन। मुदा घरवाली बदला लाइए लेलखिन। पहिने भाइक चानिपर खापैड़ फोड़ि दियादनीपर कनखा पटकैत कहलखिन-

“भरि दिन आहि-आलम करैत रहती आ रातिकेँ केहेन सुरखुरू भऽ जाइ छैथ..!”

छोट दियादनीक गारि सुनि तँ उनटबए चाहलैन, मुदा ताबे टोलक लोक सभ आबि झगड़ा छोड़ा देलखिन। ओही झगड़ाकेँ निपटबैले सुन्दर काका गेल छला। मात्रिकेमे पता लगलैन जे रघुनन्दन भाय देश छोड़ि देलैन। पता चलिते मामकेँ पनरह दिनक समए दऽ आबि गेला। गाम अबिते अँगा, चप्पल निकालि धोतीक खूट देहपर लऽ विदा भेला। अँगनासँ निकैलते पता लगलैन जे लहास अँगनेमे अछि, तँए गाछी दिसक रस्ता छोड़ि घरे दिसक पकड़लैन। डेढ़ियापर पहुँचते करिया काका सोझहामे पड़ि गेलखिन। देखिते पुछलकैन- “काज सुढ़ियाएल छह आकि पछुआएल?”

नजैर घुमबैत करिया काका बजला- “एमहुरका काज तँ डोरियाएले अछि मुदा..?”

“बड़बढ़ियाँ?”

कहि सुन्दर काका आगू बढ़ि रघुरन्दन लग पहुँच, गोड़ लागि ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर कहलखिन-

“जिनगी भरि संगे रहलौं, तँए जँ किछु ऊँच-नीच भऽ गेल हुअए तँ बिसैर जाएब।”

कहि सुभद्रा दिस देखि मुस्कियाइत टोकलखिन- “भौजी।”

सुन्दर कक्काक बोली सुनि सुभद्रा आँखि मिलबैत बजली-

“बच्चा।”

सुभद्राक-मुहेँ ‘बच्चा’ सुनि सुन्दर काका चोट्टे अँगनासँ निकैल देवनन्दन लग आबि बजला-

“बाउ देव, दुनू भाँइमे तीने मासक जेठाइ-छोटाइ अछि। बच्चेसँ दुनू भाँइ संगे बितेलौं। सभ ओरियान तँ देखि रहल छी मुदा भजनियाँ सभ कहाँ अछि। मृत्यु सोगे ने खुशी सेहो होइत अछि। खुशी तँ तखन होइत जखन खुशीक काज होएत। भाय-साहैब अपनो रामायण, महाभारत गबै छला। संगे भजनियों-कीर्तनियाँक सेहो सुनै छला। आइ जखन दुनियाँ छोड़ि रहला हेन तखन पाँचटा भजनो किए ने संग कऽ दिऐन।”

सुन्दर कक्काक विचार सुनि देवनन्दन अवाक् भऽ गेला। मने-मन विचारि बजला-

“काका, सभ बात तँ समाजक बुझै नै छी, तहन तँ करिया काका जेना-जेना करै छैथ से देखै छी।”

देवनन्दनक बात सुनि सुन्दर कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक किसुन लालकेँ नजैरमे नइ एलइ। मन लहरए लगलैन। जोरसँ तँ नहि, मुदा आस्तेसँ बजला- “सुआइत लोक ओकरा कन्हा कहै छइ। जेम्हरे देखत ओम्हरे बरिसत।”

टाटक अढ़सँ किसुन लालो सुन्दर कक्काक बात सुनलैन। मुदा किछु टोक-टाक नै केलखिन।

भजनियाकेँ बजबैले सुन्दर काका विदा होइत जोरसँ बजला-

"किसुन, भजनियाँ ऐठाम जाइ छी, ताबे ऐठामक ओरियान करह।"

किछु दूर आगू बढ़लापर मोन पड़लैन आकि की, घुमि गेला।

सुन्दर भायकेँ घुमैत देखि किसुन लालकेँ भेलैन जे भरिसक किछु गंजन बाँकी रहि गेल, सएह करैले घुमला।

किसुन लाल अपन डोलैत छातीकेँ असथिर केलैन। मुदा भऽ गेल उन्टा। जहिना किसुनलाक मन गंजन सुनैले मन्हुआएल तहिना सुन्दरो भाइक किसुन लालसँ पुछैले मन्हुआएल।

लगमे आबि पुछलखिन-

"किसुन, समरथाइमे तँ साज-बाजबला भजन-कीर्तन सुनै छेलौं मुदा आब तँ मने-मन गबै छी। अखन के सभ गबैया अछि?"

अपन पुछब सुनि किसुन लाल उत्तेजित भऽ बजला-

"आब की कोनो कमी छइ। एते दिन ढोल-पीपहीपर जीबछ भाय गबै छला। तहिना गुणापर छीतन आ रंगलाल सिङा बजबै छला। तीनूकेँ भाय-साहैबसँ अपेछा छेलैन। तीनू जीबते अछि, तँए तीनू गोरेकेँ कहि देब आवश्यक अछि।"

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रहैथ आकि बाँस-टेंगारी रखि लेलहा आबि बाजल-

"काका, एक बेरक खिस्सा कहै छी। भैयाक बिआह रहैन। बाउ हमरा लोकनियाँ जाइले कहलक। अपन मन बरियाती जाइक नइ रहए। किएक तँ रजकुमराक बिआह रहइ। बच्चे रही। बिनु कहने

बरियातीक पछोर लगि गेलौं। अखुनका जकाँ गाड़ी-सवारी थोड़े रहै जे उतारि दइत। घरवारी ऐठाम पहुँचलापर हमरो गिनती भऽ गेल। भूजल बदाम आ चूरा जलखै देलक। लुंगियाँ मिरचाइ तेहेन कड़ू रहै जे ओइ लाटमे खूब खेलौं। रातियोमे खूब खेलौं। गद-पर-गद भऽ गेल। अफैर गेलौं। मन हुअए जे खूब फलिगर बिछान होइत तँ ओंघरा-ओंघरा सुतितौं। दलान छोट रहइ।

..चेतन सभकेँ तँ दलानपर अँटाबेश भऽ गेलै मुदा बच्चा सभकेँ जगहे नै भेलइ। पछाइत घरवारी मालक घरसँ मालकेँ निकालि बहरामे बान्हि देलक आ ओइमे पुआर पसारि बिछान कऽ देलक। ओछाइन देखि मन खुशी भेल। एक कातमे पहिनहि जा कऽ जगह पकैड़ लेलौं।

..कत्तू रातिमे घरवारी छौंड़ा सभ आबि टीकमे चिड़चिड़ी आ देहमे कबछुआ पत्ता रगैड़ देलक। लगबै काल नै बुझलिऐ मुदा जखन चुलचुलाए लगल आकि नीन टुटल। बोरामे कसल धान जकाँ पेट रहए। कुरियबैबला हाथ दुइयेटा रहए, आ कुरियाए सगरे देह। उठि कऽ ठाढ़ भऽ निच्चासँ ऊपर कुरियाबए लगलौं आकि माथपर हाथ पड़ल। दुनू हाथ देलिऐ आकि सौंसे माथ मानी-चानी सुपारी जकाँ बुझि पड़ल। टोबैत-टोबैत ओंगरी टीकपर गेल आकि मौगीक खोपा जकाँ बुझि पड़ल। एक भागसँ चिड़चिड़ी टीकमे छोड़बी तँ दोसर दिस पकैड़ लिअए। एमहर सौंसे देहो चुलचुलाइतो रहए। तैपर सँ हुअए जे पेट फाटि जाएत! महाग मोसकिलमे पड़ि गेलौं। तामस उठि गेल। दुनू कान पकैड़ सप्पत खेलौं जे आइ दिनसँ बरियाती नइ जाएब। मुदा फेर मनमे आएल जे अगर हम नै केकरो बरियाती जेबै तँ हमरा के जाएत? जँ बरियाती नइ जाएत तँ बिआह केना हएत? कोनो कि केकरो फुसला कऽ मन्दिरमे जा करब आ पछाइत पनचैतीमे लाठी खाएब। बिनु बरियातीए बिआह केहेन हएत?

बिआहक गवाह के हएत? कहियो कोनो झगड़ा हएत तँ पनचैती के करत...।

..एक तँ सगरे देह नोचैत रहए तैपर सँ बिआह मोन पड़ि गेल। बिआह मोन पड़िते मनमे उपकल जे जाबे दुख नै काटब ताबे बोहुक सुख केना हएत?”

मुस्की दैत करिया काका बिच्चेमे टोकलखिन- “तोहूँ सभ दिनक ढहलेले-बकलेल रहि गेलँह। भैयाकेँ की कहै छहुन से ने कहबुहुन?”

करिया कक्काक बात सुनि लेलहाक मन नोचनीसँ हटि भाइक बिआहपर पहुँचल, बाजल-

“जखन बाउ कहलक जे लोकनियाँ जइहेँ, तखनेसँ आँगी-पेन्ट साफ करैक मन भेल। गामपर तँ फटलौ-पुरान आ मैलो-कुचैल पीहिन लइ छी। बरियातीमे तँ छौड़ी सभ पीहकारीए मारत। उसराहा परतीपर सँ उस आनि, माएकेँ कहलिऐ खूब नीक जकाँ उसैन दइले। जखन उसैन देलक आ सरेलै तँ पोखैरक घाटपर जा कऽ खूब उज्जर करि कऽ खीचिलौं। दू ठीमन अँगा फाटल रहए। माएकेँ सी दइले कहलिऐ। काकीसँ सुइया आनि पुरना साड़ीक पाढ़िसँ डोरा निकालि सी देलक।”

काजक धुमसाही देखि बिच्चेमे करिया काका कहलखिन-

“अखन केतेक काज पछुआएल छह सेहो बुझै छहक। जे कहैक छह से झब-दे कहुन?”

लेलहा बजए लगल-

“हँ तँ काका, बिआहसँ दू दिन पहिने रघुनी काका आबि बाउकेँ कहलखिन जे जेहने बेटा-बेटी धनिकक तेहने तँ गरीबोक। माए-बाप तँ माइए-बाप होइत। सबहक हृदए तँ भगवान एक्के रंग

बनौने छथिन। बेटा-बेटीक बिआहमे तँ सभकेँ एक्के रंग मनोरथ होइ छइ। गामेमे सिंगरिया बाजा अछि। एकटा सोहनगर बजो भऽ जेतह आ ओहो वेचारा समाजक संग खेबो करत आ हँसि-बाजि कऽ बिताइयो लेत।

..कक्काक बात सुनि बाबू कहलकैन, सिङाबला तँ रुपैओ लेत, से केतएसँ देबइ?

..तैपर रघुनन्दन काका कहलखिन, हमरा संगे चलह। कहि देबै जे समाजक काज छिऐ तँए नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ काज सम्हारि दहक। रुपैआ नै ने हेतह मुदा खाइले तँ देतह।

..सएह भेलइ। दुआर लगैसँ पहिनहि रस्तेमे हमरा कहि देलक जे बौआ, नाच देखा देबौ। तूँ हमरे लग रहिहेँ।

..जखन बर दुआर लगल आकि सौंसे गामक बुढ़िया-सुढ़िया सभ चँगेरामे चरि-मुहाँ दियारी बाड़ने भैया लग गीत गबैत एली। जेते ढेरबा आ समरथकी सभ रहै ओ पाछूमे हाँ-हाँ, हीं-हीं करैत रहइ। चुपेचाप रंगलाल काका बीचमे सन्हिया गेलखिन। हमहूँ पाछू-पाछू गेलौं। अन्हार रहबे करै, एक्के-बेर खूब जोरसँ सिङा फूँकि देलखिन। तेते जोरसँ आवाज भेलै जे सभटा पड़ाएल। एक्के बेर जे पड़ाएल आकि एँड़ी-दौड़ी लगलै। एकटा खसल आकि ओइपर भेड़ी जकाँ खसए लगल। जहिना अन्नक ढेरी लगबै काल पथिया-पथिये ऊपरसँ देल जाइ छै, तहिना भऽ गेल। हमहूँ बीचमे पड़ि गेलौं..!

..काका की कहब, दसटा सँ बेसीए ढेरबासँ अधबेसू धरि तरोमे रहै आ ऊपरोमे! तेते भारी लगै जे कनैए लगलौं।"

मुस्की दैत करिया काका-

"धुर्र बुड़ी, एहने पुरुख।"

"ताबे तँ बच्चे रही किने...;

मुस्की दैत- “से कि कोनो हमहींटा कनैत रही आकि तरमे पड़ल सभ कनैत रहए।”

“आ ऊपरका?”

“ओ सभ तँ खिखिर जकाँ हँसैत रहए। तँए काका, ओहो वेचारा आब चौथापनेमे अछि। आब तँ नवका-नवका बम्बैया बजन्त्री सभ भऽ गेल। ओकरो कहि दैतिऐ!”

सुन्दर काका मुड़ी डोलबैत बजला-

“अच्छा, तूँ सभ एमहुरका काज सम्हार हम ओमहर जाइ छी।”

सुन्दर काका विदा भेला आकि करियो काकाकेँ मोन पड़लैन। बजला- “भाय, कनी सुनि लिअ। एक गोरे छुटि जाएत!”

“के?”

“छीतन भाय। एक दिनक बात मोन पड़ल। अगहन मास रहइ। झुरझाड़ धन कटनी चलैत रहइ। एक्के ठीन हमहूँ रही आ भैयो रहैथ। हुनका जन रहैन, हम अपने कटैत रही। करीब बारह-एक बजे छिऐ। दुनू परानी छीतन भाय सुगर हहकारने खसलाहा खेतमे चरैले छोड़ि गुना नेने भाय-साहैब लग पहुँचलैन। काटल धान जे पसरल रहै, ओइपर दुनू परानी बैस गुना टुनटुनबए लगल। भैया कहलैन- बटु, तमाकुल खा लएह। एलौं। खूब बढ़ियाँ जकाँ तमाकुल चुनेलौं। दुनू भाँइयोँ खेलौं आ छीतनोकेँ देलिऐ। छीतन घरवालीकेँ रघु भैया दिस देखबैत कहलकै, जे भाय-साहैबक धानमे अपनो सबहक साझी अछि किने। पाँचटा गीत सुना दियौन।

..दुनू परानी गुनापर गीत गाबए लगल। से की कहूँ भाय, हुअए जे दुनू गोरेकेँ हाथसँ उठा माथपर लऽ ली। ओहन सिनेहसँ कहियो नै सुनने छेलौं, जेहेन सुनलौं। राजा भरथरी आ पिंगलाक

गीत गौने रहए। वेचारा जीबते अछि। ओहू वेचाराकेँ कहि देबइ।"

"बड़बढ़ियाँ" कहि सुन्दर काका आगू बढ़ला। जीबछक घर पहिने पड़ैत रहइ। जीबछक ऐठाम पहुँच जीबछकेँ कहलखिन-

"भाय, रघूभैया दुनियाँ छोड़ि देलैन। अपन बाजाक संग चलह।"

सुन्दर कक्काक बात सुनि घरवालीकेँ सोर पाड़ि जीबछ कहलक-

"गिरहत बौआ मरि गेलखिन। छौड़ा सभकेँ सोर पाड़ियौ। सभ बापूत जाएब।"

बेटा-भातिजकेँ बजबए मुनियाँ विदा भेल। सुन्दर काकाकेँ जीबछ कहए लगलैन-

"भाय, एक दिनक गप कहै छी। माध मास रहइ। शीतलहरी चलैत रहइ। जहिना दिन तहिना राति। दिनोमे नै खेने रही। जाड़े बुझि पड़ए जे मरि जाएब। घूर-ले जरनो सधि गेल। की डाहब से रहबे ने करए। बिछानमे पुआर देने रहिऐ, बस ओतबे रहए। मन हुअए जे ओकरे जरा ली, फेर हुअए जे जखन आगि मिझा जाएत तखन सुतब केतए। भुखे मन सेहो छटपटाइत रहए। दुनू परानी गिरहत बौआ ऐठीन गेलौं। रघुनन्दन बौआ करसीक बड़का घूर मालक घरमे लगौने रहैथ। अपनो बैसल रहैथ। हिनका लग पहुँचैक डेगे ने उठए। जी-जाँति कऽ खरिहाँनेसँ सोर पाड़लयैन। घूरे लगसँ कहलैन, एम्हरे आबह।

..गेलौं। खेबो केलौं आ माले घरमे घूरे लग बिछान बिछा सुतबो केलौं। जँ कनियोँ कानमे भनक लगल रहैत तँ अपने आबि जैतौं, मुदा अखन तक नै सुनने छेलौं। चलू-चलू पीठेपर अबै छी।"

ढोल-पीपही लऽ जीबछ, गुना लऽ छीतन आ सिङा लऽ

रंगलाल पहुँच, अपन-अपन बाजा बजबए लगल। जहिना बेटीक बिआहमे सोहनगर गीत गौल जाइत, तहिना बाजाक मुहसँ निकलए लगल। घरे-अँगना नै गामक वातावरण महमह करए लगल। बाजाक धुनपर कियो घुनघुनाइत, कियो नचैत, धिया-पुता उछलैत-कुदैत आ बुढ़-बुढ़ानुस सभ मने-मन रघुनन्दनकेँ स्मरण करैत टुटैट सम्बन्धपर विह्वल होइत।

धड़फड़ाएल फोंच भाय आबि देवनन्दनकेँ कहलखिन-

“डॉक्टर साहैब, सभ किछु तँ ओरियान देखै छी मुदा सरर आ घी कहाँ अछि?”

फोंच भाइक बात सुनि देवनन्दन बजला- “करिया काका आ सुन्दर काका सभ ओरियान कऽ रहल छैथ। हुनके ऊपर सभ भार छैन। बजा कऽ पुछि लियौन।”

एकाएकी करिया काका, सुन्दर काका, लेलहा, बचनू देवनन्दन लग एला। करिया काकाकेँ अबिते फोंच भाय पुछलखिन-

“कारी भाय, सभ काज तँ समटाएले बुझि पड़ैए मुदा घी आ सरर, नै देखै छी?”

फोंच भाय पाही जमीन्दारक मुँहलगुआ। ओना, ने आब जमीन्दारी अछि आ ने जमीन्दार। मुदा एक साए पाँच बर्खक ढीलाबाबू जीबते छैथ। खेत-पथार तँ कमि गेलैन मुदा दरबारी चालि छैन्हे। अखनो भाँग पीसै, पान लगबै, मालिश करै, संगे टहलै आ भानस करैले नोकर रखने छैथ। वएह संगे टहलैबला फोंच भाय।

फोंच भाइक गप सुनि करिया कक्काक मन नाचए लगलैन। सुन्दर काका मने-मन खुशी रहैथ जे भने हमरा नै पुछलैन।

करिया काका मनमे आबए लगलैन जे आँखिक सोझमे देखै छी जे कियो लहासकेँ धारमे फेकैत अछि, तँ कियो धारक कातमे

गाड़ैत अछि। कियो आमक लकड़ीसँ जरबैत अछि, तँ कियो बगुरसँ। कियो संठी-गोइठासँ जरबैत अछि, तँ कियो मुँहमे आगि छुबा गाड़ैत अछि। तैठाम सरर आ घीक कोन खगता अछि?

फोंच भाइक बात सुनि बचनू बाजल- “फोंच काका, अपन कएल काज कहै छी। नानी मरि गेल। ओना, मरैसँ तीन दिन पहिनहिसँ दुनू माय-पुत ओतै रही। आँखिक देखल नानाक गाछी अछि। जइ साल अपन गाछी नै फड़ै छेलए। तइ साल चलि जाइ छेलौं। खूब मारि-धुसि कऽ डेढ़ मास खाइ छेलौं।

तेसर साल जे कोसी नाश केलक ओइमे मामाकेँ के कहए जे इलाकाक गाछी-कलम, बँसबारि उपैट गेल। अँगनाक सभ नानीकेँ मुइने कनैत रहए, आ मामा जरबैक लकड़ीले कनैत रहैथ। कानब दू रंग बुझि पड़ल। जहिना एक धुनक गीत भिन्न-भिन्न गबैयाक-मुहेँ एक्के स्वरमे गौल जाइत, तहिना तँ मरैयोक अछि। मामाक कानब सुनि लगमे जा पुछलयैन तँ कहलैन जे भागिन माए मरि गेल तेकर दुख नै अछि। दुख तँ तखन ने होइत अछि जखन माए-बापक अछैत बेटा-बेटी मरैत। मुदा अपन जे पुबरिया गाछी छेलए ओ माइए-बाबूक रोपल छेलैन। बाल-बच्चा जकाँ दुनू गोरे सेवा करि लगौने रहैथ। उत्तरवारि भागसँ एक-पाँति सरही आम लगौने रहैथ, बाँकी सौंसे कलम कलमी रहए। मुदा सरही तँ सरहीए रहए। एकदम बड़बरिया। कनीए-कनीए-टा आम होइ। तहूमे गोटे-गोटे मीठ होइ नइ तँ सभ खट्टे। मुदा कलमी सभटा चुनल रहैन। अगते रोहैणसँ गुलाब खास आ डोमाबम्बै पकऽ लगए। जाबे सठबो ने करै ताबे कृष्णभोग, लड्डूबा पाकब शुरू भऽ जाइ। पीठेपर मालदह पाकए लगइ। मालदह सठबो ने करै आकि कलकतिया पाकए लगइ। कलकतिया सठिते फैजली, मोहर, ठाकुर आ राइर पाकए लगइ। ऐ हिसाबकेँ देखि पुछलयैन तँ कहलैन, ‘बौआ सभ रंगक आमक

खगता होइ छइ। जखन जारैनक खगता हेतह तँ कलमीक डारि कटैमे मासचर्ज लगतह। मुदा सरहीमे से नइ हेतह। हँ सरहियोमे तखन हेतह जखन कलमीए सन नम्हरो आ सुअदगरो रहतह। जारैनक जरूरत चूल्हिओ आ मुरदो डाहैमे हेतह। मात्र जरबैयेक काजटा तँ नै अछि। मुइला पछाइत गाछोक उत्सर्ग होइत अछि। तइले तँ बड़बरीए नीक अछि।

काटि कऽ जरबैक बात तँ जँचल मुदा उत्सर्ग नै जँचल। हुनकर लगौल छेलैन। अपना विचारसँ लगौलैन। कोसीक बिकराल बाढ़िसँ पहिनहि नाना मरल रहैथ, तँए हुनका सुकाठसँ माने सरही आमक लकड़ीसँ जरौल गेलैन। एक-एकटा गाछ पुरहितो-पात्रकेँ देल गेल। हुनका तँ सोल्होअना गाछी रोपैक फल भेट गेलैन। मुदा माएकेँ केना जराएब आ की दान देबइ।

मामाक बात सुनि दुखो भेल आ तामसो उठल। जखन छल तखन भोगलौं। अखन नइए तँ कानब किए?

कहलयैन- मामा जँ कनलासँ दुख भगैत आ सुख भेटैत तँ अहिना ई दुनियाँ रहैत? अनेरे अँगनामे रखने छी आ कनै छी। चलू, हमरा सभ लूरि अछि। खाधि खुनि गोरहोसँ जरबैक लूरि अछि आ सनठियो-मनेजरसँ, सुकाठोसँ जरबैक लूरि अछि आ कुकाठोसँ आ अगबे बाँसो-कड़चीसँ।”

बचनूक बात सुनि सभ ठमकला, मुदा फोंच भायकेँ तामस चढ़ि गेलैन। दाँत पीसैत बजला-

“सौनमे जनमल गीदर, भादवमे आएल बाढ़िकेँ देखिते कहलक जे एहेन बाढ़ि देखबे ने केलौं! देखैत-देखैत दाँत-पोन झड़ि गेल हमर आ सिखबै छेँ तूँ।”

करिया काका सुन्दर काका दिस तकलैन। सुन्दर काका

पहिनेसँ करिया काका दिस देखैत रहैथ। दुनू गोरेकेँ फोंच भाय दिससँ नजैर हटल देखि लेलहा फोंच भायकेँ चोहटैत बाजल-

“फोंच भैया, अहाँकेँ ओतबे काल धरि भैया कहब, जेते काल अहूँ भाए बुझब। अहाँक देहमे हजार रुपैआक कपड़ा, हजार रुपैआक घड़ी आ दस हजारक मोबाइल अछि, मुदा हमरो दिस देखू। रघूकाका आ देवभायसँ हमरो ओते अपेछा अछि जेते अहाँकेँ अछि। अहाँ कहने हम पड़ा जाएब से बात नहि। अन्तिम संस्कार कइये कऽ जाएब। काज ने अहाँ परिवारक छी आ ने हमरा परिवारक। काज करए ऐठाम एलौं हेन, घरवारी जेना आदेश देता तेना कऽ देबैन। अहाँकेँ फुचफुचेने की हएत?”

लेलहाक बात सुनि फोंच भाय सहमला। भाषा बदलैत बजला- “एँह, खिशिया गेलह लेलहू। दस गोरे जखने एकठाम बैसलौं तखने दस रंगक गप चलत। तइले एते बिगड़ैक कोन काज अछि। एहेन-एहेन छोट-छीन गप-ले समाज टुटि जाइ छइ। जहिना सभ एकठाम रहैत एलौं हेन, तहिना आगूओ रहब किने।”

वातावरण ठंढाइत देखि सुन्दर काका दरबज्जासँ उठि जीबछ लग पहुँच बजला-

“बटगवनीक समए आएल जाइए। धियान रखब।”

कहि दरबज्जापर आबि करिया काकाकेँ कहलखिन-

“किसुन, अखन बैसैक समए नै अछि। बैसलासँ काज पछुआएत।”

“हँ-हँ, से तँ ठीके”

कहैत करिया काका उठि गेला। करिया काकाकेँ उठिते एका-एकी केतेको गोरे उठि गेला। मने-मन फोंच भाय जरल जाइ छला। ठोर पटपटबैत बजला- “जेकरा जे मन फुरै छै से करैए। ने बजैक

ठेकान आ ने बाप-दादाक कएल काजक।”

दरबज्जापर सँ उठि फोंच भाय आँगन दिस टहैल गेला। मनमे अन्हर उठल रहैन। भेल काज सभपर नजैर गड़ा-गड़ा देखए लगला जे केतए कथी गलती अछि। मुदा नजैर गलतीक जड़िपर जाइते ने रहैन। जँ से जइतैन तँ ईहो बात बुझितैथ जे ‘गलती ओहन बेवस्था पैदा करैत अछि जे चलैनमे रहैए नै कि आगूक बेवस्थामे।’

दरबज्जाक डेढ़ियापर चंचल चचरी बनबैत रहए आ बौकू साबेक जौर बँटै छल।

आँखि गुड़ैर फोंच भाय चचरीक लम्बाई-चौड़ाइ देखए लगला। फट्ठा बैसबैत चंचल मुस्कियाइत कहलकैन-

“नजैर नै लगा देबै, भैया?”

चंचलक मुस्की फोंच भाइक छातीमे महुराएल तीर जकाँ लगलैन। किछु बोकरए चाहलैथ आकि तखने उत्तरवारि टोलमे जोरसँ हल्ला होइत सुनलखिन। जेतए जे कियो रहैथ, कान ठाढ़ कऽ ओतइसँ सुनए लगला। हल्लाक कारण रहै अढ़ुलिया-अपराजितक झगड़ा।

रघुनन्दनक दियादक भगिनमान मनोहरक परिवार। तीन पुस्तसँ मनोहर ऐ गाममे। बब्बे आबि सासुरमे बसल रहैन। मुदा जे मनोहरो परिवारक छिऐ, ओहो दियादे जकाँ काज-उदममे संग-साथ दइत।

पैछला लौफा-हाटमे मनोहर बीस हजारमे गाए बेचलक आ ओइसँ नीक, बगलेक गाममे तीस हजारमे टोहिया गेलइ। पनरह दिनक समए बना रुपैआक ओरियान करए लगल। हिसाब जोड़ने जे बीस हजारमे गाए बिकाएल, बच्छोक पोसिन्दार कहलकै जे दुनू बच्छा बेच हमहूँ गाइये पोसब। बच्छा पोसब तँ ओइ पोसिन्दार-ले

अछि जे खेतियो करैत हुअए। जहिना सभ दिन, नवका कारमे बैसनिहारकेँ आनन्द होइत, तहिना नव बरद जोतनिहार हरबाहकेँ सेहो। ने गियर बदलैक काज आ ने स्पीड कम-बेसी करैक। रहबो किए करतै, अपन-अपन खेतक यात्राक बीचमे केतौ दुबट्टी-तीनबट्टी नै पड़ैत। जइ चालिमे जोतए चाहब, ओइ चालिमे हर लादि दियौ। एक्के बेर खोलै बेरमे लदहा छिटकबैक काज।

वेचारा पोसनिहारकेँ खेती नइ छइ। छोट पूजीकेँ पैघ बनबैक काज कऽ रहल अछि। मुदा ओही वेचाराकेँ की दोख देबै, जइतए तँ पैछले हाट मुदा बिमारीक चक्करमे तेना पड़ल अछि जे दुनू बच्छो हलि गेलइ। वेचाराक बड़ सुन्दर विचार छइ। अपन ढेनुआर गाए भऽ जेतइ।

समैयक फेर देखि मनोहर बीसो हजार रुपैआ देवालमे तख्ता देल आलमारीक ग्रन्थमे रखि देलक। खुल्ला रैक। रैकपर सिरिफ भागवत, देवी भागवत, सुखसागर, योगवशिष्ट, कबीर मन्सुर, बाइबिल, कुरान आ कृष्ण-उद्धव संवाद रहइ। कृष्ण-उद्धव संवादमे बीसो हजारीक नोट पन्नामे दऽ दऽ सैंत कऽ राखने।

काल्हि दिनमे सोहन आबि मनोहर माएकेँ कहि कृष्ण-उद्धव संवाद लऽ गेल। ग्रन्थ उनटा कऽ देखैक काजे नहि। अविश्वासक केतौ गन्धे नहि।

साँझमे जखन मनोहर लालटेन नेस ग्रन्थ निकालैले गेल तँ कृष्ण-उद्धव संवाद नै देखलक। मनमे शंका भेलइ। मुदा चोरिक शंका नै भेलइ। लगातार दुनू गोरेक बीच पोथीक लेन-देन होइत। माएकेँ पुछलक-

“माए, सोहन भाय किताबो लऽ गेल छैथ।”

“हँ।”

“ओइमे किछु छेलैहो?”

“खोलि कऽ कहाँ देखिलऐ।”

मनोहर गुम्म भऽ गेल। मनमे एलै, अखने जा कऽ बुझि ली। फेर दोसर मन कहलकै, पाइयक ममिलामे राति-बिराति नइ जाएब, नीक। आगूमे लालटेन रखि बैस गेल। मुदा मनकेँ अन्हार दाबए लगलै, सोग बढ़ए लगलै। माएकेँ कहलक-

“माए, मन नीक नै लगैए। नै खाएब।”

जोर करैसँ पहिने माइक मनमे एलै खेनाइ तँ नीक मनक छिऐ। अधला मनक तँ ओ...।

सोचि पुतोहु-अढ़ुलियाकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बौऔक मन दबे छै, हमरो खाइक मन नै होइए।”

पुतोहु झझकारि कऽ बजली-

“चूल्हि लगमे जखन अधपक्कू भऽ गेलौं, तखन हिनकर मन खराब भेलैन। होइतए हमरा तँ भऽ गेलैन हिनके? एक ताउ लगतै तरकारियो भइये गेल। रोटी पहिनहि पका नेने छेलौं। खइहैथ भोरे, तखन मन नीक हेतैन।”

मुदा फेर वेचारीक मनमे पत्नी आ पुतोहुक रूप आबि बैस गेल। जिनका-ले भानस केलौं से जखन खेबे ने करता तँ हमहीं...। ओहिना झाँपि कऽ सभ किछु रखि देबइ।

सबेरे जखने मनोहर सुनलैन जे रघुनी भैया मरि गेला। तखने आबि दरबज्जापर मुड़ी झुका कातमे बैस गेल। सभकेँ होइत जे गाममे सभसँ बेसी दुख मनोहरेकेँ भऽ रहल छइ। असीम दुख! सेर-समांग दुनूक। माइयो पाछूसँ गेलखिन।

खाली आँगन देखि अढ़ुलियाकेँ भुखे नइ रहल गेलैन। वेचारी

चारिटा रोटी आ घेराक भुजिया लऽ खाए लगली। तखने अपराजित आबि अढ़ुलियाकेँ डेढ़िए-पर सँ हाक देलकैन-

“कनियाँ, काकी गेलखिन?”

मुँहमे घेरा-रोटी चिबबैत अढ़ुलिया बजली।

मुँह भारी बुझि अपराजित ससैर कऽ आँगन आबि गेली, तँ देखलैन जे बीचे दोहैरपर केबाड़ लग बैस हाँइ-हाँइ खाइत अछि।

जहिना करिया भेम्ह कटलासँ एक्के बेर सनसना कऽ बिख चढ़ि जाइए, तहिना अपराजितकेँ चढ़ि गेलैन। मुदा निधोखसँ अढ़ुलिया चपा-चैप चपने जाइत। जेते अढ़ुलियाक मुँह चलै, तेते अपराजितकेँ तरसँ खौंत चढ़ल जाइत।

अढ़ुलिया बुझि गेली जे जँ कहीं सरेरा केलैन, तँ सीनेपर पकड़ा जाएब। से नइ तँ जाबे मुँह खोलैथ-खोलैथ ताबे थारी अखारि कऽ रखि लइ छी।

बरदाससँ बाहर होइते झपटैत अपराजित बजली-

“अँइ-गे निरविचारी, तोरा कोनो गत्तरमे लाज छौ कि नहि?”

अखन धरि अढ़ुलिया मुँह नै खोललैन। थारी माँजि, अँठि फेरि हाथ धोइ, लोटा रखि उत्तर देलकैन-

“हिनका बड़ लाज छैन। जे झूठ-मूठक बझा कऽ अबलट जोड़ै छैथ। हमरे नइ कोनो गत्तरमे लाज अछि। बुढ़ भऽ कऽ ई झूठ बजै छैथ से बड़बढ़ियाँ, हम बड़ निरलज्जी?”

“अइँ गे तोरा एतबो ने विचार छौ जे जाबे अँगनासँ लहास नै उठलै ताबे मुँहमे अन्न किए देलौं। पहिने अँगना-घर करितैँ तखन ने भानस-भात करितैँ?”

“हिनका दियादी छैन आकि हमरा। हम भगिनमान छी।

लोकक सहोदरो भाए अनतए रहने बिरान भऽ जाइ छै, आ दूरोक लोक लगमे रहने अप्पन भऽ जाइ छइ। हमरा कोन अँगना-घर करैक काज अछि?”

अढ़ुलियाक बात अपराजितकेँ बेसम्हार कऽ देलकैन। बजली-

“जेहने कुल-खुट रहतौ तेहने ने बुइधो हेतौ?”

कुल-खनदानक ऊपराग बुझि अढ़ुलियो बेसम्हार भऽ बाजल-

“यएह जँ बड़ नीक कुल-खनदानक छैथ तँ कहाँ भेलैन जे मनुक्ख जकाँ चुपचाप लगमे अबितैथ। खाइत देखितैथ तँ पुइछ लितैथ जे कनियाँ एना किए करै छी। रातिमे नै खेने रही से बुझैक काज हिनका नै भेलैन। मुदा छुच्छे उपदेश दइले चलि एलौं। अपन काज आँखि-मूनि कऽ करैत रहितैथ, हमरा टोकैक जरूरत किए भेलैन?”

मुदा अपराजितो अपने सीमामे रहैथ, तँए बोलीमे गरमी रहबे करैन। अदहो बात अढ़ुलियाक नै सुनलैन, अपने बजैमे बेताल रहैथ। मुदा मनमे शंका उठलैन जे हो-न-हो अखन एकरे अँगनामे छी, कोनो दोखे लगा दिअए। ..रसे-रसे पाछू-मुहेँ डेगो उठबैत आ दूरीक हिसाबसँ बोलियोमे जोर दैत विदा भेली। मुदा भऽ गेलै केनादन। एक्के-दुइए टोलक धियो-पुता सहैट-सहैट आबए लगल, तहिना जनिजातियोक ढबाहि लगि गेल। चिपड़ी पथैत महिनाथपुरवाली सेहो गोबराएले हाथे पहुँचली। तहिना फूल तोड़ए जाइत नवानीवाली फुलडाली नेनहि पहुँचली। सभसँ कमाल ननौरवाली केलैन। खाइले बेटा कनैत रहै, ओकरा आरो चारि थापर ऊपरसँ लगा फनैकत पहुँचली। तहिना लखनौरवाली खिसिया कऽ बेटाक आगूमे भात-दालिक बरतने रखि, अपनाकेँ पछुआइत बुझि लफड़ल पहुँचली। विचित्र भऽ गेलइ। सभ अपने-अपने फुरने अपन-अपन विरोधीकेँ

चिक्कारी दऽ दऽ गरियाबए लगल। कियो केकरो बात सुनैले तैयार नहि। मुदा बजैत-बजैत मुँह दुखेने आकि बुधि जगने आस्ते-आस्ते हल्ला कम हुअ लगलै। कम होइत-होइत हल्ला सोलहन्नी शान्त भऽ गेल। मुदा तरे-तर केना-ने-केना दू पाटी बनि शब्दवाणक तैयारी चलए लगल। ओना, खलीफा केम्हरो नहि।

अखन धरि पुवारिपारवाली दादी आ पछवारिपारवाली दादीकेँ सभ अपन-अपन अगुआ बुझैत। अगुआइ करैक बुइधो छैन। मुदा पुवारिपारवाली ऐ दुआरे नै पहुँचली जे चारिमे दिनसँ दुखित छैथ। आइ एकादशी केना छोड़ितैथ। बिछानसँ उठैक होश नहि।

तहिना पछवारिपारवाली अपना घरबलाकेँ डेढ़ बीघा जमीनक जिनगी बुझा दुनू परानी अपनो मालक गोबर आ बेरू-पहर एक बेर चारागाह जा एक छिट्टा आरो लऽ अनैत। सएह अनैले गेल रहए। जइसँ गामक किछु गोरे कुट्टी-चालि करैत। मुदा दादियो पाछू घुमि कऽ देखैवाली नहि। जखने कनियोँ भनक लगि जानि जे फल्लीं-चिल्लीं बाजल, तँ अँगना पहुँच उपराग दऽ अबैत। आब कहाँ कियो गोबरबिछनी कहै छइ।

आँगनसँ टहलैत आबि फोंच भाय चचरी लग पहुँच नजैर दौगा-दौगा नाप-जोख करए लगला। मुदा काज अधखड़ुए, तँए गरे ने अँटैन। काजक दुनियाँमे अपन अँटाबेश नै देखि वाद-विवादक दुनियाँमे पहुँच बतहूकेँ पुछलखिन-

“केतेटा चचरी बनत?”

डोरी फट्ठेपर रखि आगूमे ओंगरीक नहसँ चेन्ह दैत बतहू बाजल-

“ऐठीन तक।”

“झुझुआन बुझि पड़ै छौ।”

“से की?”

“साढ़े तीन हाथ तँ यएह भेल। तेकर वाद जँ एक्को बीत आगू-पाछू नइ रहत से केहेन हएत?”

फोंच भाइक बात सुनि बतहू गुम्म पड़ि गेल। कातमे ठाढ़ भेल लेलहा सभ बात सुनैत। मुदा ऐ आशामे अखन चुप रहए जे जिनकासँ गप करै छैथ, पहिने हुनकर जवाब ने सुनि लेब। जँ अपने सक्षम वाद-विवाद कऽ सकैथ तँ सर्वोत्तम। नइ तँ जखन ऐठाम छी तँ ओते दूर धरि केना बतहा भैयाकेँ पाछू हुअ देब। बतहूकेँ चुप देखि लेलहा बाजल-

“फोंच भैया, अहाँसे अधिक उमेरक बतहाभैया शरीर धुइन रहल छैथ, तैकालमे एतबो नै बुझलिऐ जे जिनका जइ काजक लूरि अछि ओ तइमे सहयोग करैथ। तैकालमे अपन कोनो कर्तव्य नै मुदा...।

..आइ धरि जिनगीमे केते चचरी बनेलौं आ केते मुरदा जरेलौं हेन? हँ! ई बात जरूर अछि जे गोटि-पंगरा जँ जरेनौं हएब तँ ओहन मुरदा, जिनका चचरीक जरूरते ने भेल हएत। पलंगपर उठा असमसान पहुँचै छैथ। चचरीक स्कूलमे पढ़लौं हम आ हिसाब बुझि गेलिऐ अहाँ?”

लेलहाक बात सुनि फोंच भाय तिलमिलाए लगला। क्रोधसँ आँखिमे नोर एलैन आकि डरसँ, ई बात लेलहा नै बुझि सकल। ऐगला गप सुनैले कान पाथि देलक। मुदा कोनो प्रश्न नै अबैत देख, फेर बाजल-

“पचासो ओहन मुरदा डाहने छी, गाड़ने छी जेकरा चारि गोरेक बदला दू गोरे पथियामे उठा सीक लगा बाँसक ढाठपर उठा अँगनासँ असमसान लऽ गेल छी। एहेन-एहेन केतेक की सभ केने

छी से कहैक अखन समए नइ अछि। नइ तँ...।”

आँगनसँ पटपटाइत दरबज्जापर आबि फोंच भाय देवनन्दनकेँ दुनू हाथ जोड़ि कहलखिन-

“कठियारीमे हमरो हाजिरी।”

“बेस-बेस। एतबे की कम छिऐ।”

दरबज्जापर सँ फोंच भाय विदा तँ भऽ गेला, मुदा मनमे अन्हर-बिहाड़ि जकाँ उठए लगलैन। आगू-मुहेँ डेगे ने उठनि। पाछू घुमि बेर-बेर तकैथ।

एमहर अरथी उठबैले आ कठियारी जाइले घोल-फचक्का हुअ लगल। जनिजाति आ धिया-पुताक झुण्ड बाजाक लोभे आगू आबि-आबि ठाढ़ भऽ गेल। किछु गोरेक कहब रहैन, ‘अपन पत्नियोँ धरि असमसान नइ जाएत।’ तँ किछु गोरेक कहब रहैन, ‘जिनका बेटा नइ रहै छैन हुनका तँ पत्नीए आगि दइ छथिन तँए केना मनाही कएल जाएत?

तहिना धिया-पुताक सम्बन्धमे सेहो प्रश्न उठैत जे ई तँ अन्तिम संस्कार-कर्म छी, जइमे खाधि खुनल जाएत, लकड़ी काटि जरौल जाएत। तइमे धिया-पुता अनेरे जा कऽ की करत?

मुदा संस्कारे ने संस्कार पैदा करैत अछि। अरथीक मुँहमे आगि लगाएबो ने संस्कार छी। जेकर जरूरत केकरा नइ छइ? आजुक धिए-पुते ने काल्हि जुआन बनि करत। तँए ओकरा काजसँ विमुख करब उचित नहि। मुदा काज जेतेटा अछि, जेते लोकसँ कएल जाएत, तेतबे लोक ने चाही। तहन एते लोकक काज कोन छइ? फेर बाजा-बुजीक कोन काज अछि? काज मात्र मुरदे जराएबटा छी, आकि बेटी जकाँ एकठाम-सँ-दोसरठाम पहुँचेनाइयो छी।

एमहर बाजा गनगनाइत! रंग-बिरंगक सोहर, रंग-बिरंगक दुआरि निकालि, वटगबनीक रिहलसल मने-मन चलैत।

जहिना तरे-तर करिया काकाकेँ तहिना सुन्दर काकाकेँ छातीक पसीना गोलगलाकेँ भिजबैत, दुनूक मन घोर-घोर रहैन। अपन मन हारि मानि गेलैन। सहयोगीक जरूरत पड़लैन, मुदा सहयोगी के?

करिया कक्काक नजैर सुन्दर भायपर आ सुन्दर कक्काक नजैर किसुनपर। अपन-अपन जगहसँ उठि आँखिक इशारा चौमासक आड़िपर देलैन।

आगू-पाछू दुनू गोरे चौमासक आड़ि दिस, चारि डेग बढ़ौलैन आकि पाछूसँ लेलहा टोकलकैन-

“काका केतए ससरल जाइ छिऐ, काज अछि ऐठाम आ अहाँ विदा भेलौं बाध दिस?”

लेलहाक बात दुनू गोरेक करेजकेँ जेना छेद देलकैन। छटपटाइत मन कहलकैन- “तेहेन उफाँटि टोकि देलक जे की विचार हएत।”

मुदा दरबारमे जहिना भिखमंगाक बिजकल मन रहैत, तहिना दुनू गोरेक रहैन। कठहँसी हँसि-हँसि दुनू गोरे संगे बजला-

“जमात करे करामात! बौआ, तोहूँ इम्हरे आबह?”

तीनू गोरे चौमासक आड़िपर बैस काजक समीक्षा करए लगला। मुदा मुरदा जराएब आ कठियारी जाएब, दू प्रश्न भेल। किछु गोरेकेँ लकड़ी कटैसँ खाधि धरि खुनए पड़त। किछु गोरे ओहिना मुड़ी गोंति कऽ सोग मनौता। सवा पहर मुरदा जरैमे लगै छै, तैपर सँ जारैन काटै-फाड़ैसँ लऽ कऽ अछिया सजाएब धरि अछि। घरोपर केते खटनी भेल अछि। ओहूना दू घन्टा खटला पछाइत किछु खाइ-

पीबैक मन होइ छइ।

बिच्चेमे लेलहा टपकल- “ओइ जगहपर खाइक मन हएत?”

सुन्दर लाल कहलखिन-

“धुर्र बुड़ी, सभ दिन आड़िए-धूर आ गाछीए-बिरछीमे खाइ छेँ से बिसैर गेलही?”

मुँह सकुचबैत लेलहाक मन लेलहाकेँ कहलक-

“अनेरे बजलौं।”

तीनू गोरे विचारलैन जे पहिने घरवारीकेँ–जे जरबए नै जेती, जना दियौन जे कमसँ-कम दू बेर चाह आ लोकक हिसाबसँ सुखल जलखै-पानि पठा दैथ। अपने सभ ने बारीक रहब, जेकरा जेते मेहनत हेतै ओकरा ओते अहगरसँ देबइ। मुदा नै लऽ गेने तँ एकटा आफद हएत, जाबे धिया-पुताक पेट भरल रहतै तबे तक ने नाचत। जखने पेट कुलकुलेतइ आकि घर दिस विदा हएत। बिना हाथ-पएर धोनइ भनसा घर पहुँच जाएत। तँए ओकरो तँ घेर कऽ रखि नँचबैक अछि। हँ, किछु गोरे एहेन जरूर छैथ जे मुँहमे किछु नै लेता। लेबो केना करता। एक जिनगीक ओहन सिमान छी जे सोझहाक प्रश्न अछि, तँए हटल आकि बाइस-तेबाइसकेँ आनबो उचित नहि।

सुन्दर कक्काक मनमे उठलैन, ‘सिमानक विवाद तँ दू खेत, दू गाम आ दू दुनियाँ भऽ जाइत अछि। कियो मृत्युकेँ खुशीसँ छाती लगबै छैथ, तँ कियो कानै-कलपै छैथ। शुभ काज तँ खाइत-पीऐत हएब नीक।’

मुहसँ हँसी निकललैन। तैबीच लेलहाक नजैर सुन्दर कक्काक मुँहपर पड़ल। मुस्की देखि अपनेपर शंका भेलै जे फेर ने तँ किछु हूसल। मुदा अहं जगलै, बाजल- “काका, जेते अबेर करब ओते अबेर हएत। अबेर भेने केतेको गोरे बिमार पड़त।”

तीनू गोरे वाड़ीसँ दरबज्जापर आबि एक्के बेर बजला-

“राम-नाम सत्य छी।”

आहि रे बा! फेर चचरी लग हुज्जैत शुरू भेल। कियो बजैत जे जीबैतमे कक्काक उपकारक बदला नइ दऽ सकलयैन, तँए हम उठाएब? किछु गोरेक कहब रहै, काका की बाबा आकि भैया हमरो माए-बाबूकेँ उठौने रहैथ, तँए उठाएब। किछु गोरेक कहब जे बड़ बेरपर रुपैआ सम्हारने छला, तँए अपन कर्ज चुकाएब?

आड़िपर गप सुनि लेलहोमे जेना पावर आएल। हुज्जैतयाकेँ दुनू हाथे इशारा दैत बाजल-

“सुनै जाइ जाउ, कान्ही लगा कऽ उठबयौन नइ तँ एकभग्गु भेने दरद हेतैन।”

लेलहाक विचार सभ मानि, चारि गोरे चचरी उठबए बाबा लग पहुँचल। चचरी लग पहुँचते जेना एक्के बेर सबहक मुँह चहा उठल- ‘रघुनन्दन नइ रघुनन्दनक अरथी उठि रहल छैन!’

सुभद्राक आँखि, कोसीक ओइ धारा सदृश बहए लगलैन जे पहाड़क झरना होइत समतल जमीनपर आबि अनवरत चलैत रहैए...।

आँगनसँ निकैलते एक दिस “राम-नाम सत्य छी? तँ दोसर दिस शहनाइपर बहिनक विदाइक धुन..! यएह तँ सुख-दुख दुनू जगहक दुनियाँ छी।

घरक मुहथैरपर एक दिस करिया काका आ दोसर दिस सुन्दर काका ठाढ भऽ अन्तिम प्रणाम कऽ आगू बढ़ौलैन। तइ पाछू देवनन्दक हाथमे आगि दऽ विदा केलैन। तइ पाछू बरियाती सजि गेल। सभ बरियातीकेँ निकलला पछाइत सुभद्रा आ शीला रूकि गेली।

समए पाबि करिया काका शीलाकेँ चाह-जलखै-पानिक बात कहि, रेलगाड़ीक गार्ड जकाँ पाछू-पाछू चलला। गाछीक कोणपर पहुँचते करिया काका आ सुन्दर कक्काक खोज हुअ लगल। मुड़ी-उठा देवनन्दनो तकलैथ। मुदा दुनू गोरेकेँ अदहे रस्तामे अबैत देखलैन।

गाछी पहुँचते करिया काका आगू बढ़ि ओंगरीसँ इशारा दैत बजला- “ऐठाम भैया मचान-खोपड़ी बनबैत रहैथ।”

दोसर दिस माने उत्तर-पूरब कोणमे देखबैत फेर बजला-

“आ ऐठाम बेसी काल बैसै छला। तँए नीक हएत जे बिच्चेमे दिऐन।”

कहि लेलहाकेँ कहलखिन- “लेलहू, चलह। पहिने लकड़ी देखी।”

करिया काका, सुन्दर काका, लेलहा, बचनू, चंचल सभ बढ़ला। एमहर जीबछो, छीतनो आ रंगलालो अपन-अपन जगह टेबि बाजा उठौलक। एकछाहा मालदहक कलम, खाली चारू हत्तापर शीशो, जामुन, गमहाइर। एकोटा आमक गाछ सुरेब नहि। सभ अष्टावक्र जकाँ। तहूमे मृत्यु-ले जीबितकेँ बलि देब उचित नै बुझि आमक गाछसँ नजैर हटा लेलक। गमहाइर दिस नजैर दैते लेलहा बाजल-

“गमहाइर महराज आ जामुन महराज तँ तेहेन छैथ जे अपना बुत्ते अपनो नै पार लगतैन, मरल देह हिनका बुत्ते जरौल हेतैन।”

लेलहाक बात सुनि सुन्दरो काका आ करियो काका आँखि मिला मुस्कियाए लगला। मुदा लेलहाक बाजबसँ चंचलकेँ तामस पजरए लगल। खढ़क आगि जकाँ लगले पजैर गेल- “यौ सुनर काका, जहिना पनियाह जामुनक लकड़ी होइए तहिना गमहाइरो

होइए। ऐसँ नीक आमक हएत। कनी रूखो होइए। तहूसँ रूख इलचीक होइ छइ। अनेरे काजमे कोन भदबा लगौने छी। हइबए तँ देखै छिऐ, दछिनबरिया हत्ता परहक शीशो सुखल अछि। मुरदा जरबैले ओहन जारैन चाही जेकर धधड़ा करगर होइ।”

सभ कियो दछिनबरिया हत्ता लग पहुँचला। दस-पनरहटा शीशो पैछला साल बिमारीमे सुखि गेल छेलइ। तीने चारिटा साइजक गाछ, नइ तँ सभ अनसाइजक। जे जरने भाव बिकाएत। पातर गाछ कटने चारिटा पाँचटा काटए पड़त। से नइ तँ ओहन दूटा गाछ काटि लिअ, जइसँ सभ काज नीक जकाँ भाइयो जाएत आ थोड़-थाड़ डोमोले रहि जेतइ। मुदा लेलहाक नजैर तर चलि गेल। बाजल- “काका, केते लकड़ीसँ मुरदा जरै छइ?”

करिया काकाकेँ सुनल तँ रहैन मुदा लिखल नहि पढ़ने रहैथ। प्रश्नक जवाबो नै देब उचित नहि। भलेँ कहि दिऐ, नै बुझल अछि। मुदा जे काज संगे मिलि एते केने छी तइमे हमहीं सोलहन्नी केना मूर्ख बनि जाइ।

फरैक कऽ बजला-

“अँइ रौ लेलहा, तोहर हम ठकदरूआ छियौ जे एहेन बात पुछलँह। एते मुरदा जे संगे जरौलौं से हम देखलिऐ आ तूँ आँखि मुनने रहँह।”

करिया कक्काक बात सुनि दोहरी नजैर खसल। मनमे रहै जे काजक लकड़ी छी, बेसी जराएब उचित नहि, जँ जड़ि दिससँ टोनि कऽ लऽ लेब तँ घरक केबाड़ी भऽ जाएत। से नइ तँ, पहिने टोनि कऽ कलमक सीमा टपा कऽ रखि दिऐ। पछाइत लऽ जाएब। से मंगैसँ पहिनहि करिया काका खिसिया गेला। अपन काजक रूखि खराब होइत देखि लेलहा सोचलक जे से नइ तँ सझिया करि कऽ बाजी।

बाजल-

“काका, दुनू भाँइ छी। बहुत लकड़ी अछि। निचका टोनि कऽ केबाड़ बनबैक विचार होइए?”

मने-मन हिसाब जोड़ि करिया काका कहलखिन-

“काज-जोकर निकालि कऽ सिरहौना-पटौना सौंसे रहह दिहक आ ऊपरका फाड़ि लीहह। ताबे हम ऐगला काज देखै छिऐ।”

कहि कोदारि लऽ अछियाक खाधि नापि, खुनैले झोलीकेँ कहलखिन। झोली हँसैत बाजल-

“भाय लोकैन, सुनि लिअ। हमहूँ बुढ़ाएले जाइ छी, मुदा जाबे बाँहिमे दम अछि ताबे समाजक भार, अछिया खुनब–उघैत रहब। एक साए पच्चीसम अपनासँ उमेरगरक अछिया खुनने छी। अपनासँ कम उमेरक खुनैक मौका नै भेटल।”

कहि झोली अछिया खुनए लगल। तैकाल जीबछ शहनाइपर उठौलक-

“मन सुमिरन करले रात-दिना, जगमे कोइ नै अपना...।”

अछिया खुना गेल। शीशोक ओहन मोट लकड़ी सिरहौना-पटौनामे देल गेलैन, जेते मोटगर ओछाइनपर रघु जिनगीमे कहियो सुतल नै छला। एक-एक चेरा चढ़बैत छाती भरि ऊँच चेरा रघुनन्दन कक्काक संग जरैले तैयार भऽ गेल।

सुन्दर काका देवनन्दनकेँ बाँहि पकैड़, धधकैत ऊक मुँहमे लगौलैन।

मुँहमे ऊक पड़िते, बिजलोकाक इजोत जकाँ सबहक मनमे रघुनन्दन पहुँच गेलखिन। बाबा, काका, भैया, भाए, बौआ, बच्चा, नूनू इत्यादि हजारो रूप पटेरक फूल जकाँ उड़ए लगल। जहिना

पटेरक एकटा डाँटमे हजारो-लाखो पूर्ण फूल निकलैत तहिना रंग-बिरंगक फूल बनि रघुनन्दन मने-मन उड़ए लगला।

आँगनसँ अरियाति सुभद्रो आ शीलो रहि गेली। शीलाक मनमे चाह, जलखै पठबैक ओरियान करब रहैन। आ सुभद्रा सोचैथ जे घरनिप्पो सुखाइए गेल अछि। मास दिन केना भीजल रहत। पुतोहुजनीकेँ ओरियाने-बात करैक छैन। तइमे नीक जे एक-गिलास पानि छीटि लाभर-जीभर बाढ़ैनसँ बहारि दिऐ। आब तँ चारिम दिनसँ सभ दिन घर-अँगना होइते रहत। सएह केलैन।

चाह-जलखै-ले गाछीएसँ बौकू आ शीतला चलि आएल। दुनू गोरेकेँ सभ समान दऽ निचेन भेली। धिया-पुताक हल्होरिमे आशा सिंगरिया-बाजाबलाक पाछू-पाछू चलि गेल रहए। ताधैर सुभद्रो आँगन बहारि निचेन भेली।

तखने शीला सुभद्राकेँ कहलखिन-

“माए, केतौ बैस कऽ बुड़हाक बात कहौथ?”

सुभद्रा कहए लगली-

“हँ कनियाँ, जैठाम अपने सुतल छला तहीठाम चलू, भने तुलसियोक गाछ बगलेमे अछि।”

दुनू गोरे बैसते छेली कि लोहनावाली दादी हहाएल-फुहाएल पहुँचली। लोहनावालीकेँ देखिते शीला कहलकैन-

“आबौथ बाबी, अँगने आबौथ। अँगनामे दुइए गोरे छी।”

अँगना-घर नीपल नै देखि लोहनावालीक मनमे तरे-तरे क्रोधक लहकी-लहकए लगल। मुदा क्रोधकेँ दबैत सुभद्राकेँ कहलखिन-

“दियादनी, अहाँ तँ हमरासँ जेठ छी, मुदा सभ विध-बेवहार सभकेँ थोड़े मोन रहै छइ। ऐमे एकटा विध आरो होइ छइ।”

“की?”

“स्वामीक निमित्ते कपारमे पाथर लगाएब।”

मुस्की दैत सुभद्रा बजली-

“हँ, हँ, ई तँ हमरो मोन अछि।”

“अखन नै बैसब। जाइ छी।”

कहि लोहनावाली विदा भेली।

“बेस, बेस। जाउ।”

कहि पुन: दुनू सासु-पुतोहु बुड़हाक जगहपर जा बैसली, आँखिसँ नोर बिलाएल।

मुस्की दैत शीला बजली-

“माए, बुड़हासँ कहियो झगड़ो भेल छेलैन?”

“बुड़हा नर्कसँ स्वर्ग गेला। हुनकर आगि नै उठेबैन। हमरो माए-बाप सिखा देने रहैथ। मुदा जेते माए-बाबू सिखौने रहैथ तइसँ बहुत बेसी बुड़हा सिखौलैन। हरिदम कहैत रहै छला जे जेकरा मनुक्ख बुझै छिऐ ओ मनुक्खक हाड़-मांसक बनल एक ढाँचा मात्र छी जेकरा मनुक्ख बनबै छै मन। मन जेहेन रहत तेहेन ओ मनुक्ख बनत। जेहेन मनुक्ख बनत तेते लोकक मनमे जगह भेटतै। जगहो दू तरहक होइ छइ। एक तरहक होइत अछि नीक आ दोसर अधला। मनुक्खकेँ हरिदम नीक विचार मनमे रखक चाही।”

बिच्चेमे शीला टपैक गेली-

“परिवारमे तँ घरहटो होइ छै, बिआहो होइ छै, पावैनो होइ छइ। ओ काज केना करै छेलखिन।”

“कनियाँ, परिवारमे नमहर काज भेने चुल्होक काज बढ़िए जाइत अछि। मुदा हरिदम ई मनमे राखी जे अपन काज सम्हारि

दोसरोक काज करी। जँ परिवारमे एहेन लोक बनि जाएत तँ जहिना बीटमे नवको आ तीन-सलियो-चरि-सलिया बाँस धरि एक संग समटल रहैए, जइसँ पातरो बाँसकेँ देखै छिऐ केते-केते नमहर होइए, कड़ची सभकेँ समेट कऽ रखैए– वएह कड़ची छी परिवारक अपनासँ बढ़ि दोसराक काजमे सहयोग करब– तहिना परिवारसँ-गाम आ गामसँ-राज्य-देस धरिमे समटल सम्बन्ध रहत नइ कि फल्लर। औझुका लोकक मन ढील भऽ गेल अछि। जेकर फलाफल सोझहेमे अछि।”



शब्द संख्या: 14981

2.

खूब अन्हरगरे भोरमे सुभद्रा शीलाकेँ उठबैत कहलखिन- “कनियाँ, उठू झब-दे उठू।”

सासुक औगताएल बोली सुनि शीला उठि कऽ बैसैत पुछलखिन-

“की भेलैन जे एना अधनिनामे उठा देलैन?”

“असथिरसँ बाजू। अखन गामक लोक नै उठल अछि। अपन काज आगू बढ़ाउ।”

“कोन काज?”

“जखने एक्के-दुइए लोक सभ जागए लगत आकि भूत सभ आबए लगत। अहाँ नव-नौताड़ि छी तहूमे शहर-बजारमे रहै छी। अहाँ गामक भूतकेँ नै चिन्हबै बुड़हा सभटा भूतकेँ चिन्हा देने छैथ। अखन एतबे सुनू। नइ तँ जिनगी हूसि जाएत। बुड़हा मरि गेला तँए कि सभ ओइ लगल मरि जाएब। सभकेँ अपन-अपन दाना-पानी अछि। मुदा फेर कहै छी। गप-सप्प करैले भरि दिन खालीए अछि। समाजक लोक सभसँ सभ बात पुछबैन आ बुझब। अखन जल्दी बिस्कुट डिब्बा निकालू आ चाह बनाउ। ताधैर हमहूँ बौआकेँ एकटा दतमैन दऽ अबै छिऐन। जाबे अहाँकेँ चाहो नै बनत ताबे ओ तैयार भऽ जाएत। चूल्हिमे तँ छाउर नै अछि, माटिए लऽ कऽ हाँइ-हाँइ दू घूसा दाँतमे दियौ आ कुर्ड़ा करि कऽ पानि पीब लिअ।”

कहि सुभद्रा देवनन्दनकेँ उठबैले दलानपर गेली। जइ जगहक चौकीपर रघुनन्दन सुतै छला, ओही अखड़े चौकीपर देवनन्दन सुतल

छला। देहपर हाथ दऽ आस्तेसँ डोलबैत बजली-

"बाउ, बाउ उठू! लिअ दतमैन पहिने मुँह-हाथ धोइ लिअ।"

मृत्यु-कर्मक विध बुझि देवनन्दन किछु पुछलखिन नहि। माइक सोलहन्नी बात मानि दतमैन करए लगला। सुभद्रा अपनो मुँह धोइ कुर्ड़ा कऽ आँगनक ओसारपर बैसली। प्लेटमे चारिटा छोट साइजक बिस्कुट आ गिलासमे पानि नेने शीला पतिकेँ दइले चलली। शीलाक हाथमे गिलास-प्लेट देखि सुभद्रा बजली-

"पौआही पाँउ-रोटी नै अछि तँ बड़का डिब्बा–चारि साए ग्रामबला, बिस्कुटेक दऽ अबियौ।"

शीला सएह केलैन। चाह पीऐत सुभद्रा कहए लगलखिन-

"अपना सभमे तँ तेरहे दिनमे सभ कर्म भऽ जाइत अछि मुदा अपने गामक आन टोलमे केकरो पनरह तँ केकरो सतरह तँ केकरो महिना दिनपर कर्म सम्पन्न होइत अछि। हम किए एते भोरे उठा देलौं से बुझै छिऐ? आइ एक्के बेर बौआकेँ एक-भुक्त करए पड़तैन गोसाँइ लहसैत पहिने बुड़हाकेँ अरगासन दैत खेता। आब अहीं कहू जे जे आदमी बानर जकाँ किछु-ने-किछु हरिदम खाइत रहै छैथ ओ भरि दिन निराधार केना रहता? बुड़हा जिनगीक संगी छला मुदा बौआकेँ दस मास पेटमे पालने छी। ओ पालब हम नै बुझबै तँ पुरुखकेँ बुझब छिऐ। अखन कियो नै अछि कहि दइ छी। हमरा कोन, हमरा तँ हरिवासयक साधल देह अछि मुदा अहाँ दुनू परानी तँ से नइ छी। लोके भूत छी से बुझि लिअ। जखन अँगना खाली रहए आ खाइ-पीबैक मन हुअए तँ घरमे जा कऽ खा लेब। बुड़हाक क्रिया-कर्मक जे विधान अछि आ समाजमे रहै छी ओ तँ समाजेक विचारानुसार हएत। मुदा ईहो ने मनमे राखए पड़त जे एक तँ समांगक सोग मनमे अछि तैपर सँ खेनाइयो-पिनाइ छोड़ि देब तँ की

बुड़हा लगल सभ चलि जाएब? जेते काल जीबै छला, सेवा-टहल केलिऐन वएह दायित्व भेल। एकटा खिस्सा कहै छी कनियाँ। खिस्सा नै आँखिक देखल घटना..।"

ओंगरीसँ टोलकेँ देखबैत- "ओइ टोलमे फुसनाक घर छइ। बहुत दिन तँ नै भेलैए मुदा तैयो पच्चीस-तीस बरख भेल हेतइ। फुसनाक बाबा मुइलै। ओ पेटबोनिया रहए। मुइलाक पराते अरगासन की देत आ अपने एक-भुक्त की करत..! मुदा तैयो केकरो-केकरोसँ पैंइच लऽ लऽ पार लगलै। बिना आमदनीए परिवार केना चलतै। खाइ-बेतरे धिया-पुता सभ टौआइ। चिन्तासँ दुनू परानी तरे-तर सुखए लगल। धिया-पुताक मुँह देखि वेचारी फुसना-माइक करेज चहैक गेलइ। मरि गेल वेचारी! फुसनाक-गरदैनमे माइक उतड़ी आ बापक गरदैनमे बापक उतड़ी। तैपर सँ बीस दिन बाद मलेमास पड़ि गेल।"

दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै...।

सुभद्राक आँखिसँ बहैत सरस्वतीक धारा देखि शीलाक मुहसँ अनासुरती निकलल- "वाह रे धैर्य! अपना सोगे नोरो नहि आ अनका सोगे धार।"

चाह पीब पान खा पढ़ुआ भाय पत्नीकेँ कहलखिन- "हमरा अबेरो भऽ सकैए। तैबीच जँ कियो खोज करैथ तँ कहि देबैन जे देवनन्दनक ऐठाम जिज्ञासा करए गेला।"

"अखने किए जाएब?"

"अहाँ जे सोचै छिऐ तइसँ हटि कऽ सोचए पड़त।" -कहि पढ़ुआ भाय डेग बढ़ौलैन।

पत्नी पाछूसँ कहलखिन- "अच्छा जाउ।"

रस्तामे पढ़ुआ भाय सोचए लगला जे अपने पढ़ल छी, पोथीक

बात बुझै छिऐ। अनको कहै छिऐ। मुदा परिवारक जँ सभ नै बुझत तँ अपन बुझलाहा पइठ अपने केतेक हएत? खाएर.., जाधैर आँखि तकै छी, सोचै-विचारैक शक्ति अछि, मात्र ताधैरक भार। जँ से नइ तँ की शास्त्र ओकरा-ले नइ जेकरा कियो अपन नइ छइ?

मन ओझराए लगलैन। मुदा नजैर अहीठाम अँटैक पत्नीक प्रश्नपर चलि गेलैन।

मार्किन वस्त्रमे सजल असकरे देवनन्दन गुरुकुलक विद्यार्थी जकाँ चौकीपर दच्छिन-मुहेँ बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबते रहैथ कि शीला सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ नेने आबि आगूमे रखि खाली गिलास लइले ठाढ़ भऽ गेली। तीन-चारि घोंट चाह गिलासमे रहबे करैन मुदा मन जे जबदाह छेलैन से आब हल्लुक भऽ गेल रहैन। शीला दिस मुस्की दैत, डेढ़-बराह आँखिए तकलैन। शीलाक आँखिकेँ काजक बोझ दबने। पतिक मुस्की जेना मनक घूरकेँ एक मुट्ठी सुखलाहा खढ़मे सलाइ पजाइर देलकैन। मुदा धधराक लपटक संग काजे अगुआ गेल। बजली-

"आइसँ समाजक लोक काजक विषयमे पुछैले एबे करता। हुनका सभकेँ खाइ-पीबैले नै देबैन से उचित हएत?"

देवनन्दन कहलखिन-

"कथमपि नहि।"

मनक मुस्की, अपन नमहर ऋृण अदाए होइत देखि अठन्नियाँ हँसी बनि निकललैन-

"घरमे की सभ अछि?"

"चाह-पत्ती, चीनी, दूधक डिब्बा सिगरेट-सलाइ तँ अननहि छी, आरो किछु जोगार करए पड़त से तँ नै बुझल अछि।"

अपन भार उतारैत देवनन्दन बजला-

“गामक सभ बात तँ हमहूँ नहियेँ बुझै छी। करिया काकाकेँ बजा पुछि लइ छिऐन।”

“अच्छा हौउ। कौआ डकल। झब-दे सिगरेट पीब लिअ। ने तँ अनेरे सिगरेटक सुगन्ध चलत। लोक जागत।”

पत्नीक गतिगर गप बुझि गिलास हाथमे दैत देवनन्दन सिगरेट धरा सोंटए लगला। मनमे एलैन, अपने दुनू परानी ने बहरबैया भेलौं मुदा माए तँ सभ दिन गामेमे रहली। हुनका सभ विध-बेवहार तँ बुझले छैन। तही काल बिस्कुटक ढेकार भेलैन। मुँह लाड़ए-चाड़ए लगला। सिगरेटक ठुट्ठी फेकते रहैथ कि पढ़ुआ काकापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते चौकीएपर सँ बजला- “आशा।”

पतिक बात शीला बुझि गेली। गैस चूल्हिपर चाहक ओरियान करैत शीला आशाकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, दरबज्जाक कोणपर सँ देखने आबह जे केते गोरे छैथ?”

दौगल आबि आशा पढ़ुआबाबाकेँ बैसल देखि घुमि माए लग जा कऽ बाजल-

“बाबू लगा दू गोरे।”

पढ़ुआ काका आबि चुपचाप मौन धारण केलैन। दू मिनटक पछाइत आँखि खोललैन कि आशाकेँ चाहक कप बढ़बैत देखिते जहिना रेलमे कटल बेकतीपर नजैर पड़िते बुधिक फाटक बन्न भऽ जाइत, तहिना भेलैन। तैबीच देखलैन जे देवनन्दन दू चुस्की मारि लेलैन। मनमे बिहाड़ि उठलैन। ओना तँ नह-केश कटेलाक उत्तर नइ तँ कम-सँ-कम छौरझप्पी धरि तँ सोग मनेबाक चाही। मुदा बुढ़क मृत्युमे सोग मनेबाक चाही आकि हर्ष? जँ सोग मनाएब तँ की

प्रकृतिक संग छेर-छार नै हएत? मुदा परम्परो तँ अपन महत रखैत अछि। अखन धरि कर्ताक संग परिवारो आ समाजोक संग किछु निअम बनल अछि। जेकर संचालक अपने सभ छिऐ। तैठाम की कएल जाए? तहूमे नवकबरिया डॉक्टर छैथ, मनमे कचोट हेतैन...।

मरै-हरैक तँ सीमो नहियेँ होइत। बुढ़ो मरैत, जुआनो मरैत आ बच्चो मरैत अछि। तखन तँ सभकेँ अपन-अपन जिनगीकेँ दीर्घायु बनबैक छइ। तहीले ने सभ अपन-अपन जिनगीकेँ लगौने रहैए। मुदा असकरे कोनो काज करैसँ पहिने दोसरो गोरेकेँ पुछि लेब आवश्यक अछि। मुदा लगमे के अछि जेकरासँ पुछबै। भरोसे रहब तँ चाहे दुइर भऽ जाएत! मुदा देवनन्दनकेँ पीऐत देखि भरोस भेलैन। चाहक चुस्की लैत सोचए लगला, अपना सबहक समाजमे तेरह दिनक कर्म डाहब-जराएबसँ लऽ कऽ द्वादसा-कर्म धरि अछि। जहिना घरसँ निकालि गाछी लऽ जा गाछक संग कऽ देलिऐन। तहिना ओइठाम काज सम्पन्न कऽ घरपर लऽ अनलयैन। आब घरक काज शुरू हएत। फेर मनमे उठलैन जे काजक दौड़मे जिज्ञासो तँ होइत अछि? फेर मन ओझराए लगलैन। तेरह दिन हिसाब जोड़ैथ तँ ठीके बैसैन। मुदा जिज्ञासा तँ तखनेसँ ने शुरू हएत जखनसँ आँगनमे लोह-पाथर छुबि लोक अपन-अपन घर चलि जाइए। समाजक तँ एक परकिरिया सम्पन्न भऽ गेल। एहनो तँ भऽ सकैत अछि जे गाममे नै छला। जरौला पछाइत एला। हुनका कखन सामाजिक काजमे संग कएल जाए। जँ छौरझप्पीक पछाइत कएल जाए तँ संस्कारक संगी माने जरबैक संगी मानल जेता। मुदा जहिना माटि खुनैत-खुनैत केतेको रंगक माटि धरतीमे मिलैत तहिना माथ खोधैत-खोधैत चिक्कन माटि भेटलैन। छह-छह करैत पानियोँसँ बेसी छिछलाह! फुरलैन- मनुक्खकेँ समैयक अनुकूल बना चलक चाही। जहिना अनेको कारणसँ वायुमण्डल बदलैत रहैत अछि तहिना जँ मनुखो नइ

बदलत तँ गतिहीन भऽ जाएत। गतिहीन आ मृत्युमे अन्तरे की..? जेते पढ़ुआ काका सोचैथ तेते मन ओझराएल जाइन। बजला-

“बौआ, तीन दिन धरि जहिना बाधमे हरियरी नइ रहने माल-जालकेँ बहटारि चरबाह अपने गुल्ली डन्टा खेलए लगैत तहिना छौरझप्पीसँ पहिने मन बहटारए एलौं। अखन जाइ छी फेर आएब। मनमे चिन्ता नै करब। समाज समुद्र छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ बड़का-बड़का पानिक जानवर धरि प्रेम-भावसँ जीवन-यापन करैए। सभ शक्ति समाजमे छइ।”

कहि पढ़ुआ काका रस्ता धेलैन।

माथ उधारने, अदहा देह वस्त्रसँ झाँपल गुदरी पाछू-पाछू आ डाँड़मे ठेहुनसँ ऊपर धोती, कान्हपर तौनी नेने आगू-आगू हुलन आबि देवनन्दनकेँ ओसारक निच्चासँ प्रणाम केलकैन।

शिष्टाचारकेँ देखैत डॉक्टर देवनन्दन चौकीपर सँ उठि ओसारक निच्चाँ आबि, भुइयेँमे चुक्की-माली बैस दुनू परानी हुलनकेँ सेहो बैसैले कहलखिन।

मुँह सकुचबैत हुलन कहलकैन-

“सरकार, अहाँ लग हम केना बैसब? हम ठाढ़े रहै छी।” बजैत-बजैत दुनू परानीक आँखिसँ नोर टघरए लगल।

गाल परहक नोरक टघार पोछैत हुलन बाजल- “गामक खुट्टा उखैड़ गेला। कक्काक अछैत कहियो चिन्ता नै भेल जे समाजसँ बाहर छी। आन जे अछि ओ हरिदम अगराहीए लगबैत रहैए।”

“अच्छा, गामक बात पाछू कहिहह पहिने अपन काज कहह।”

पतिकेँ दबारैत गुदरी बाजल- “बौआ डागडरबाबू, अहाँ देवता छी। कोनो बात नुका कऽ नइ रखब। हमरो काज बहुत अछि। एक

दिन बीतिए गेलैन। दसे दिनपर नह-केश होइ छइ। ओइसँ पहिने सभ बरतन बना कऽ दिअ पड़त। बीचमे आठे दिन समए बँचलै। दुइए परानी काज करैबला छी। धिया-पुता सभ इसकूले जाइए।"

स्त्रीगणक बोली सुनि अँगनासँ सुभद्रो आ शीलो दरबज्जापर एली। दरबज्जापर अबिते सुभद्रा गुदरीकेँ कलखिन-

"कनियाँ, ओजार-पाती नै अनने छह? आब तँ सूपे-चालैनक काज पड़त। कनी ओकरा जोड़ि-जाड़ि दितहक।"

"नै काकी, कहाँ किच्छो अनने छी। काल्हि बेरूपहर आबि करि कऽ देबैन। अखनी तँ काजेक बरतन बुझैले एलौं हेन।"

"बेस-बेस। मुदा एकटा बात मन रखिहह जे जहिना बुड़हा मेघडम्बरक सिनेही छला तेहने बनबिहह।"

मेघडम्बरक नाओं सुनि मुस्कियाइत हुलन बाजल-

"काकी, जहिना भगवान विष्णु वामनरूपमे मेघडम्बर ओढ़ै छला तइसँ बीस कक्काक मेघडम्बर हेतैन। पाँच गोरेक परिवार तरमे अँटाबेश कऽ सकैए।"

सुभद्रा देवनन्दनकेँ कहलखिन-

"बाउ, अपने तँ गामक किछु बुझै नै छह, हम स्त्रीगणे भेलौं। मरदा-मरदीक काज छी। करियो बौआकेँ बजा लहुन।"

सुभद्राक बात सुनिते गुदरी करिया काकाकेँ बजबए विदा भेल।

देवनन्दन हुलनकेँ पुछलखिन- "कारोबार की सभ छह?"

कारोबारक नाओं सुनि हुलन हरा गेल। मोन पड़लै अपन सुगर। भड़भड़ाएल स्वरमे बाजए लगल- "भाय, गरीबकेँ कियो नीक केनिहार नहि। देवस्थानमे दोहाइ दइले गरीब अछि। जहिना केतबो

दोहाइ देनौं गहुमन साँपक बिख नै उतरैए तहिना दीनदयाल भजने की हेतइ। यएह गाम छी धनेसर ऐठीन भोज रहइ। अपनो सभ अठि-काँठ समेटलौं आ अँइठारमे फेकल अँठिहा पातमे सुगरकेँ छोड़ि देलिऐ। धनेसरक बेटा तेहेन सेतानक चरखी अछि जे चोरा कऽ पोखैरक माछ मारैले इन्डोसेल अनने रहए। पातपर छीट देलकै। सभटा सुगर मरि गेल। तइ दिनसँ ने पूजी भेल आ ने फेर दुआरपर पशु।”

देवनन्दन अकचकाइत पुछलखिन- “जखन खेतो ने छह, सुगरो सभटा मरिए गेलह तखन गुजर केना चलै छह?”

देवनन्दनक प्रश्न सुनि हुलनक मनक आशा फुटि कऽ निकलल-

“डाकदर साहैब, समाज जीबैत रहए...।”

सुभद्रा दिस देखि-

“भगवान काकीकेँ औरदा देथुन। काकीकेँ बुझले छैन जे बारहम-तेरहम मास हिनके दुनू परानीक असिरवादसँ गुजर करै छी।”

हुलनक उत्तर सुनि देवनन्दनक मनमे सुनैक उल्लास जगलैन। भुखाएल जकाँ पुछलखिन-

“से की?”

रेगहाए कऽ हुलन कहए लगलैन- “बाउ, गरीब लोकक लिए आसिन-कातिक सभसँ भारी होइए। मुदा सभ साल काका हमरा दूटा बाँस शुरूए आसिनमे दऽ दइ छैथ। दुनू बाँस लऽ जाइ छी। ओकरा चिड़ि-फाड़ि कऽ बरतन बनबए लगै छी। ओना, कोनियोँ-छिट्टाक बिकरी दोगा-दोगी हुअ लगैए। मुदा फुलडालीक संग आरो-आरो समानक बिकरी हुअ लगैए। जइसँ खूब नीक-नहाँति तँ नहियेँ

मगर गुजर चलए लगैए। ई आशा अखनो अछिए। जाबे काकी जीबैत रहती ताबे रहबे करत।”

हुलनक बात सुनि देवनन्दन चौंक गेला। मनमे एलैन जे पिताक कएल कर्म-धर्मकेँ हम मेटा देब। कथमपि नहि। मुस्की दैत बजला-

“बाबूक सभ किछु रहबे करथुन।”

देवनन्दनक विचार सुनि हुलनक आशा बनले रहल।

करिया काका बजार जाइक तैयारीमे रहैथ, पत्नी बुझा-बुझा कहैत रहैन-

“औझुका एक-भुक्तक सभ सरंजाम देबैन। बारह-तेरह दिन तँ सभ कियो हुनके काजमे लगि जाएब तँए आइए तेरह दिनक नोन-तेलक ओरियान नै कऽ लेब तँ बीचमे छुट्टी हएत?”

पत्नीक बात करिया काका सुनबो करैथ आ समान अनैक झोरा-झोरी आ रुपैआक हिसाब सेहो मने-मन जोड़ैत रहैथ। तैबीच गुदरी डेढ़ियापर सँ हाक देलकैन-

“काका, काका?”

टाटक दोगसँ मुड़ी उठा देखलैन तँ गुदरी-डोमिनपर नजैर पड़लैन। मनमे उठलैन- जतरा बिगैड़ खराब भऽ गेल। की हएत की नै। मन खसि पड़लैन।

दोहरबैत गुदरी बाजल-

“काका तँ अखन काकीमे ओझराएल छैथ। अनकर बात किए सुनथिन?”

गुदरीक शब्दवाण करिया कक्काक छातीकेँ बेधि देलकैन। अँगनेसँ बजला- “कनी काजमे लगल छी। लगिचा गेल। अबै छी।”

मुदा शब्द-वाण छाती बेधि कऽ मैल निकालि देलकैन। विचार जगलैन कोनो काजमे जाइसँ पहिने केकरो देखने केकरो जतरा किए भंगठत? ई मनक मैल छी। आदमी अपन जिनगी आ कर्मक मालिक स्वयं अछि। तखन केकरो दोख लगाएब कायरता छी। गुदरीकेँ सुनबैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"आब अपन काज ठमैक गेल ताबे अहाँ झोरा ओरिया कऽ रक्खू। पहिने डोमिनक बात बुझि लइ छिऐ।"

आँगनसँ निकैल करिया काका दरबज्जापर आबि गुदरीकेँ पुछलखिन-

"किए एते हलचलाएल छी?"

मजबुरीक आवाजमे गुदरी कहलकैन-

"काका, हम तँ हिनके सबहक लऽ लऽ छी। ई तँ बुझिते छथिन जे सराधमे डोमिनकेँ केते काज होइ छइ। एक दिन बीतिए गेलैन। दसे दिनपर नह-केश होइ छइ। नहे-केश दिन जँ सभ बरतन नै पहुँचा देबैन तँ येहे की कहता?"

विचित्र द्वन्द्वमे करिया काका फँसि गेला। एक मन कहैन जे सराधक काज तँ छौरझप्पीक पछाइत शुरू हएत आइ केना करब? फेर दोसर मन कहैन जे भात झँकैले कमसँ-कम चारिटा बड़का छिट्टा, चीज-वौस रखैयोले आ परसैयौले बीस-पच्चीसटा चँगेरो बनबए पड़तै। तैपर सँ सराधी-कर्मबला बरतन सेहो बनबए पड़तै। दिनो तँ गनले आठटा अछि। जइमे बाँस काटबसँ लऽ कऽ घरपर पहुँचबै धरिक छइ। छोट लोकक तँ दुर्भाग्यो छै जे दूटा जबानसँ तेसर एक-ठाम नइ रहए चाहत। भलेँ बाप-माए होइ आकि बेटा-बेटी। फेर मनमे एलैन सुआइत मौगी पुरुखाह आ पुरुख मौगियाह भऽ जाइए। मनमे हँसी एलैन। मुदा लगले पाकल जअमे पाथर

खसलैन। एकरा जखने साय देबै तखने काज करैक अधिकार भेट जेतइ। अधिकारमे बाधा देब अनुचित हएत। जँ अखने नै साय दऽ देबै तँ बेसी समांग छै, हाथे-हाथ सम्हारि देतइ। मनुक्ख तँ लोहाक मशीन नै छी जे बटम दाबि देतै आ ढेरक-ढेर बनबए लगत। कमसँ-कम चारि बाँसक काज छइ। काटत, फाड़त टोनत तखन कैमची बनौत, काड़ा बनौत आरो केते करए पड़तै। मौगी केतबो लट-लट करैए तँ पुरुख जकाँ बाँस तँ नै काटि सकैए। जँ काटियो लेत तँ झोंझसँ खिंचल केना हेतइ...।

करिया कक्काक मन धोर-धोर हुअ लगलैन। आशा जगलैन। काज तँ देवनन्दनक छिऐन। हम समाज भेलौं। भलेँ दुनू गोरेक परिवार जोटल आम जकाँ आकि जोटल फूल जकाँ अछि। मुदा मनुक्ख होइक नाते मनुक्खक बात नइ मानिऐ ई समाजक संगे बेइमानी हएत। आँखि मूनि कोनो बात मानियोँ लेब ओ खाधिमे खसाएत। मनुक्ख दोहरा कऽ ऐ धरतीपर नै अबैए भलेँ लोक साए बेर अबैक-जाइक बात बुझए। मुदा हमरा गरदैनसँ निच्चाँ नै उतरत।

आगू-आगू फनकल गुदरी आ पाछू-पाछू करिया काका असथिरसँ रस्ता धेलैन। आगू बढ़ि उनैट कऽ गुदरी आगूमे ठाढ़ भऽ कहए लगलैन-

"आब की ईहो जुआने-जहान छैथ जे नइ बुझथिन। काजक केते छिगरीतान अछि से नइ बुझै छथिन। ओछाइनपर सँ उठै छी आ काजमे लगि जाइ छी। जलखै बेरमे छौरसँ आकि माटिसँ मुँह धोइ पानि पीऐ छी। धिया-पुताकेँ खुअबैत-पीअबैत, चरिया कऽ स्कूल पठबैत गोसाँइ कान सोझे चलि अबैए। हमरा-ले की दोहरा कऽ दिन उगत।"

आगूमे बाँहि फरका-फरका कहैत गुदरीक बातसँ करिया

काका अकैछ कऽ बजला-

"चलू.. बुझलिऐ..! जे अहाँक बात नै मानता ओ काजक भार लेथिन।"

कहि मने-मन सोचए लगला। काजक बेरमे वाय गौंगियाए लगै छैन आ हुकुम चलबै कालमे जएह मन फूरत सएह बाजि देब। जहिना कोनो घर बनबैमे रंग-बिरंगक काज, रंग-बिरंगक समान, रंग-बिरंगक ओजारसँ लऽ कऽ रंग-बिरंगक बुधि लगैत तहिना मनुक्खक समाज बनबैले मनुक्खकेँ बुझए पड़त। दरबज्जापर अबिते करिया काका देवनन्दनकेँ पुछलखिन-

"किए बजेलौं?"

देवनन्दनकेँ बजैसँ पहिने हुलन किछु कहए लगलैन मुदा हुलनकेँ रोकैत करिया काका बजला-

"रघुनी भैयामे हमरो साझी अछि तँए किनको बिगाड़ने अपन हिस्सा दुरि नै हुअए देब। तोहर जे काज छह ओकर मालिक तूँ छह। जइ चीजक जरूरत हुअ ओ कहि दएह।"

हुलन बजला-

"बाँस।"

"बीट देखले छह। जेतेसँ काज हुअ काटि लिहह।"

बिच्चेमे सुभद्रा शीलाकेँ कहलकैन-

"कनियाँ, साय दऽ दियौ।"

आँगनसँ शीला पँचटकही आनि गुदरीक हाथमे दऽ देलखिन। रुपैआ लैत गुदरी बाजल- "काल्हि बेरमे आबि सुपा-चालैन बान्हि देबैन काकी।"

काज हल्लुक होइत करिया काका मने-मन सोचलैन जे अदहे

घन्टा ने देरी भेल, कनी रेसेसँ चलि जाएब। नइ तँ कनी अबेरे हएत किने, काजक दौड़मे अहिना होइ छइ। तैबीच दुनू परानी हुलनकेँ अपनामे गप-सप्प करैत दू लग्गा आगू आगू-पाछू जाइत देखलैन।

“किछु छिऐ तँ राज-दरबार छिऐ। मुँहमंगा। आब तँ नवका-नवका लोक सभ भऽ गेल किने। ने तँ बाउ कहै जे रघुनी भाइक बाबा जे रहैन से बेटीकेँ खोंछिमे पाँच बीघा खेत देने रहथिन। से जँ नै देने रहितथिन तँ बाल-विधवाकेँ की दशा होइतै?”

गुदरी अपना विचारमे ओझड़ाएल तँए हुलनक बात सुनबे ने केलक। तैबीच करिया काका हुलनकेँ सोर पाड़ैत कहलखिन- “सिदहा नेने जा। बेरू-पहर बाँसो लाइए जइहह, काजमे बिथुत ने होइ।”

सुभद्रा उठि आँगन विदा भेली। पाछूसँ शीलो गेली। हुलन दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ रहल आ गुदरी सिदहा आनए आँगन गेली। हुलन करिया काकाकेँ कहलखिन-

“करिया काका, जाबे जीबैत रहबै ताबे सम्बन्ध रहबे करत। ओना, आब डॉक्टरो भाय बाहरे रहए लगला, हमरो सबहक धिया-पुता अपन बेवसाय छोड़नहि जा रहल अछि।”

हुलनक बातकेँ करिया काका बेवहारिक बुझलैन। मुदा देवनन्दनक नजैर अपन ऐगला जिनगीपर पड़लैन। मने-मन सोचए लगला, रविए-रवि तँ नहि आ ने मासे-मास मुदा तीनटा जे मौसम– जार, गर्मी आ बरखा होइ छै, कमसँ-कम तहूमे आबि जँ मौसमी दबाइक संग रोगक इलाज कऽ दिऐ तँ की हमर सामाजिक सम्बन्ध बरकरार नै रहत? डॉक्टर भाय, डॉक्टर भैया, डॉक्टर काका, डॉक्टर बाबा नै कहत? जरूर कहत। सामाजिक सम्बन्धकेँ यएह डोर बान्हि कऽ रखैत अछि किने...।

जहिना सौन-भादोमे बाबा बैजनाथक डोर कँवरियाकेँ लगि जाइत। तहिना डॉक्टर देवनन्दनकेँ भेलैन।

परिवारक सिदहा आ जारैन देखि गुदरी निचेन भऽ गप-सप्प पसारि देलक। घरक बेवहार बुझल तँए गुदरी चारि हाथक साड़ी फाड़ि कऽ बनौलहा टुकड़ा लाइए कऽ आएल छेली। जारैनक बोझ-ले बीड़बाक जरूरत सेहो होइत तँए बीड़बो अनने। सुभद्राकेँ गुदरी कहलकैन-

"काकी, हमरा सबहक अपलेशन डागडर बौआ करै छथिन?"

गुदरीक बातकेँ मजाक बुझि सुभद्रा चुपे रहली मुदा शीला पुछि देलखिन-

"केहेन अपरेशन?"

"और कोन अपलेशन, उहए धिया-पुताबला।"

"होइबला आकि नै होइबला? अपलेशन केने धिया-पुता हेबो करै छै आ नहियोँ होइ छइ।"

"जहन अपलेशनसँ धिया-पुता होइ छै तहन पुरुखे लऽ कऽ की हेतइ।"

कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत फेर गुदरी बाजली- "काकी, आब तँ आबा-जाही लगले रहत। काजक अँगना छिऐ केते रंगक चीज-वौसक खगता हेतैन। नै किछ तँ देह तँ अछिए। लोकेक काज लोककेँ होइ छइ।"

दुनू परानी मुस्कियाइत गाछी ठेकना सोझे विदा भेल। जहिना धारमे सुगरकेँ घाटक जरूरत नै होइत मुदा जाएत सोझे हिआ कऽ, भलेँ केतेको बेर घुमि-घुमि आबए पड़इ। तहिना सुगर पोसनिहारोक चालि। केना नइ रहतै, जिनगी तँ सुगरे चड़बए पाछू रहल।

शीशोक झाँखियो आ मोट-मोट गोटनो देखि दुनू परानी आनन्दसँ बैस गप-सप्प करए लगल।

गुदरी बजली-

“कहुना तँ पनरह दिन चलबे करत।”

हुलन-

“सुखलो ऐछे..!”

करिया काका उठि कऽ विदा होइक विचार करिते रहैथ आकि कुसुमलाल पण्डितकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखलैन। बुझि गेला जे आब बाजार गेल नै भेल। फरिक्केसँ कुसुमलालकेँ कहलखिन-

“आबह-आबह पण्डित, तोरासँ बहुत बुझैक अछि। तूँ तँ बुझिते छहक जे काजक अँगना छी।”

मुस्की दैत कुसुमलाल कहलकैन- “हँ, से तँ छीहे?”

अँगना दिस बढ़ैत, मने-मन करिया काका सोचए लगला- कमसँ-कम घन्टा भरि बजला पछाइत मन ठंढेतै। भलेँ कौल्हुके सभ गप किए ने दोहराबए। पाँच गोरेकेँ एकठाम बैसार बनिते बजैक समए निर्धारित हुअ लगैत। कुसुमलालो तँ पाँच गोरेक बैसारमे रहैए। तहूमे अखन तँ आरो फिरिसान अछि। घरवालीक गट्टा टुटि गेल छै, एकटा बेटा भीने छै तँए ओकर अधिकार कटि गेल छइ। दोसर बेटा जे साझी अछि ओ दिल्लीमे नोकरी करैए। पुतोहुकेँ आठम मास छिऐ। तीनू जमाइयो परदेसीए तँए अपन घर-दुआर छोड़ि बेटियो केना देखत। तैपर धनकटनी, गहुमक बागु संगे बरदकेँ फाड़ लगि गेलइ। मुदा तँए कि कुसुमलालक मन खुशी नइ रहै छइ? अपन दोख हटा बेटा-बेटीकेँ जानकारी दइए देने अछि। किए परिवारक कियो दोख लगौत। बिमार रहितो बुड़ही घरकेँ थतमारि कऽ रखने छैन। धनकटनी भइये गेल। बुड़हीक पलश्तरो भइये गेलैन। बीस दिन और

बान्हल रहतैन तेकर बाद तँ दुनू बाल्टीन उठेबे करती। हिनका कोन टुटल छैन, अनका तँ जाँघ टुटि जाइ छै, छाती टुटि जाइ छइ। फेर ओकरा छुटै छै की नै? भगलाहि पुतोहु कखनो अपन माए-बापकेँ गरियबैत तँ कखनो पतिकेँ। सासु अपने रोगी। एतेक रहला पछाइतो कुसुमलालक मन हरिदम खुशी रहैत! जखन केतौ काज करए विदा होइत तँ पुतोहुक भगलपाना पर हँसैत, तँ कखनो बेटीक दिन-दुनियाँपर खुशी होइत। एते कम्मल आ ऊनी कपड़ा तँ बेटीए-जमाइक देल छी। तखन तँ तीनू बहिन आबि कऽ भेँट-घाँट कइये लेलक। इलाजो-ले पँच-पँच साए तीनू देबे केलक। तखन तँ जाबे थेहगर अछि, ताबे...।

करिया काका घुमि कऽ अँगनासँ आबि पुछलखिन- “अच्छा पण्डित, भनसियाक समाचार कहह?”

“बीसम दिन पलश्तर कटि जेतइ। मुदा अखन हम धड़फड़ाएल छी काजे भरि गप करू।”

“तोहीं बाजह?”

“कर्मक बरतन तँ नापल अछि मुदा सभसँ झनझटिया दहीक तौलाक अछि किने। सरधुआ बरतनक दसम-एगारहम दिन काज हएत। मुदा दही तँ तीन-चारि दिन पहिनहि पौड़ल जाएत तहूमे एक दिन बीतिए गेल। पाँचम-छठम दिन तौलाक काज पड़ि जाएत। माटिक बनैमे तीन दिन टेम लगै छइ। तहिना पीटैयो-सुखबैमे तीन दिन लैगे जाइ छइ। पछाइत एक दिन आबा लगत। आब हिसाब जोड़ि कऽ देखियौ जे आइसँ जँ हाथ नै लगाएब तँ काज केना सम्हरत?”

कुसुमलालक बात देवनन्दनकेँ ओजनगर बुझि पड़लैन। बजला किछु नहि, मुदा मुड़ी जे डोलबैत रहथिन से सुनैबला आकि

मानैबला, ओ कुसुमलालकेँ बुझैमे एबे ने करैत।

हँसैत करिया काका बजला- “पण्डित, तोहूँ जीवनीसँ अनाड़ी भऽ जाइ छह। रघू भैयाक काज अनकर बुझै छहक जे पुछैले एलह?”

“नइ नै से तँ नहियेँ बुझै छी। तखन तँ काजे छिऐ चारि गोरेमे चरचा भेने छुटल-बढ़ल सभ बात सभकेँ नजैरपर आबि जाइ छइ। अखन जाइ छी...।”

कहि पुन: कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल- “काजक तेहेन छिगड़ी-तान भऽ गेल अछि जे घरमे करू आकि समाजमे। सभ दिन सभ कियो एकठीन बैस कऽ जे हाँ-हाँ-हीं-हीं करैत रहलौं ओ जे आब ऐ अवस्थामे छुटि जाएत से केहेन हएत? की अखनेसँ मुरदा बनि घरमे ओझरा जाइ? के खुट्टा गाड़ि कऽ रहैले आएल अछि जे सभ दिन रहबे करत। तखन तँ जाबे घटमे पराण अछि ताबे ऐ दुनियाँक लीला देखै छी।”

करिया काका टोकलखिन- “एँह, तूँ तँ तेहेन गप पसारि देलह जे चाहो पीब बिसैर गेलौं।”

करिया कक्काक इशारा पानिकेँ आगू बढ़ाएब छेलैन। मुदा पानिक गति तँ हरिदम निच्चे-मुहेँ चलैए।

देवनन्दन आशाकेँ सोर पाड़लखिन। अँगनामे शीला बुझि गेली। आशाकेँ कहलखिन-

“बाउ, दरबज्जापर बाबूजी शोर पाड़लैन, सेहो बुझि लेब आ कए गोरे छैथ सेहो गनि आउ।”

दरबज्जाक कोणपर आशा गैनिए रहल छल कि फाँड़ बन्हने, माथपर तौनी नेने राजेसरकेँ अबैत देखि करिया काका जोरसँ बजला- “आबह-आबह राजेसर। चाह छुटि जेतह?”

चारि लग्गा फरिक्केसँ राजेसर बाजल- “करिया भैया, जहिना स्वाति नक्षत्रक अमृत रूपी जल सैकड़ो हाथ समुद्रक पानिमे टपैत सितुआक मुँहमे पहुँच मोती बनि जाइत तहिना जइ अन-पानिमे हमर अंश चलि गेल अछि ओ घुमैत-फिड़ैत हमरे लग चलि औत।”

कहि हाथ उठबैत फेर राजेसर बाजल- “दाना-दानामे लिखल अछि खेनिहारक नाओं।”

“अच्छा आबह, तोहर काज तँ आइ भोरे छेलह?”

करिया भैयाक बात सुनि चानिपर उल्टा हाथ लैत राजेसर बाजल- “भाय साहैब, केते तील ऐ गामक खेने छिऐ से नइ कहि। लोको सभ तेहेन बिजकाठी भऽ गेल अछि जे झगड़ो करूँ तँ दिन-राति कखनो छुट्टी नइ भेटत। कियो कि एक्को मिनट चैनसँ केकरो रहए दिअ चाहै छइ। घर-सँ-बाहर घरि एक्के रमा-कठोला।”

“अच्छा खिस्सा छोड़ह। काजक गप करह?”

मुस्की दैत राजेसर बाजल- “भाय, एना आन जकाँ किए बुझै छी। जखने माया-जालमे पड़ल छी तखने तँ तबाही रहबे करत किने, तँए कि समाजक काज छोड़ि देब। हमरा सबहक खुट्टा जहिना रघु भाय छला तहिना हुनकर अन्तिम काज सेहो खुट्टा जकाँ हेतैन।”

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन चौंकला। हिनका–पिता–सबहक दोहरी चालि जिनगीक छैन। जीवनक एक चालि छैन आ लोकक बीचक दोसर। जेना सौंसे गामक ठकदरूआ ई सभ होथि आ हिनका सबहक ठकदरूआ सौंसे गाम होनि..! मुदा साकांक्ष होइत तीनूक–करिया काका, कुसुमलाल आ राजेसरक–गप-सप्प धियानसँ सुनए लगला। तखने शीला तस्तरीमे चारि कप चाह नेने पहुँचली। खाली चाह देखि कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल-

“आँइ यौ करिया भैया, कुम्हारक टेमकैं अहाँ अहिना बुझै

छिऐ। जेते काल चाह दुआरे बैसलौं तेते कालमे तँ केते ने बैंक गढ़ि नेने रहितौं।”

कुसुमलालक इशारा बुझि शीला तस्तरीकेँ पतिक आगू चौकीपर रखि चोट्टे आँगन घुमि बिस्कुटक पॉकेट फाड़िते दरबज्जापर पहुँचली। बिस्कुट देखि करिया काका बजला- “कनियाँ, अहाँ पानि नेने आउ हम बिस्कुट बाँटि लइ छी।”

सोलहो बिस्कुटमे सँ पँच-पँचटा कुसुमलाल आ राजेसरकेँ देलखिन। तीन-तीनटा अपने दुनू गोरे देवनन्दन सहित लऽ दुनू गोरे दुनू गोरे दिस देखए लगला। स्वादिष्ट नमकीन बिस्कुट मुँहमे लइते राजेसर बाजल- “चारि बजे भोरेसँ भाय खटै छी। खाइयोक छुट्टी नै भेल। मुदा भगवानो तेहने अहारो देलैन। भऽ गेल भरि दिनका कोइला-पानि। दस बजे राति तलिक घुमि कऽ तकैयोक काज नहि।”

एकटा बिस्कुट खा आ एक-गिलास पानि पीब राजेसर शीलाकेँ गिलासमे पानि भरैक इशारा दैत बाजल-

“कनियाँ एक दिनक खिस्सा छी। पानियोँ बाँटू आ खिस्सो सुनियौ। एक गोरेकेँ नत-पता दइले छह कोस पएरे गेलौं। भिनसुरका चलल डेढ़-दू बजे दिनमे पहुँचलौं। थाकियो गेल रही आ भूखो लगि गेल रहए। मुदा बुड़ही जे रहथिन से महा-सोभावी! मुहसँ मधु चुबैन! जाइते गेलौं आकि अपने बिछानपर बैसैक इशारा करैत जजमान आ पसारीक गप पसारि देलैन। हमर मन तँ जरले रहए। तैयो घन्टा भरि जी-जाँति कऽ सुनलौं। तखन खिसिया कऽ कहलयैन- ‘हमरा घुमैमे अन्हार भऽ जाएत। जाइ छी।’

..तखन औगता कऽ उठि पुतोहुकेँ कहलखिन- ‘कहुना भेला तँ कुटुमक गामक नौआ भेला। चाहो-पान नै खुएबैन-पिएबैन, से केहेन हएत...।’

मनेमे आएल जे ई सभ गामोमे परदेसीए छैथ। शहरमे रहैत-रहैत मूस जकाँ समाजोक जालकेँ काटि रहल छैथ। चाह पीब पान खा ओतै विचारि लेलौं जे झाड़ा-झपटा कमले पेटमे करब। किरिण डुमिते जँ पुबरिया छहर टपि जाएब तँ दोसर-तेसर साँझ धरि गाम पहुँचिये जाएब। बटखर्चा-ले पाँचटा रुपैआ देने रहैथ भूखे छटपटी धेने रहए। कमला धारक ठंढेलहा पानिमे जहाँ पएर देलिऐ आकि पैखाना सटैक गेल। मुदा लघी लगि गेल। पुबरिया छहर टपि झंझारपुर बजारमे तीन रुपैआक छोला-मुरही खेलौं, पानि पीलौं तखन जान-मे-जान आएल।”

बिच्चेमे कुसुमलाल टोकलकै- “कोन गपमे बौआइ छह राजेसर भाय, काजक गप करह।”

बिस्कुट खा पानि पीब चाहक गिलास हाथमे लैत राजेसर शीलाकेँ कहलैन- “कनियाँ, जँ बिस्कुटे खुएबाक छेलए तँ पहिने पानि बिस्कुट अनितौं। एक तँ वेचारी अपने बेइज्जत भऽ चाहसँ पानि भऽ गेल। तैपर सँ हमहूँ सभ केते बेइज्जत करबै।”

राजेसरक बात सुनि एक लाड़ैन चलबैत देवनन्दन बजला-

“बेइज्जतीक वोनमे नम्हरे बेइज्जतक इज्जत होइत!”

काजकेँ देखैत करिया काका गपक रस्ता बदलैले बजला-

“कनियाँ, राजेसरकेँ भाँड़ी जकाँ एहेन गिलासमे नहि पौआही गिलासमे चाह दैतिऐन। अच्छा, राजेसर आइ तँ गाछीएमे कर्म हेतइ?”

अपन काज अगुआएल देखि राजेसर बाजल- “भाय, औझुका गप की कहूँ। एक तँ तेहेन-तेहेन सिफलाहि मौगी सभ गाममे चलि आएल अछि जे होइए जे झब-दे मरि जाइ जे एहेन-एहेन मनुक्ख सभसँ पिण्ड छूटत।”

"से की?"

"की पुछै छी। पहिलुके नीन रहए। करीब एगारह-बारह बजे रातिक बात छी। गोपला घरमे आगि लगि गेलइ। ओकरे मिझबैमे दू-बाजि गेल। सौंसे देह थाल-कादो सेहो लगि गेल रहए। ओकरे धोइत-धाइत तीन बजि गेल। ओछाइनपर एलौं आकि औझुका काज सभ मोन पड़ल। छुतकाबला केश कटैक अछि। खबैर दइले पुरहित-पात्र ऐठाम जाइक अछि। तैपर सँ परसुए जुगेसरा कहि देने रहए जे कनी केशो नीक जकाँ छाँटि दिहह आ बरियातियो चलिहह।"

करिया काका टोकलखिन- "अखन लगन कहाँ छइ?"

राजेसर बाजल- "अहाँ कोन जुग-जमानाक गप बजै छी भाय। कियो जे कोटमे बिआह करैए से लगन देखि कऽ? तहूमे की जुगेसराक बिआह हेतै आकि चुमौन करत।"

"केहेन कनियाँ छइ?"

"एह हद भेल भाय। कन्याँ बच्चोकेँ कहल जाइ छै आ सासुरो बसनिहारिकेँ। जुगेसराकेँ तेसर छिऐ आ कनियाकेँ चारिम।"

"दुनू तँ उड़नबाजे बुझि पड़ैए?"

"भाय, मनुक्खमे सभ गुण होइ छइ। पालतुओ चिड़ै वोनाए जाइ छै आ वोनेलहो चिड़ैकेँ पकैड़ पोसा बना लैत अछि।"

चाहक गिलास हाथसँ पकड़ैत राजेसर शीलाकेँ कहलकैन-

"कनियाँ, काकीकेँ सभ बुझले छैन। हुनका हमर नाओं कहि देबैन। डालीक ओरियान करती। जाबे तक छौरझप्पी नै हएत ताबे तक गाछीएमे पुजौल जाएत।"

शीला आँगन जा सासुकेँ कहलैन। दरबज्जापर सभकेँ चुप देखि राजेसर देवनन्दनकेँ कहए लगलैन- "डाकदर साहैब, हमर काज, नौआबला काज पहीले दिनसँ शुरू भऽ जाइए। काजो दोहरी।

एक दिस पुजबैक परकिरियामे डाली सजौनाइ, दोसर दिस कठियारीबला सभ परातेसँ केश कटबए लगैत अछि। ई तँ एकटा काज भेल। जँ गाममे एकटा काज हएत तखन, नै जँ दोहरा-तेहरा गेल तँ काजो दोहरा-तेहरा जाइए, तैपर सँ जन्मौटी छुतका भिन्ने। केते दिनसँ मनमे होइए जे एकटा नाङैर दुआरपर रखितौं से पारे लगब कठिन अछि। एमहर सराध-कर्ममे मात्र छहअना हिस्साक भागीदार छी। ऊपरसँ किछु निछौर– झलफाँफी धोती, माटिक बरतन आ किछु हथ-उठाइ भेटैए।"

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन तरे-तर सर्द हुअ लगला! आँखि उठा करिया काकापर देलैन। करिया काका राजेसरक मुँह दिस तकैथ। जेना रसगुल्ला खसतै आ लपकता। रसगुल्ला तँ नै एलैन मुदा रसगुल्लाक रस जरूर आबि गेलैन। मुस्की दैत बजला- "राजे, जे बेसी मनुक्ख-ले खटत आ कम-सँ-कममे अपन जिनगी चलौत ओकरासँ बेसी इमानदार ऐ घरतीपर के अछि? धरमक एकटा बाट तँ इमानो छिऐ किने!"

मने-मन देवनन्दन तँइ केलैन जे पिताक कर्म करौनाइ हमर जिम्मा छी। जे कोनो काज हएत ओकर नीक-अधलाक भागी तँ अपने हएब। गाममे जेतए जे होइ छै हौउ। मुदा अपना ऐठाम एहेन अनुचित नै हुअ देब।

फेर मनमे शंका उठलैन जे ऐ बातकेँ पुरबासय केना कएल जाइ? पूर्वाशयक अर्थ तँ पूर्ब+आशय होइत मुदा समाजक अधिकांश लोकक कानमे जे रहै छै ओकरा की मानल जाए..?

रंग-बिरंगक तर्ककेँ मनमे उठैत देखि सोचलैन जे दुनू पार्टी माने पुरोहित-नौआक बीच काजक सम्बन्ध अछि। सझिया काजक फल तँ सझिया होइत। मुदा केते साझी आ तेकर की अधार? से नइ तँ दुनू गोरेमे करैथ। सोझक जे निर्णए दुनू गोरे करता तँ हमरा मानैमे

की लगत। मन असथिर भेलैन।

चारिम दिन। गाछीमे छौरझप्पीक पछाइत कर्म सम्पन्न भेल। शंकरदेव गाछीएमे भोजन कऽ नेने छला। करिया काका हाथमे कोदारि नेने आगू-आगू आ पाछूसँ शंकरदेव, देवनन्दन आ तइ पाछू परिवारक सभ कियो–तीनू भाइयो-बहिन आ सासुओ-पुतोहु आँगन एली। आँगन अबिते सभकेँ बुझि पड़लैन जे जेना आगूए-आगू रघुनन्दन आबि गेला। हुनके बनौल घर-दुआर, पानिक चापाकल इत्यादि छिऐन। जेना सभ किछुमे सन्हिया गेल छैथ। जँ हुनकर घराड़ी स्मारक बनैन तँ सभ दिन ओइ स्मारकमे दर्शन दैतैथ।

मने-मन पिताकेँ स्मरण करैत देवनन्दन संकल्प लेलैन जे पिताक देल जे किछु अछि ओ ऐ समाजक छिऐ। हम तँ अपने तेते कमाइ छी जे गामो अबैक छुट्टी ने होइत अछि। बेटी सासुर जाएत। बेटो केतौ नोकरी करत। की बाप-दादाक देल सम्पैत हम आनठाम दऽ अबिऐ? तखन गामक मनुक्ख अनतए जा भलेँ अपनाकेँ अगुआ लैथ मुदा गाम तँ तरका जाँत जकाँ पड़ले रहि जाएत! चलत कहिया? जँ दुनू-चक्की मिलक चक्की जकाँ चलए लगए तँ की गहुमक आँटा नै पीसल जाएत? जरूर पीसल जाएत। पिताक देल सम्पैतक जे आमदनी अछि ओकरा भोजमे आ अपना दिससँ गरीब बच्चाकेँ पाँच हजार रुपैआक पोथी, पाँच हजार रुपैआक दबाइ समाजक बीच पिताक मृत्युक दिन उपहार स्वरूप देब। ओना, ऐसँ खुशीक बात ई हएत जे पिताक जन्मे दिनक तिथिपर साले-साल दिऐ जे बच्चा सबहक संग-संग सभ दिन खेलैत रहता। किएक हुनकर मृत्यु शरीरकेँ मृत्यु बुझिऐन? मुदा हुनकर जन्म-कुण्डली तँ नै भेटत? स्कूल गेबे नै केलाह। तखन की करब? मनमे नव उत्साह जगिते डॉक्टर देवनन्दन करिया काकाकेँ कहलखिन- "काका अहाँ सभ एक-बतारी छी, हमरासँ बेसी देखने छेलिऐन। अखने बैस कऽ

ऐगला कर्मक विचार कइये लेब। शंकरो भाय छैथे।"

देवनन्दनक बात सुनि, अपन आमदनी शंकरदेव देखलैन। मनमे गुद-गुदी लगलैन। पानक पीत फैकैत बजला- "बेजाए कोन। अखन सभ समटाएल छी फेर समटैमे समए लगत। तेते करिया काका ठेल-ठेल कऽ खुऔलैन जे आराम करैक मन होइए।"

अपन चाबस्सी सुनि करिया कक्काक नजैरमे रघुनन्दन नाचि उठलैन। खेतक आँड़िपर बैस गपक संग-संग तमाकुलो खाथि। मोन पड़लैन गुनाक गीत। तहियाक छीतन आइयो संग-संग अछि। मोन पड़लैन समाज। आइ जे समाज एक भऽ भाय-साहैबकेँ विदाइ देलैन। की ई उचित होइ जे गामसँ लऽ कऽ आन गाम धरिकेँ खाली अपन जातिकेँ भोज खुअबैए आ गामेमे ओहन समाजक बच्चा दिस तकबो ने करैए, कनैत छोड़ि दइए, जे बेर-विपैतमे हरिदम लगमे रहै छै..? जेते खुशी शंकरदेवक बात सुनि भेलैन तइसँ बेसी कचोट मनमे उपैक गेलैन। बजला- "जखन तेरहे दिनक बीच काज नापल अछि तखन तँ अधिक-सँ-अधिक समाजक उपयोग होएब जरूरी अछि। हम सुन्दर भायकेँ बजौने अबै छिऐन।"

कहि करिया काका विदा हुअ लगला। आकि देवनन्दन रोकलखिन- "अहाँ कोदारि पाड़ि कऽ एलौं हेन, आशाकेँ पठबै छिऐ।"

देवनन्दनक बात सुनि करिया काकाकेँ हँसी लगलैन। बजला-

"डॉक्टर साहैब, आशा जा कऽ की कहतैन?"

"बजबै छैथ।"

"कथीले?"

देवनन्दन चुप रहि गेला। करिया काका बजला- "जँ भैया बुझैथ जे कोनो छोट-छीन काज हेतै तखन तँ अपन नमहर काजकेँ

सम्हारि औता। तँए अपने जाइ छी।"

करिया काकाकेँ विदा होइते शंकरदेव दयानन्दकेँ कहलखिन-

"बाउ, एक लोटा पानि पिआउ। हमरो अहाँक परिवार कोनो बाँटल अछि अहाँक मात्रिक बरियाती हमहूँ गेल रही। अहाँ सभ तँ परदेसी भेल जाइ छी। हमरा ओहिना मोन अछि उपनयनसँ तीन दिन पहिने दालि-भात, तरूआ तरकारी, दही-चीनी खेने रही। अहीं सबहक अन्नपर हमहूँ सभ ठाढ़ छी...।"

पानि पीब कऽ–

"अखन दुइए गोरे छी, तँए कहै छी। पुजबैत-पुजबैत हमरा सबहक परिवार निच्चाँ-मुहेँ ससैर गेल। अपने बात कहै छी। राजविराजसँ तीन कोस आगू तक बाबूकेँ जजमैनका रहैन। जखन ओइ इलाका जाइ तँ मास-मास दिन परदेशे जकाँ रहि जाइ। सेवा खूब हुअए। खेनाइ-पिनाइक कमी नहि। हमरा तँ एतएसँ नेपाल धरि ने धाँगल अछि। अपना सभ तँ कनी हटल छी तँए, नइ तँ जेना-जेना उत्तर-मुहेँ जेबै तेना-तेना बाजब-भुकब, खेती-वाड़ी, माल-जाल मिलल-जुलल देखबै। कथा-कुटमैती, भोज-काज ऐपार-ओइपारमे होइते अछि। सीमाकातमे ऐ भागक लोक ओइ भाग जा हाट-बजार करैत अछि आ ओइ भागक ऐ भागमे। हँ, तइसँ आगू जेना-जेना बढ़बै तेना-तेना पानियोँ आ बोलियोमे अन्तर बुझाएत। तेकर कारण अछि उत्तरबरिया पहाड़। बाबूकेँ खूब आमदनी होइन। भरि-भरि दिन भाँग खा दरबज्जापर बैस तास खेलल करी। "लघु-सिद्धान्त" पढ़ैमे एगारह बरख लगल रहए। मुदा बाबूक संग पुरैत-पुरैत अपन जीविकाक सभ लूरि भऽ गेल। पढ़ैमे मझिला भाए चन्सगर। खूब पढ़ि कऽ नीक नोकरी करै छैथ। कहि देलैन जजमैनकासँ हमरा कोनो मतलब नहि, हम मेहनत करब आ मेहनतक अन्न खाएब। तखन धिया-पुताक संस्कार तेज हएत। सभसँ छोटका बकनाएल

अछि। दिल्लीमे भाए नोकरियो धड़ा देलकैन तँ तेते कमाथि जे पेटो ने भरैन। मुदा समाजमे प्रतिष्ठा बनौने छैथ।”

प्रतिष्ठाक नाओं सुनि दयानन्दक मनमे भेलैन जे एक दिस कहै छैथ जे बकना गेला आ दोसर दिस प्रतिष्ठितो छैथ? मनमे अचरज भेलै आँखि-मे-आँखि गड़ा पुछलकैन- “की प्रतिष्ठा?”

दयानन्दक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझि शंकरदेव बजला- “बौआ, अखनो अधिक खेनिहार लोककेँ प्रतिष्ठित मानल जाइत अछि। एते दिन ई प्रतिष्ठा भोज-काजमे भेटै छेलै, आब घरे-घर भऽ गेलइ। हम केतेक रुपैआ खेनाइपर खर्च करै छी, अहिक भीतर प्रतिष्ठा आबि गेल अछि। भलेँ हजार रुपैआ प्रतिदिन परिवारक भोजनमे खर्च किए ने करैथ मुदा समाजक लोक जँ डेरापर आबि जेता तखन या तँ गेट खोलि भेँटे नै देबैन आ जँ भेँटो देबैन तँ गामक- हाल-चाल पुछि कहबैन जे पत्नी नोकरीपर ड्यूटीमे छैथ तँए डेरामे चाहो पिआएब मोसकिल अछि। वेचारा हाले-चाल की कहतैन। ने जिनगीक भेँट आ ने एकठाम रहैबला...। हँ, तँ कहै छेलौं अपन भाइक विषयमे, साल भरिसँ महंथ भऽ गेल अछि। देखलिऐ तँ नै मुदा सुनै छी अपनो चिट्ठीमे केताक बेर लिखलक हेन। ओना, भाए छी आगि नै उठेबै, नअ-दस माससँ लत्तो-कपड़ा आ हजार रुपैआ महिनो पठबैए। मुदा आफद की एकटा अछि। साल करीब भऽ गेलैन। कनियाँ एतै छथिन। एकटा बच्चो छैन। फोन केलिऐ जे दसो दिन-ले गाम आबि बालो-बच्चाकेँ असिरवाद दऽ दहक। आब तँ तोँ महंथ भऽ गेलह।”

देवनन्दन दिस मुँह घुमबैत शंकरदेव मुस्कियाइत बजला-

“भाय, की जवाब देलक से बुझलिऐ, कहलक जे स्थानक की हमरा खतियान बनल अछि। भरि-दिन-भरि-राति केतौ रहू मुदा साँझ-भिनसर घड़ी-घण्ट बजा आरती गबै पड़त। मुदा आब चढ़ौआ

सभ सेहो हुअ लगल हेन। भरि गाम-घरक स्त्रीगणसँ लऽ कऽ बजार धरिक जनीजाति सदिकाल अबिते रहैए।"

देवनन्दन कहलखिन-

"भावोओकेँ ओतै पठा दियौन।"

शंकरदेव बजला-

"से तँ अपनो लिखैए जे विदागरी करि कऽ नेने अबियौन। मुदा एकटा आफत रहए तब ने आफत-पर-आफत अछि। एक तँ कनियाँ जाइले नै गछै छैथ। केना उपकैर कऽ घरसँ विदा कऽ दिऐन। मुदा बात एकेटा नै अछि दोसरो अछि। एक बेर बिआह-पंचमीमे नैहरक संगी-संगे जनकपुर गेली। लोकक ठठ्ठ, दिन-राति यात्री एमहरसँ ओमहर नचिते। एकठाम एकटा नंगा स्थान लग बिजली कटि गेलइ। जहाँ-तहाँ लोक अपन संगी छोड़ि यात्री सभमे हरा गेल। हमरो भावो हरा गेली। ले बँगौर! रौतुका हराएल दिनोमे ने गौंआँ भेटलैन हिनका आ ने ई भेटलखिन गौंआँकेँ। मुदा हेराएल नै छेली, वौआएल छेली। सभ यात्री तँ अपने इलाकाक रहै किने। नानी गामक संगी भेटलैन। जहिना धारमे बाँस आकि रस्सी पकैड़-पकैड़ लोक पार होइए तहिना वेचारी नानी गामसँ मेहमानी करैत सात दिनक पछाइत गाम एली। से मन उड़ल छैन।"

रस तकैत देवनन्दन पुछलखिन- "सभ स्त्रीगण शहर जाए चाहैत अछि अहाँ उनटे कहै छी?"

मुस्की दैत शंकरदेव- "एँह भाय! अहूँ अनाड़ी जकाँ बजै छी, अपन जे मिथिलांचल अछि ऐ क्षेत्रमे तँ केतौ लोक मैथिली बाजि जिनगी गूदस कऽ सकैए। मुदा जैठाम भाषाक दूरी अछि, जीवन-शैलीक दूरी अछि तैठाम की गिरगिट जकाँ सात बेर जिनगी बदैल सकैए? रहल बात जीबाक उपाइक। तँ की जैठाम मनुक्ख रहत

ओइठाम कोनो वस्तुक उत्पादनक जरूरत नै अछि? की हमरा सभकेँ शिक्षा आकि दबाइक जरूरत नइ अछि, भोजन-वस्त्रक जरूरत नइ अछि? मनोरंजनक जरूरत नइ अछि आकि कला-संस्कृतिक जरूरत नइ अछि? मुदा ई के करत? जेकर छिऐ से बोहु लऽ लऽ शहर घुमैए तँ की सोझे सीते भूमि कहने अयोध्यासँ राम औता? मुदा छोड़ू दुनियाँ-जहानकेँ। अखन जे काज सोझहामे अछि पहिने तेकरा देखू...।

हँ, तँ जाधैर करिया काका आ सुन्दर काका नै पहुँचला, तैबीच एकटा आरो कहि दइ छी। राज-विराजसँ तीन कोस उत्तर धरि हमरा बाबूकेँ जजमैनका छेलैन। लोकोक धारणामे सराध-कर्मक महत बेसी छल। जइसँ आमदनियोँ नीक होइन। अखुनका जकाँ जिनगियो फल्लर नै छेलइ। लोको बेसी बिसवासू। आँखि देखा कऽ केकरो कियो बेइमानी नै करैत। जहाँ-तहाँ बाबूओ अपन समान, बरतन-कपड़ा रखि देथिन, ओना, कपड़ाक केते जरूरते परिवारमे रहै छल, जइसँ राजसी ठाढ़मे जीवन बितौलैन। जखन मुइला तखन चारू दिससँ भूत पकैड़ लेलक। भाय कहलैन जे नोकरीए करब। अपन परिवार लऽ कऽ चलि गेला। काजे-उदममे पाहुन जकाँ अबै छैथ। दोसर, छोटजनक कहबे केलौं जे गामक फेदार मोरगंक दफेदार भऽ गेल अछि। सुनै छी जे भरि-भरि दिन नानीक सिखैलहा खिस्सा सभ मौगी सभकेँ सुनबैत रहैए। खाएर, किछु करह। हमरो तँ कपार नहियेँ चटैए। आब की भऽ गेल अछि जे अल्लापुरक सभ जाति अपने-अपने पुजबए लगल। जजमैनका घटि गेल। अल्लापुरक देखौंस सीमो-कातक गाम सभ करए लगल हेन। रहैत-रहैत पाँच गाम बँचल अछि। ओना, आब नवका जजमान- मारवाड़ी सेहो बढ़ल हेन। पाइबला पार्टी।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछलखिन- "ओ सभ अपन छोड़ि देलक?"

"अपनो धेनइ अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ वेपारी भऽ गेला। पुजेगरी कहाँ अछि। एक बेर पान खुआउ...। गामक खेल-तमाशा देखि मन कनैत रहैए मुदा तैयो जे ठोरपर पछबा लहकी देखै छिऐ तँ तामसो उठैए। ओना, सभसँ भला चुप। ने किछु बजै छी आ ने केकरो किछु कहै छिऐ।"

पान मुँहमे लऽ कनी काल गुलगुला कऽ पीत फेकैत शंकरदेव फेर बजला- "भाय, छह माससँ निचेन भऽ गेलौं। मुदा दियादवादक जे दशा-दिशा देखै छिऐ तइमे होइए जे भगवान हमरो ऊपरमे तकै छैथ।"

बिच्चेमे देवनन्दन पुछि देलखिन- "से की?"

'से की' सुनिते शंकरदेव बजला- "भाय-साहैब सभ तेहेन रस्ता पकैड़ लेलैन जे चिन्ता मेटा देलैन। मझिला भाए जे नोकरी करै छैथ, ओ गामपर सभतूर आबि बलजोरी दुनू भाँइकेँ लऽ गेलखिन। की कैहतिऐन। अपनो बुझै छी जे दिनानुदिन जीविका घटले जा रहल अछि। तहन तँ सभ दिन समाजक बीच रहलौं तँए आब ऐ उमेरमे केतए जाएब। जाधैर समाज जीबैए ताधैर कहुना-ने-कहुना बहिते रहब। मुँहपर तँ नइ मुदा पत्नी लग भावो बजली- 'उसरागा खाइत-खाइत सभटा उसरन भेल जाइए। हमरा की लोक नै दुसत जे बाप-पित्ती बड़का हाकिम छथिन आ बेटा-भातीज दसखतो करै जोगर नै भेलखिन।' कहि दुनू भाँइकेँ लऽ जा अपने लग अफसर सबहक जे स्कूल छै तइमे नाओं लिखा देलखिन। छोटका भाए हरिदम फोन करैत रहैए- 'हमरा तेते चढ़ौआ होइए जे केतए रखब। उठा-उठा लऽ लऽ जाउ।' मुदा गाड़ीमे चलैत डर होइए। तेते छिना-झपटी, निशाँ-खुऔनी हुअ लगल अछि जे हमरा बुत्ते तीस घन्टा गाड़ीमे बैस दिल्ली पहुँचल हएत। मुदा तैयो अनका-अनका दिआ तेते चीज पठबैत रहैए जे कोनो चीजक कमी नै अछि। संतोष एते

भऽ गेल जे कियो अपन बाप-माइक किरिया-कर्म करैत अछि तैबीच हम किए डाक-डकौवैल करिऐ। पूर्वज सभ तँ तीन श्रेणीक सराध कर्म तँइयेँ कऽ गेल छैथ। जेकरा जइ तरहक विभव रहै छै ओ ओइ तरहक कर्म करि एकलोटा पानि तँ पूर्वजकेँ दइए दइ छैथ। मुदा लोकोमे छल-प्रपंच छइ। जँ करै छी तँ श्रद्धापूर्वक करू नइ तँ ठकि कऽ पिण्ड कटौने नै हएत। तहिना हमहूँ करै छेलौं। दियादवाद अखनो करिते छैथ जइसँ दशो तेहने भेल जाइ छैन। गामेमे वेदान्ती काका छैथ। वेचारा अपन जिनगी अपना ढंगसँ बना नेने छैथ। ओना, ओ लोअरे-प्राइमरी स्कूलमे गुरुआइ करै छैथ, गामेक स्कूलमे। मुदा अप्पन क्रिया-कलाप छैन। जहिना किसान काजकेँ दू उखड़ाहा–भिनसरसँ बारह बजे आ दू बजेसँ सूर्यास्त धरि, बँटने छैथ। तहिना स्कूलमे दुनू उखड़ाहा पढ़बै छथिन। दरमाहा भेटलैन आकि नै तेकर कोनो चिन्ता नहि। किछु ऑफिसक किरानी ठकि कऽ खाइ छैन तँ किछु बैंकक, तहिना कहियो कियो नाँगट देह आ बच्चाकेँ पोथी-कॉपी देखा मांगि लइ छैन, तँ कहियो बैंकक चारू भाग मरड़ाइत लुच्चा सभ झोड़ा छीन लइ छैन। मुदा ने कहियो काकी मुँह उठा हिसाब मंगै छथिन आ ने अपने केकरो कहै छथिन। मन पुष्ट रहै छैन जे अपनो तँ जीबते छी, तहन अनेरे घरमे रखि कऽ की हेतइ। कातिक मासमे 'कार्तिक महात्म्य' बरहम स्थानमे बैस कऽ सभ साल सात दिन धरि समाजकेँ सुनबै छथिन, तइमे तेतेक कपड़ा भऽ जाइ छैन जे सालो भरि दुनू परानी बिनु सुइया भिरौल कपड़ा पहिरै छैथ। दूध खाइले गाइये पोसने छैथ। ओना, खेती अपने नै करै छैथ। गाममे दू कट्ठा वाड़ी छोड़ि घराड़ीएटा छेबो करैन। पिता जजमैनका पुजबैत रहथिन। गामे-गामे जे जजमान दानमे खेत आ आमक गाछ देने छैन वएह तेते आबि जाइ छैन जे दू-सलिया-तीन-सलिया चाउर सेहो पथ्य-पानिले रहै छैन। आदतो तेहेन रखने छैथ जे केकरोसँ मंगैक

काज नहि। आजुक छौड़ा सभ जकाँ नै ने जे- बाबा, कनी खैनी खुआउ। पचास गाछ तमाकुलक खेती अपने हाथे-बुधिये करै छैथ। काकी गाइयेक पाछू बेहाल रहै छथिन। जहिना एक बहिन दोसर बहिनक माथमे केश बिहिया-बिहिया ढीलो तकैत आ नीक-अधलाक गप्पो करैत तहिना गाइक संग काकी लगल रहै छैथ। जहिना तमाकुलो अपने हाथे उपजबै छैथ तहिना चूनो अपनेसँ बनबै छैथ। दियादमे जखन हुनकापर नजैर पड़ैए तँ स्वत: नजैर निच्चाँ भऽ जाइए। मुदा ओहीठाम दोसर छैथ जिनका घराड़ी दुआरे एक्के अँगनामे सोरेक-सोरे धिया-पुताक संग तीन भाँइ छथिन। भोर होइते तीनू महाभारत शुरू कऽ दइ छैन! तीनू दियादनियोँ तीन परगनाक छथिन। एकटा अल्लापुरक, दोसर भौरक आ तेसर– गंगा ओइ पारक, मगहक छथिन। तीनू जे तीन सुर-तानपर गारिक गीत गाएब शुरू करै छथिन, तखन बुझि पड़ैए वृन्दावनमे छी आकि लंकाक पुष्प-वाटिकामे..।”

मुस्की दैत- “केते कहब भाय, अपने लाज होइए। एकटा छौड़ा अछि लक-लक पतरे। झोंटा जकाँ केश रखने अछि। सभ दिन मोछ-दाढ़ी कटैए। छींटबला घुट्ठी लग तक अँगा सिऔने अछि। पएरेमे सटल चुस्त पैजामा पहिरैत अछि। एक गोरेक काज रहए, देखलिऐ तँ धोखासँ कहा गेल के छिऐँ गे। से की पुछै छी जेना बिढ़नी छत्तामे गोला फेक देने होइऐ तहिना गनगनाए कऽ मुहेँ-काने की कहलक तेकर ठेकान नहि। सभसँ चोट एकटा बातक लगल कहलक मनुक्खक झर कहीं-के।

मुदा लगले मुहसँ हँसी फुटलैन आगू बजला-

“आँखि उठा कऽ देखै छिऐ ने भाय तँ बुझि पड़ैए जे सभटा बुड़ि-मुहाँ भँसि भँसि आएल अछि। तेहेन-तेहेन कुरेर सभ जन्म लऽ

लेलक हेन जे कुल-खानदानक नाक कटौत, की कान कटौत, की घराड़ीकेँ भँट्टाक खेत बनौत से नइ कहि। एकटा दियाद छैथ जिनकर लम्बाइ चारि फीट हेतैन आ चौराइयो तहिना। चँगेरा भरि चूरा, अधमन्नी तौला दहीकेँ एक्के सुरकानमे सीमा टपा दइ छथिन। चूरा-दही तेहेन चुहैट पेटकेँ पकड़ने छैन जे हरिदम पेटेटा सुझै छैन। घर गिर पड़लैन। केते खुशामद करि कऽ 'इन्दिरा आवास' दिआ देलिऐन। ले बँगौर ओहो चाटि लेलैन आ अखन खिचड़ी खाइ छैथ। केते कहब भाय।"

सुन्दर काकाकेँ संग केने करिया काका पहुँचला। तखने लेलहा सेहो कुरहैर लेमए आबि करिया काकाकेँ कहलकैन-

"आब तँ तीन दिन कोदारि, कुरहैर, टेंगारी जहल कटलक। आबो छोड़बै की नै? साते दिनमे जारैनकेँ सुखाएबो छइ।"

लेलहाक बात सुनि करिया काका चुपे रहला। मुदा सुन्दर काका लेलहाक मुँहक बात छिनैत बजला-

"कारी, पढ़ुआ भायकेँ बजा अनियौन। गाममे सभसँ बेसी गुल्ली-पेंच वएह करै छैथ।"

सुन्दर कक्काक बात सुनि करिया काका पढ़ुआ भाय ऐठाम विदा भेला। जखनसँ लेलहा सुन्दर कक्काक-मुहेँ 'गुल्ली-पेंच' सुनलक तखनसँ गुल्ली-पेंचक अर्थ बुझैले मन लुस-फुस करए लगलै। मुदा काजक गप सुनि अपन प्रश्नकेँ पेटमे दबने रहए। मुदा तैयो पेटमे उधकै। होइ जे कखन बाहर निकलब। बाँस भरि करिया काका आगू बढ़लैथ आकि लेलहा पुछलकैन-

"सुनर काका, 'गुल्ली-पेंच' केकरा कहै छइ?"

लेलहाक प्रश्न सुनि सुन्दर कक्काक पेट-गोंगियाए लगलैन मुदा पहिले मुहराकेँ रोकैत शंकरदेव सम्हारि लेलैन। बजला- "देवनन्दन

भाय, लेलहा समाजक खुट्टा छी। वेचाराकेँ ऐ उमेरमे कहीं एहेन देह रहितै। देखै छिऐ, जहिना कोसी बाढ़िमे नव-गछुली कलम-गाछी सभ पतझाड़ लऽ कऽ भऽ जाइए तहिना वेचाराकेँ छुच्छे पतरका-पतरका डारि जकाँ देहक हाड़ झकझक करै छइ। समाज की? समाजरूपी घर की? समाजरूपी घर वएह जइमे सबहक सझिया होइ। आब प्रश्न उठैए काज-पर-काज तँ ढेरो तरहक अछि, समाजक काज की बुझल जाए? ऐ प्रश्नक उत्तर विकास-परकिरियामे अछि। मुदा मूल प्रश्न अछि सभ मनुक्ख मनुक्ख छी तँए सबहक दुख-सुख सझिया हुअए।”

शंकरदेवक बात सुनि सुन्दर काका उफैन पड़ला। जहिना रौद लगिते ताड़ी घैलमे फेना-फेना निच्चाँ खसैत तहिना सुन्दर कक्काक मुहसँ खसए लगलैन-

“लेलहू, तूँ सभ लगले बिसैर जाइ छह मुदा हमरा तँ जुग-जुगक बात मोन अछि। श्यामसुन्दर माइक सराधक भोजमे देखने रहक ने जे पच्चीस गामक पंच केना दरबज्जापर सँ लऽ कऽ अपना अँगना धरि गरियौलकैन। केकर केलहा रहए? वएह पढ़ुआ भाय भनसियाकेँ फुसला कऽ गाँजा पिआ, हकिमानी करए लगला। तरकारी-दालिमे जखन नोन दइक बेर भेलै तखन बोरे देखा देलखिन।”

सुन्दर कक्काक बात सुनि ठहाका मारि लेलहा बाजल-

“हँ, यौ काका। पाछू हमहूँ बुझलौं।”

“धुर्र बुड़ी, तेहेन छुछुनैर छैथ जे ओतबे केलैन। देखने रहक किने जे पुलकितक बेटी-बिआहमे केहेन मारि करा देने रहथिन। कोनो अनकर किरदानी रहै, जे कि ओही बीचमे घोघटाही साड़ीकेँ दुसि देलखिन। हुनके बातपर ने जनिजाति सभ झगड़ा ठाढ़ केलक।

अन्तमे देखबे केलहक...। तँए एहेन-एहेन बुधिकनाह लोकसँ सम्हैरिए कऽ रही। कखन की कऽ देतह तेकर कोनो ठीक नहि। एहेन-एहेन लोक एतबो ने बुझैए जे अपन काज अनको-ले होइ। हरिदम अनकर हिस्सा अपनबैमे लागल रहैए। सोझहेमे तँ कुल-पुज बैसले छैथ। इएह बाजौथ?"

सुन्दर भाइक प्रश्न सुनि शंकरदेव सकपकेला नहि, असथिरसँ बजला-

"देखू, किछु दिन पहिने तक हमरो चालि ओहने छल मुदा आब ओ सभ छोड़ि देलौं। केकरो चुगली-चालि केने हमरा की भेटत? एतबे ने होइए जे नकलीसँ सावधान? मुदा आब जेते कालमे नकलीसँ सावधान करब तेते कालमे असलीएकेँ ने किए आरो असली बनाएब। सुन्दर भाय, जहियासँ भाए सभ कुल-खनदानक घराड़ीकेँ चिन्हलक, तहियासँ सभ दुख पड़ा गेल। किछु दिन पहिने धरि हमहूँ आन-आन सराध-कर्मक उदाहरण दऽ दऽ जजमानसँ अधिक झाड़ै छेलौं मुदा आब से सभ छोड़ि देलौं। सभ अपन-अपन भार उठा लेलैन जइसँ हमहूँ उठि गेलौं। आब बुझै छी जे जाबे कियो करै छैथ अपन बाप-माइक करै छैथ, तइमे किए जोर दिऐन? जहियासँ विचार बदलल तहियासँ जिनगियो बदलल। गारियो सुनब कमल। तेहेन-तेहेन झनाठी बच्छा सभकेँ दागि कऽ साँढ़ बनौल गेल जे गाइक खाढ़े चौपट्ट भऽ गेल। जइसँ ने नीक बच्छा आ ने नीक बाछी गाममे रहल। वाड़ी-झाड़ी चड़ैबला साँढ़ भऽ गेल अछि। हरिदम लोक नाओं धऽ धऽ सोझहेमे गरियबैए जे "हैया शंकरबाबा पहुँच गेला।" मुदा रच्छ रहल जे जहिना-जहिना नवका-नवका लोक सभ भेला, तहिना-तहिना नव-नव काजो कऽ रहला अछि। हिनके सबहक परसादे तँ एहेन-एहेन सुन्दैरो आ दूधगैरो गाए सभ गाममे आबि गेल। नवका-नवका मशीन सभ सेहो आबिए रहल अछि।"

बिच्चेमे देवनन्दन दयानन्दकेँ कहलखिन-

“बौआ, चाहो-ताहोक...।”

दयानन्द आँगन जा माएकेँ कहलक। एमहर पढ़ुआ कक्काक संग करिया काका पहुँचला। पढ़ुआ काकाकेँ शंकरदेव हाथक इशारासँ अपने लग बैसैले कहलखिन। मुदा लेलहाकेँ अपन पैछला बात मनमे नाचए लगलै। बात ई जे गाछपर एकटा लुक्खी पकड़लक। जाधैर धड़ पकड़ने रहए ताधैर तँ लुक्खी हाथमे रहलै। मुदा नाङैर पकैड़ते लुक्खी पड़ा गेल। लेलहाक हाथमे नाङैरक रोइयेँटा बँचि गेलइ। पछाइत अपना नजैरेपर लेलहाकेँ शंका हुअ लगलै। कखनो बामा हाथसँ आँखि मिड़ै तँ कखनो दहिना हाथसँ। मुदा तैयो मन मानबे ने करै जे पढ़ुआ काका भीतरसँ छैथ आकि ऊपरे-ऊपर छैथ। मुदा मन बदललै। पाँच गोरेक बीच जखन रही तखन अपन बात दोसरकेँ कम-सँ-कम कही आ दोसराक बात बेसी सुनी।

चाह आएल। सभ पिबए लगला। चाहक गिलास रखि पढ़ुआ काका शंकरदेव दिस देखैत बजला-

“भाय, आब की पहिलुका किछु रहल। पहिने केहेन बढ़ियाँ सभ मिलि भोज-काजमे संगे करबो करै छल आ संग मिलि सभ खेबो करै छल। आब तँ दरिभंगाक वेपारी आबि कऽ सराध बिआहक ठिक्के लऽ लैत अछि।”

पढ़ुआ कक्काक बात सुनि शंकरदेव बजला-

“हम अपने बात कहै छी। देनिहार बुझै छैथ जे हजार रुपैआक बरतन देलिऐन, मुदा हम की ओकरा घरमे चूरि-चूरि खाएब। केतौसँ अनै छी दोकानमे जा कऽ अधोरमे बेचै छी। कहैले तँ एते भेटल मुदा हाथ केते अबैए? तहन तँ आब बुझए लगलिऐ जे

मनुक्खक जिनगी मनुक्खताक योनि छी। सक्कत संकल्प-ले कठीन आ दृढ़ताक जरूरत होइ छइ। मुदा भऽ गेल छी पेटगनाह। बीत भरिक पेटक खातिर सभ चौपट भऽ गेल अछि। अपन हारल बोहुक मारल के केकरा कहै छइ। तहन हम यएह कहब जे पाँच गोरे विचारि कऽ डेग उठाउ।”

सभ कियो विचार-विमर्श कऽ आगूक रस्ता धेलैन-

1. घरवारीकेँ माने कर्ताकेँ जेना मन मानैन ओइ अनुकूल कर्म हुअए। झरखंडी बाछाकेँ दागि साँढ़ बनबैसँ परहेज कएल जाए।

2. आन गामक पंचसँ माने भोज खेनिहारसँ परहेज कऽ गामक सभ जातिक पुरुख-स्त्रीगणकेँ खुऔल जाए। आन गामक कुटुम, दोस्त, दियाद तँ रहबे करता।

अन्तमे देवनन्दन बजला-

“जहिना पिताजीक शरीर नष्ट भेलैन मुदा आत्मा तँ छैन्हे तहिना साले-साल हुनका निमित्ते यथासाध्य कल्याणकारी काज करैत रहब।”



शब्द संख्या: 7903







Notes